पजाब गवर्नमेएट द्वारा पुरस्कृत । पजाब यूनिवर्सिटी और राजपूताना
बोर्ड अजमेर की हि दीरत्न इएटर आदि परीक्षाओं में स्वीकृत

मोतीमाला क छठा पु प

दाहर

अथवा

सिन्ध पतन

(दुखा त नाटक)

लखक

तक्षशिला (काव्य) विक्रमादि य (नाटक)
अम्बा (नाटक) राका (का य)
कृष्णचद्रिका सूरदास क दृष्टिकूट
आद पुस्तकों क रचयिता एव
टीकाकार

श्री उदयशकर भट्ट

मोतीलाल बनारसीदास
सस्कृत हि दी पुस्तक विक्रता
सैदमिट्ठा लाहौर

१६३६ मूल्य १)

प्रकाशक—
सु दरलाल जैन
पंजाब सस्कृत पुस्तकालय
सैदमिट्ठा लाहौर ।

प्रथम सस्करण १
द्वितीय सस्करण २

मुद्रक—
शा तिलाल जैन
मुम्बई सस्कृत प्रेस
सैदमिट्ठा बाज़ार लाहौर ।

अपने पाठक से—

इतिहास पर्वतों के अंक से निकलनेवाली सरिता के सहचारी प थरों के समान है जो एक ही स्थान से बहते हुए भिन्न भिन्न आकार क होकर अपनी कथाए छिपाए मौनभाव से कर्म विलास के रहस्य को पढ़ रहे हैं। एक ही विश्व प्रवाह में एक ही प्रकृति के प्रा तर में ज म से लेकर एक ही मरणा त कथा में यह कर्म वैचि य अपने चातुर्य का परिचय दे रहा है। विधाता का विधान प्रकृति का नाट्य माया की भव्य विभूति सब में एक ही विचार काम कर रहा है। इस वैचि य में व्यष्टिवाद के समान समष्टि वाद की सत्ता है। एक यक्ति का उ थान और पतन जिस प्रकार समाज पर अपना प्रभाव छोड़ जाता है उसी प्रकार समाज का विकास और उसका नाश भी इतिहास का एक पैराग्राफ है य दि एक दूसरे से स बद्ध है तो दूसरा तीसरे से और तीसरा चौथे से। इसी प्रकार काल की तीव्रगामिनी सरिता म यक्ति व का समाज का देश का और ससार का प्रतिबिम्ब दिखाइ पड़ रहा है। वैचि य ही ससार का प्रकरण है। जो दो जातियाँ एक ही दिशा से चलीं एक ही प्रकार के वातावरण में पला वे भी अ त में भिन्न परिणाम वाली दिखाइ देती हैं। भारत क महिमा वित गुर्जर और राष्ट्रकूट उसी गति से चले जिस गति से योरोप के फ्रेंच और जर्मन। कि तु दोनों में आकाश पाताल का अन्तर पड़ गया। उन गुर्जर और राष्ट्रकूटों का आज पता तक नहीं मिलता पर तु इसके विरुद्ध फ्रेंच और

जमन अभी तक जीवित जागृत जातिया हैं । सातवीं आठवी सदी में अरब लोगों क आक्रमण स जिस प्रकार सि ध का अध पतन हुआ ठीक उसी प्रकार ईसाइयों के गढ़ कुस्तु तुनिया पर तुर्कों का आक्रमण हुआ। सि ध आज तक भी अपना रक्षा करने में समर्थ न हुआ किन्तु योरोप ने तुर्कों से बदला ले लिया । इस घटना में कितना साम्य है और कितना वैषम्य ?

पर तु इतना तो मानना ही पड़गा कि दश काल और अवस्था के भेद से योरोप का व्यक्तित्व सि ध के यक्ति व से भिन्न था । यदि एक जाति देश प्रिय थी तो दूसरी आलस्य प्रिय रूढि प्रिय । यदि एक का समाज सगठित था तो दूसरी का असगठित उ छृखल आड बर पूर्ण । भारत के हि दुत्व नाश का कारण इतिहासज्ञ चाहे जो कहें मुझे तो इनका विवेचनाशून्य अध्यात्मवाद ही मालूम होता है । इसी स्वार्थपूर्ण परलोकवाद ने हि दू और बौद्धों के जातीय अगों में यक्ष्मा का रूप धारण कर उ हें किसी काम का न छोड़ा । हमारी जातीयता में धर्मवाद की निकम्मी थोथी रूढियों ने हमें विवेक से गिरा दिया मनुष्यत्व से खींचकर दासता भ्रातृविद्रोह विवेकशून्यता के गढ़े में ले जाकर पीस दिया मार डाला !!

आज जिस नाटक को लेकर मैं हि दी ससार क सम्मुख उपस्थित हो रहा हूँ उस में भी इसी प्रकार का इतिवृत्त है यही गाथा है । इसमें यदि एक ओर वीरता है तो उसी के अक में छिपा हुआ पशु व अपना

अकाण्डताण्डव दिखा रहा है । यदि एक जगह देश प्रेम का उत्कट आदर्श है तो उसी के दाएँ बाए नीचे ऊपर छल कपट और नीचवासना रूप साँपनी अपनी विषाक्त जीभ लपलपाए देश प्रेम को चाट डालना चाहती है । अपनी अपनी ढफली और अपना अपना राग है । उस समय भारत की क्या अवस्था थी । लोगों म कितनी आपाधापी थी कितनी मूर्खता थी कितना स्वार्थ था कितना द्वेष था । प्रजा का राजा पर अविश्वास था राजा लोग प्रजा को पीस डालना चाहते थे। आलस्य अविवक अकिंचनता किस प्रकार अपने विनाशक मद से साधारण जन समाज को साधुओं को अस्तित्व हीनता का पाठ पढ़ा रही थ !

हमने सदा ही धर्म से प्रेम करना सीखा है। धर्म की रक्षा के लिये हि दुओं ने जितना त्याग किया है उतना और वैसा याग शायद् आज तक ससार की किसी जाति ने न किया होगा। पर तु हमार मस्तिष्क में धर्म के द्वारा देश प्रेम की भावना शायद् कभी उठी ही नहीं ऐसा मेरा विश्वास है। हमें अध्यात्मवादी धर्म के अतिरिक्त लोकधर्म की जातीयता की किसी ग्रन्थ में सर्वोपरि शिक्षा दी गई है ऐसा विश्वास करने को सहज ज्ञान गवाही नहीं देता । आ मा और परमात्मा के सिंहासन से हम कभी नीचे नहीं उतरे । हमने सदा ही प्रत्यक्ष का अपलाप किया है सदा ही वास्तविकता से दूर रहने की भरसक चेष्टा की है। जिन दो चार महा पुरुषा ने अपने अमूल्य आ म बलिदान के द्वारा हममें देश प्रेम की भावना पैदा की हमने (साधारण जन समूह ने) उसका सदा तिरस्कार किया। आज हमारे प्राचीन साहित्य में ऐसे कितने ग्र थ हैं जिनसे समाज ने

स्वतन्त्रता के चरमोत्कर्ष को समझा। हमारा साहित्य या तो आनन्द और पल्लवित कला का साहित्य है या फिर कोरा रूढ़िवादी।

इस नाटक में भी पाठक को उसी रूढ़िवाद उसी कल्पनावाद उसी भाववाद की झलक दिखाई देगी। बौद्ध और हिन्दुओं का गौतमीय वाक्चार इसमें प्रत्यक्ष रूप स दिखाई देगा।

राजनीति की दृष्टि से सिन्धनाश म अरबों का रत्ती भर भी दोष नहीं है। और न कोई यक्ति इस मामले म किसी आक्रमणकारी को दोषी ठहरा ही सकता ह कारण कि स पत्तिवाद की सदा से प्रधानता रही है। इस दृष्टि से यदि एक देश दूसरे देश पर आक्रमण करता है तो उस में आश्चर्य किस बात का ? आज यदि इस विज्ञान के युग में सम्पत्तिवाद की प्रधानता है तो उस समय तो सम्पत्तिवाद अपने यौवन काल में था। उस समय सम्पत्तिवाद में धर्म का अश भी मिला हुआ था। जहाँ आक्रान्ता मुसलमानों में स पत्ति की इच्छा थी वहाँ उनमें अन्धविश्वास भी अधिक था। मुसलमाना के विजयी और जीवित रहने का कारण उनकी जातीयता है धर्म बढ़ाने की उत्कट भावना थी। इसी ने मुसलमानों को आज भी जीवित रखा है अन्यथा आक्रमण के क्रीडाक्षेत्र भारत में अब से पहले सभी जातियाँ हिन्दू बन गई। जिस जाति की रगों में अपने देश और अपने समाज के प्रति अटूट श्रद्धा भरी हुई हो वह जाति कभी दूसरी जातियों से नहीं मिल सकती। वह जाति कभी विजित जातियों के दृष्टिकोण को अपना नहीं बना सकती। उसके जीवन में तत्कालीन हिन्दुत्व ने च्यवनप्राश का काम दिया। इन्हीं सब बातों का दिग्दर्शन कराने के लिये

यहा पर सिन्ध की इतिहास सामग्री देना भी अनुपयुक्त न होगा। बात यह है कि सिन्ध का इतिहास कुछ खास विशषज्ञों की पुस्तकों के अतिरिक्त आज बहुत कम लोगों को ज्ञात है। आज कल विद्यार्थियों को पढ़ाई जानेवाली पुस्तकों में तो सिन्ध का इतिहास बहुत कम तथा नाममात्र को है।

संक्षिप्त इतिहास—इसा की छठी शताब्दी में सिन्ध में देवाजी के वशजों में साहसीराय नाम के अन्तिम राजा हुए। इनकी राजधानी सिन्धु नद के पूर्वीय किनारे पर थी उसका नाम था अलोर *। इसे आज कल रोडी कहते हैं। साहसीराय बौद्ध किन्तु ब्राह्मण राजा थ। इनके प्रधान मन्त्री का नाम था चच। यह बड़ा बुद्धिमान् और नीतिकुशल मन्त्री था। इसके मन्त्रित्व में साहसीराय ने बगदाद के खलीफाओं को कई बार पराजित किया। साहसीराय की मृत्यु के बाद चच ने राजगद्दी पर अपना अधिकार कर लिया। जिन लोगों ने इस का विरोध किया उन्हें इसने खूब दबाया। न मालूम किस कारण से इसने वहाँ की पुरानी जातियों लोहान जाट और गूजरा को पदच्युत करके उन्हें नीचे गिरा दिया। सेना में उनका कोइ अधिकार न रहने दिया। सभा में उनके बैठने का कोई अधिकार न रह गया। घर के बाहर उन्हें नंगे सिर नंगे पाँवों चलने

---

* कनिङ्घम साहब ने अलोर के सम्बन्ध में खोज करते हुए लिखा है कि अलोर इसका पुराना नाम नहीं था। उन्होंने रोर शब्द से अलोर की कल्पना की है वस्तुत अलोर नाम ह पुराना। अलक्षेन्द्र के आक्रमण के समय भी स्ट्रैबो तथा एरायन नामक भूगोल पण्डितों ने इस का नाम अलोर ही बताया है।

की आज्ञा दी गई। लकड़ी ढोना भर उनका काम था। इस प्रकार क्षत्रियों की सत्ता से गिरा कर उन्हें पूरी तरह समाज च्युत तथा पन्-युत कर दिया गया। कदाचित् इसका कारण यही होगा कि इन लोगों ने स्वर्गीय साहसीराय की गद्दी पर चच को बैठने देने में विघ्न खड़ा किया हो। इसके बाद उसने साहसीराय की विधवा रानी से शादी भी कर ली। इसी वीर चच ने लगभग चालीस साल तक रा य किया। इसके समय में भी अरबियों के आक्रमण हुए किन्तु उनकी एक न चली। चच ने बड़ी वीरता से शत्रु के दाँत खट्टे कर दिये।

६३ में चच की मृत्यु हो गइ। चच के बाद उसका भाई चन्द्र गद्दी पर बठा। इसने लगभग सात साल तक रान्य किया। यह बौद्ध विचारों का था। चीनी यात्री ह्वनसाग ने इसका वर्णन किया है। इसके बाद ६४४ में दाहर ने राजगद्दी सभाली। दाहर बड़ा प्रतापी वीर और यशस्वी राजा था। चचनामे में जो अरबियों के आक्रमण और उनकी बहादुरी में लिखा गया है दाहर को सब जगह काफिर लिखा गया है। किन्तु इसकी वीरता की प्रशसा भी स्थान स्थान पर की गई है। दाहर के ही रान्यकाल म १२ में मुहम्मद बिनकासिम का सिन्ध पर भयकर हमला हुआ। जिस म सिन्ध वि वस हो गया।

कासिम न दाहर की दोनों लड़कियों सूर्यदेवी और परमालदेवी को बगदाद के खलीफ़ा के पास भेज दिया। वहा उन दोनों की मृत्यु हो गई। इधर सम्पूर्ण सि ध पर मुसलमानों का प्रभाव जम गया। दाहर के लड़के जयशाह न सि ध पर पूर्ववत् अधिकार करने के लिये बहुत कुछ

हाथ पर पीट कि न्तु इसे कहीं से सहायता न मिली। बौद्धों ने समय पर धोखा दिया। यही इस कथा का अन्त है।

नाटक की कला

कला इतना सूक्ष्मतत्व है कि मोटे तौर पर उसकी कोई परिभाषा हो ही नहीं सकती। यह अनुभूति का विषय है प्रत्यक्ष या अनुमान का नहीं। किसी विशेष प्रकार के कौशल की निरंतर साधना करते रहने पर जब उसके अंग उपांगों की विशषता या सौन्दर्य की ओर हृदय आकृष्ट होने लगता है तब उस वस्तु के सर्वांग व्यापी सौन्दर्य को कला के नाम से पुकारा जाता है। उस समय हृदय की उथल पुथल में मानसिक विचार वीथी में वह कौशल एक दृश्यमान सी निश्चित सीमा बना बैठ। है किन्तु होती वह इतनी सूक्ष्म है कि उसका कोई लक्षण नहीं किया जा सकता। अव्याप्ति एवं अति व्याप्ति दोष फिर भी उसे घेरे ही रहते हैं। नाट्यकला का भी यही हाल है। हृदय की वर्णभूत चेतनाओं का मानवीय राग द्वेष के द्वन्द्वों का आशा और निराशा का भावुकता और क्रूरता का सुख और दुःख का प्रतिचित्रण और ऐसे विचार की अवतारणा जिस कला के द्वारा हो कदाचित् उसे नाट्यकला के नाम से पुकारा जा सकता है। वैसे तो कला असीम है अननुमेय है और अतर्क्य है। इसीलिये उससे सम्बद्ध नाट्यकला भी असीम है अननुमय है और अतर्क्य है। जैसे सुख की प्राप्ति एवं सुखान्त अभिलाषा नाट्यकला की एक सीमा है वैसे ही अनन्त चिन्ता वियोग वेदना और विषाद की वज्रकीलित

रेखा भी उसकी एक परिभाषा है। अर्वाचीन युग के कतिपय नाट्यकारों ने अपूर्णता कथा के एक अग को भी नाट्यकला में अभीष्ट स्थान दिया है।

जब विश्व में घिरी हुई बादलों की घटाए झझावेग से झमक कर धरा की अभिलाषा को पूर्ण किये बिना ही दूसरी दिशा को चली जाती हैं जब अकाल म ही कलियो की मृत्यु हो जा ी है जब आशा के मन्दिर म विहार करने वाले यात्री को अपने दिल पर पत्थर रख कर अभिला षाओ का खून कर के उन्हें अधूरा छोड़ कर अनन्त की ओर लौट पड़ना होता ह तब अपूर्णता नाट्यकला का अग क्यो नही बन सकती ? अपूर्णता भी कला है। वहा टीसों और आहो के आकाश म हसरतो और अभिलाषाओं के मेघ झूलते हैं अतृप्ति की बिजली कड़कती है अ र अपूर्णता का अभिनय होता ह । कदाचित् इसी प्रकार की अपूर्णता का लकर योरोप के कुछ नाट्यकारो की कला प्रादुर्भूत हुई है।

फलत कला के इन अगों पर म अधिक न कह कर इतना ह कहूगा कि प्रत्येक चरित्रचित्रण म स्वाभाविकता का त्याग न करते हुए नाटकीय कलाओ का आविर्भाव होता है। वस्तु पात्र घटना कथोपकथनादि में नाटकीय कला सन्निहित रहती है। स्वगत और आकाश भाषित नाटक के आवश्यक अग नहीं हैं। सूत्रधार और नान्दी विष्कम्भक और पूर्वरग भी चौदहवीं सदी की तरह एक ही दृश्य म समाप्त हो गये हैं।

वस्तुत प्रकरण की अपेक्षा नाटक कठिन है । नाटक में ऐतिहासिक तथ्य का सम्मिश्रण रहता है । इतिहास वस्तु नाटक की जान है यद्यपि

कई नाटककारों ने ऐतिहासिक अन्तिम तथ्य की रक्षा करते हुए उसके प्रकारों की अवहेलना भी कर डाली है । और ऐसा होना स्वाभाविक भी है । कल्पना के क्षेत्र में इतिहास काटे की तरह चुभता है । जहाँ कहीं उसे निका न कर फैंक दना पड़ता है वहा केवल कला की रक्षा के लिये ।

मैंने इस नाटक म ऐतिहासिक त य की पूर्णत रक्षा की है ऐसा दावा तो में नहीं कर सकता । उसका कारण एकमात्र यही है कि किसी भी इतिहास म फल के साधनों का पूर्वरूपों का विस्तृत विवेचन नहीं होता । नाटककार को वस्तु का आधार लेकर क पना की कूँची से नाटक रूप चित्र में उत्थान और पतन के रग भरने पड़ते हैं । ऐसा ही मैंने भी किया है ।

मुझ विक्रमादित्य नाटक के बाद वियोगा त नाटक की वस्तु के लिये सि ध का इतिहास बहुत ही आकषक प्रतीत हुआ । जिस समय में ने सूर्यदेवी की प्रतिहिंसा अग्नि में कासिम को जलता देखा उस समय मुझे भारतीय स्त्रियों में चमकती हुई यही सा ध्यलालिमा दिखाई दी । यदि आज भारतवर्ष की नारिया सूर्यदेवी की कथा का जान पातीं तो आये दिन के अपलाप से अपनी रक्षा कर सकतीं । उन में हि दू जाति हि दुस्तान के लिये वास्तविक अभिमान होता ।

यह वियोगा त नाटक है । हि दी साहित्य में वियोगा त नाटक लिखने का कदाचित् मेरा ही यह प्रथम प्रयास है । मुझे मालूम ह कि सस्कृत साहित्य में सयोगा त नाटक लिखने की प्रथा रही है । यहा तक

कि उत्तररामचरित की कथा वस्तु को तोड़ मरोड़ कर भवभूति ने उसे सयोगान्त बना डाला

इसका कारण कदाचित् भारतीय दर्शनों का पुनर्जन्म सिद्धान्त और सुखप्राप्ति ही है। तदनुसार यहाँ की दर्शकमण्डली भी अब तक उसी आस्था के अनुकूल वियोगान्त नाटक की व्यथा को सहने में असमर्थ सी रही है। इधर पाश्चात्य साहित्य में दोनों ही प्रकार के नाटक लिखे गये। योराप में सयोगान्त नाटक दर्शकों को इतने आकृष्ट न कर सके जितने वियोगान्त नाटक। इसके अलावा वियोगान्त नाटकों की रचना भी कुछ सयोगान्त नाटकों से अच्छी हुई। शेक्सपीयर के वियोगान्त नाटक ही सब से सुन्दर और अच्छे माने जाते हैं। इस कोटि के नाटकों का प्रभाव दर्शकों पर देर तक रहता है। पात्रों की विवशता उन्हें अपनी ओर खींचे रहती है। नाट्यकला का जा वास्तविक तत्व है वह वियोगान्त नाटकों में ही प्रतिफलित होता है। सयोग की कल्पना तथा उसका सुख ससीम है उसमें अनुभूति को बहुत हाथ पैर नहीं मारने पड़ते परन्तु वियोग की अनुभूति मनुष्य को तन्मय बना देती है। किसी ने ठीक ही कहा है—

सगमविरहविकल्पे वरमिहविरहोनसगमस्तस्य (नाटकस्य)

सगे तस्तु तथैक त्रिभुवनमपि तन्मय विरहे। (परिवर्तित)

शायद् यही वजह है कि पश्चिमीय साहित्य में वियोगान्त नाटकों का बहुत ऊँचा स्थान है।

वियोगा त नाटकों की रचना न होने पर भी सस्कृत और हि दी साहित्य में विप्रलम्भ शृगार का वर्णन इस बात का सब से बड़ा प्रमाण है कि वियोगा तवस्तु का प्रभाव चिरस्थायी एव शाश्वत होता है ।

मुझे इस नाटक की ऐतिहासिक सामग्री तैयार करने में सनातनधर्म कालेज लाहौर के इतिहासाध्यापक प्रोफेसर गुलशन राय बी ए. एल एल बी महोदय से अधिक सहायता मिली है एतदर्थ मैं उनका हृदय से आभारी हू ।

शिवनिवास
लाहौर।
२५ दिसम्बर १६३३

उदयशङ्कर भट्ट

पात्र सूची

दाहर	सिंध का नृपति
जयशाह	दाहर का पुत्र
बंसराज	शिवस्थान का सामन्त
खलीफ़ा	बग़दाद का नृपति
हैजाज़	खलीफ़ा का वज़ीर
ज्ञानबुद्ध	देवल का सूबेदार
मानू	देवल का सेनापति (पूर्व डाकू)
सिलवन	बौद्धभिक्षु सागरदत्त (पूर्व डाकू)
रासिल	मोक्षवासव का भाई बेन का सेनापति
मोक्षवासव	बेन का सामन्त
अब्दुल्ला	खलीफा का प्रथम सेनापति
मुहम्मदबिनकासिम	खलीफ़ा का द्वितीय सेनापति
मुहम्मद हारून	मकरान का सूबेदार
क्षपाकर	दाहर का मन्त्री
साधारण पात्र	देवकी मधुआ कञ्चुकी संशयचन्द्र

स्त्री पात्र

लाडी	दाहर की रानी
सूर्यदेवी	दाहर की कन्या
परमाल	दूसरी कन्या

पहला अक

पहला दृश्य

स्थान—ध्वल का राजपथ।

(दो डाकुओं का प्रवेश)

भानू—(खुशी में रुपया की पोटली उछालता हुआ) हाहा हाहा तलवार की नोंक पर शत्रुओं को उछालकर नाचते हुए मुझ कितना सुख मिलता है आग की चिनगारियों म उड़कर चट चट करते मास के टुकड़ों का शृङ्गार करन में मुझ कितना आन द मिलता है भोलामुख हँसत हुए और ठण्डा साँस लिये सोत हुए बच्चों को बर्छी के ऊपर उछाल कर सनसनाती हुई तलवार स खट खट करके दो टुकड़ करन म तो मानों मेरी चिर इच्छाए बल्लियों उछल पड़ती हैं। वाह कैसा आनन्द आया।

सिलबन—बहुत उछला पड़ता है रे जानता ह मैंन भा तो कन कन करके कटने क दर्द स डकराती आर आहों का

धूम्रमाला में विहार करता हुई शत्रु स्त्रियों के आसुओं का एक एक बूंद से माना असख्य सपत्ति पाई है और पिछली लड़ाई म उन अरबिया का खट खट करक काटत हुए मानो मेरे हाथों में हनुमान का बल आगया था।

मानू—मूर्ख कहीं का शत्रु क शरार की एक एक किच जब मरी किर्चे स नहाइ तब उस हाहाकार म मरा हृदय आनन्द का अट्टहास कर रहा था। (तलवार घुमाकर) अरी तू अभी प्यासी है? फँसन द काई और शिकार तेरी प्यास बुझा दूँगा। (चूमता है)

सिलबन—पर भाइ साफ बात तो यह है कि मेरा जी अब डाकू क काम से उचट सा गया है। मैं कहने का तो सब कुछ करता ही हूँ पर जसे कोई मुझ भीतर हा भीतर टोंच रहा हा। क्या किया जाय पर अब मुझस यह न हागा।

मानू—एकखा जसे कोई भातर ही भीतर टाच रहा हो क्या खूब मानो मैं तुम्हारा गला घोटकर माल मता छीन रहा होऊ क्या न?

सिलबन—(डाटकर) तुझ हसी सूझी है। तू अभी जवान है जब खलड़ी ढीली हागा ताक़त साती हुइ नज़र आवेगी साहस सहमता दीखगा तब तुझ मरी ये बातें सूझैंगी? चाहे जो कुछ हा मुझसे अब यह न होगा।

मानू—यह और भी रही। क्या डाकू कभी कमज़ोर भी होते हैं ! अरे सिलबन डाकुओं के जीवन में बहादुरी कूट कूट कर भरी गई है। हिम्मत के सहारे वे आसमान उधेड़ सकते हैं। लोहे के कटघरों को दाँतों से चबा सकते हैं। और तो मैं कुछ जानता नहीं दस बीस आदमियों से तो मेरी अकेली तलवार ही खिलवाड़ कर सकती है। यह न समझना कि हम कोई रुपयों के पीछे लोगों को लूटते हैं ? नहीं आग में कूदकर उसके अँगारों से खेलना जो पसन्द करता है वही असली डाकू है विपत्ति से लोहा ले सकता है मौत से अठखेलियाँ कर सकता है वही असली डाकू है।

(एक आदमी का आना)

आगन्तुक—अरे मानू ओ मानू चल सरदार बुलाते हैं।

मानू—चुप गधा कहीं का मानू का भी कोई सरदार है। वह तो स्वयं सरदार है। अहह सिलबन डाकू का भी कोई सरदार होता है ? हा हा हा !

सिलबन—(सुनी अनसुनी करके) मैं अब तक भूला ही रहा। हाय हज़ारों हत्याएं कीं बकरी और भेड़ की तरह मनुष्यों का खून बहाया ! हाय मेरे ऊपर कितना पाप लदा हुआ है !

मानू—उन धूर्त म्लेच्छ व्यापारियों को तो देखो। हमारे

ऊपर हो जबरदस्ती हमारी बहू बेटियों का हो बहकाने का उद्योग जल में रहकर मगर से बैर; हमसे ही आदर पाकर हमारे देश में ही यह अनाचार? (क्रोध से दांत पीसकर) हमने भी उसका भरपूर बदला लिया। धूर्त दुष्टों को अपनी कृतघ्नता का पूरा पूरा प्रायश्चित्त करना पड़ा। शत्रुओं के खून से उनके जहाज़ को रंग दिया। वह तो कहो कि सरदार ने उनमें से कुछ को नाकें रगड़ कर क्षमा मांगने पर केवल कैद भर कर लिया; नहीं तो एक एक आदमी से एक एक दुर्व्यवहार का बदला लिया जाता। किन्तु नहीं मैं इन यवनों से पूरा बदला लूँगा।

आगन्तुक—अरे भानू चल सरदार बुला रहे हैं।

भानू—अच्छा चल (जाता हुआ) मुझे ये सरदारी फरदारी ठीक नहीं जचती। डाकू का कोई स्वामी नहीं हो सकता। यह उग्रता का अवतार वीरता का शृङ्गार और क्रूरता का उद्गार है। देखो न आज कैसा मज़ा आया। बहुत दिनों की प्यास बुझ गई (खड़ा होकर उस आदमी से) जा मैं नहीं जाता।

आगन्तुक—अरे इतना अभिमान सरदार बुलावें और तू न चले। अच्छा ठहर—(भानू को पकड़ता है दोनों ओर से तलवारें खिंच जाती हैं लड़ाई होने लगती है। सरदार का प्रवेश)

सरदार—मानू यह क्या ? (दोनों अलग हो जाते हैं)

आगन्तुक—आपके बुलाने पर भी यह नहीं आ रहा था सरदार !

सरदार—समझ गया । मैं जानता हूँ यह बड़ा वीर है और ढीठ भी ।

मानू—डाकुओं का कोई सरदार नहीं होता । मानू आज से किसी को अपना सरदार नहीं मान सकता ।

सरदार—(प्रसन्न होकर) ठीक है ऐसे ही लोग डाकूवृत्ति की रक्षा कर सकते हैं किंतु मानू बिना नेता के कभी सफलता नहीं मिल सकती । दस्युओं की भी एक वृत्ति है उनका भी एक समाज है और उसके भी कुछ नियम हैं उन नियमों का पालन से डाकूपन की रक्षा हो सकती है । मैं जानता हूँ तुम वीर हो किन्तु जाति की रक्षा के लिये एक न एक मुखिया की आवश्यकता तो है ?

मानू—साफ बात तो यह है कि जबसे तुमने राजा दाहर की अधीनता स्वीकार की है तबसे मेरे शरीर में असंख्य बिच्छुओं के काटने की सी पीड़ा हो रही है । हम लोग डाकू हैं । हमारे लिये राजसमाज राजनियम नहीं है ।

सरदार—तुम नहीं जानते कि हमने अधीनता क्यों स्वीकार की ? हमारा छोटा सा टापू है । महाराज दाहर के पिता महाराज चच ने हमारी लूटपाट से ऊब कर एकबार इस टापू पर हमला

किया। मेरे पिता के हार जाने पर भी प्रसन्न हो महाराज ने यह टापू हमे देकर प्रतिज्ञा करा ली कि हम लोग सिन्ध प्रान्त पर कभी हमला न करेंगे। आज उसी के अनुसार हम लोग सिन्ध की किसी प्रजा पर अत्याचार नहीं करते। हां अरब सागर से जो जहाज़ जाते आते हैं उन्हीं को लूटना हमारा काम है। उस सन्धि के अनुसार महाराज दाहर हमारे किसी बाहरी शत्रु का लूट लेने पर भी हमारी रक्षा करने को बाध्य हैं। यही कारण है कि कई बार अरबियों के जंगी बेड़े जो हमारे ऊपर आक्रमण करने आये महाराज चच की सहायता से समुद्र में डुबा दिये गये। आज जिन शत्रुओं को उनकी दुष्टता का दण्ड देते हुए हमने उन्हें लूटा है उनसे प्राप्त सामग्री लेकर महाराज की सेवा में तुम्हें ही जाना होगा। मानू तुम इस काम के लिये तैयार हो न?

मानू—समझा सब समझ गया। एक डाकू को बड़े डाकू के पास जाना होगा।

सरदार—चुप महाराज को डाकू कहते हो?

मानू—सरदार राजगद्दी पर बैठनेवाले सभी लोग डाकू हैं उनमें और हममें फ़र्क़ सिर्फ़ इतना ही है कि डाका डाल कर उन्होंने अपना राज बना लिया है और हमने नहीं। जब एक राजा किसी देश पर हमला करता

है तो उसका काम है पहले राजा के लोगों को मार कर अपना राज जमाना उन्हें कुचल कर अपने आदमियों को इकट्ठा करना और खज़ाना सेना हथियार लेना क्या यह डाका नहीं है ?

सरदार—होगा हमें इन बातों से कोई मतलब नहीं। किन्तु भानू तुम क्या जानो महाराज बाहर कितने प्रजा रक्षक ज्ञानी और वीर हैं ! उनके राज्य में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते हैं। जाओ (थैली देते हुए) यह थैला भेंट करते हुए हमारी तरफ से महाराज को प्रणाम करना। आज के अरबियों की लूट का सब हाल सुना देना।

(दौड़ते हुए एक आदमी का आना) सरदार ग़ज़ब हो ! शत्रु अपना जहाज़ लेकर रात को भाग गये ! उन्होंने सिपाहियों को बहका कर अपना रास्ता साफ़ कर लिया !

सरदार—हैं यह बुरा हुआ ? भानू यह बात भी महाराज को बता देना यह तो बुरा हुआ ! (सब इसी सोच में खड़े रहते हैं)

पटपरिवर्तन

———

दूसरा दृश्य

(महाराज दाहर प्रासादोद्यान म म श्री के साथ बठे हैं ।)

दाहर—कहा स यरूप स स्पष्ट कहा असयरूप स अस्थिर कहीं कामलाङ्गिनी वारागना क समान छलमयी समय क उलटफर म हिंसा की उग्रता में दयालुता क आँचल में स्वार्थ की गाद म उदारता का ओट में धन रत्न क प्रलोभन में राजनीति सदा अपनी साधना में जुटी रहती है। यह दूतों का आखों स न्याय के कान से निश्चय क मुख से स देहभर सकल्प से सब का निर्णय करती है। चिह्नों से इसकी शक्ति घटती ह । उग्रता इसका रूप है साहस भुजाए और षड्य त्र गति । अहा राज्य शासन भी कितना भयकर है। विधाता क विधान का तरह इसका रहस्य स भरा व्यापार है। मुझ ही देखो सब की इच्छा पूरी करन पर प्रजा को प्राणों से अधिक पालने पर भा कौन कह सकता है कि प्रजा मुझ से पूरी तरह स तुष्ट हा हागी। न्याय की कठोरता से झुलसकर कुछ लाग अपने आप हा राज्य क विरुद्ध हाजाते हैं क्या म त्रिन् ठाक है न ?

चपाकर—महाराज सत्य है। वस्तुतः सब लोगों को प्रसन्न किया ही नहीं जा सकता और उस समय तो और भी जब छोटे छोटे राजा लोगों का राज्य हो। महाराज सुना है बन का सामन्त मोक्षवासव भीतर ही भीतर महाराज से द्वेष रखता है।

दाहर—क्या मोक्षवासव हम से द्वेष क्या रखता है?

चपाकर—नाथ मैं केवल इतना जानता हूँ कि समानविभूति के लोग डाह के वश में होकर अपनी हीनता को आत्मदर्प के दर्पण में देखते हैं। व्याकुल हो उठते हैं। यही कुछ कारण होगा और क्या? आपकी दया कृपा का अनुचित लाभ उठाकर उसने कौरवों का अनुकरण किया है!

दाहर—इसका कारण क्या हो सकता है?

चपाकर—आपका वैभव उसके ऊपर आपकी कृपा और स्नेह।

दाहर—कुछ और भी?

चपाकर—नाथ दूतों से सुना है कि वह बन राज्य को स्वतन्त्र करना चाहता है!

दाहर—हमने पिछले वर्ष अतिवृष्टि के समय उससे कर भी तो नहीं लिया था?

चपाकर—नाथ अपराध क्षमा हो आपकी नम्रता दया से ही यह इतना उद्धत हो गया है। सिंह की दाढ़ों में असावधानी से लग जाने वाला कीड़ा भी उससे नहीं डरता। सूर्य का प्रकाश जो सब को आनन्द देता है उल्लू और कुमुद को नहीं सुहाता। चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से संसार को प्रसन्न करता है किन्तु कमल को अच्छा नहीं लगता। कांटा उपेक्षा की दृष्टि से बाहर फेंक देने पर भी अवसर आते ही पैर में चुभ कर पीड़ा पहुँचाता है यही उसका स्वभाव है।

दाहर—हाँ ठीक है प्रेम से पाला गया व्याघ्र भी तो हाथ चाटता हुआ रुधिर पीने के लिये स्वामी पर आक्रमण कर ही बैठता है। इसका उपाय—

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी—जय हो पृथ्वीनाथ देवल के टापू का एक आदमी प्रार्थना के लिये बाहर खड़ा है।

दाहर—देवल के टापू का आदमी? क्यों चपाकर किस लिये आया होगा?

चपाकर—कोई लूटपाट की बात होगी।

दाहर—(प्रतिहारी से) आने दे। (प्रतिहारी का प्रस्थान और भानू का प्रवेश)

भानू—(राजवैभव देखकर) अहा अब समझा राजा

और डाकू म जावन की ा्शा का अ तर ह उद्दश दोना का एक है। (सामन जाकर) जय हो महाराज की !

दाहर—(रग ढग स उस व्यक्ति का देखकर) तू कौन ह यहाँ कस आया। आँखें फाड़ फाड़ कर क्या देख रहा है ?

मानू—महाराज म यह दखता हूँ कि एक डाकू और राजा में क्या अन्तर है।

दाहर—(आश्चय स) क्या अ तर है ?

ज्ञपाकर– (उस आदमी का ढिठाई पर क्रोधित होकर) मूख राजदरबार के नियमा का पालन कर।

मानू—अ याचार क पर्वत पर साने के सिंहासन क ऊपर राजा बैठता ह और खून का कीचड़ से सूखी हुई सिल पर डाकू।

दाहर—अरे निठल्ल क्या तुझ राजा का इतना हा कर्त य मालूम हुआ ?

मानू—और भी हागा पर मैं ता इतना ही ज नपाया हू महाराज।

दाहर—तू बड़ा निडर है बता किस लिय आया है ?

मानू—(थैली सामन रख कर) महाराज सरदार ने यह थैली भेंट करते हुए कहा है कि अरबियों क जहाज़

का कुछ सामान है। (थली सामन रखता है)

दाहर—अरबिया का जहाज़ ?

सुपाकर—अरबियों को लूटा ? सरदार ने बड़ी भूल की।

मानू—महाराज अरबियों का एक जहाज आंधी से बचने के लिये हमारे बन्दरगाह पर आकर ठहरा। उसने हमारी स्त्रियों को पकड़ कर जहाज के द्वारा भगा ले जाना चाहा। इस प्रकार कई स्त्रियाँ और बालकों को पकड़ भी लिया। इस धूर्तता का समाचार जब एक भाग कर आये हुए बालक से सरदार को मालूम हुआ तो अपने योद्धाओं के साथ हमने जहाज़ को घेर लिया। सरदार के द्वारा बालक और स्त्रियों को लौटाने का आग्रह करने पर उन दुष्टों ने हमें युद्ध के लिए ललकारा। इस पर घोर युद्ध हुआ। सरदार ने उन कपटी व्यापारियों को लूट लिया लड़ाई में पचासों आदमी मारे गये। उनकी स्त्रियाँ हमने छीन लीं। उनको बन्दी बना डाला। बस यही समाचार है। परन्तु उनमें से कुछ लोग भाग गये।

सुपाकर— महाराज अनर्थ हुआ चाहता है ?

दाहर—है! अनर्थ क्यों ? दुष्टों को दण्ड देना क्या अनर्थ है ? (मानू से) तुम जाओ हमने सब कुछ जान लिया। (मानू सिर झुकाकर जाता है)

सुपाकर देव स्वर्गीय महाराज साहसी राय और महाराज चच के समय से ये अरबी लोग हमारे देश पर

दांत गड़ाये बैठे हैं । किंतु स्वर्गीय महाराजाओं के सामने उन्हें सदा मुंह की खानी पड़ी । महाराज मुझे डर है कि कहीं इस बहाने वे फिर आक्रमण न कर बैठें ?

दाहर—आर्य लोग युद्ध से कभी नहीं डरते। युद्ध तो उनकी घुटी का रस है । जो कड़आ होते हुए भी अंत में लाभदायक है। एक नहीं हजार बार अरबी लोग आयें। दाहर युद्ध से मुख न मोड़ेगा। (क्रोध से) उन दुष्टों का इतना साहस कि अधीनस्थ टापू की स्त्रियों और बालकों को भगा कर ले जायें ? (सोचकर) अच्छा हुआ सरदार ने कोई भूल नहीं की । यदि इस से अधिक दण्ड दिया जाता तो मैं अधिक प्रसन्न होता ज्ञपाकर !

ज्ञपाकर—दीनबंधु दुष्टों को दण्ड देना ठीक है । यह उचित ही हुआ । किन्तु आजकल घरेलू झगड़ों में सिंध सब से बढ़ा हुआ है । आकाश में रहने वाले मेघ ही यदि सूर्य को ढक लें तो पृथ्वी उसकी गरमी से कैसे तप सकेगी ? महाराज इस समय बौद्ध लोहान जाट और गूजरों की अवस्था बहुत गिरी हुई है कहा नहीं जा सकता यदि युद्ध हुआ—

दाहर—मन्त्रिन् तुम्हारा विचार ठीक है । यदि कीड़ा ही पुष्प को खा डाले तो आंधी का झोंका उसे कैसे संभालेगा ?

क्षपाकर—नीति के अनुसार मोक्षवासव को अधीन करना चाहिये ।

दाहर—नीति के अनुसार साम से और आवश्यकता पड़ने पर दाम से भी । मैं रसिल को अपनाकर उसके भाई पर नज़र रखूँगा। वह योद्धा है, आज्ञाकारी है । आज ही पत्र द्वारा रसिल को इधर बुलाना होगा ।

क्षपाकर—अच्छा हो यदि बेन का सेनापति भी रसिल को बनाया जाय ?

दाहर—ठीक है, इस पर भी विचार किया जायगा । जाओ।

(क्षपाकर जाता है)

दाहर—वृक्ष को नाश करने के लिये अग्नि की अपेक्षा जल का प्रवाह अधिक उग्र होता है। अतः साम नीति भी उपेक्षा करने योग्य नहीं है। (कुछ ठहर कर) हमारे देश की परिस्थिति भी बड़ी विचित्र है। सारे प्रान्त में बौद्धधर्म ने अपना अधिकार जमा रखा है । हिन्दुत्व तो नाममात्र को रह गया है । सारा प्रदेश विहारों, भिक्षुकों और मठाधीशों से भरा है । कर्मचारियो में भी प्रायः सभी बौद्ध हैं। देखो न, देवल का सूबेदार ज्ञानबुद्ध बौद्ध ही है। बुद्धमत परमार्थ और शान्ति का धर्म हो सकता है पर उसमें

राजनीति नहीं है। इसके वातावरण में शान्ति है, विचारों में शान्ति है, धर्म में शान्ति है, शान्ति के मूल स्तम्भों पर इसका निर्माण हुआ है। यहाँ तक कि यह शान्तरूप भगवान् बुद्ध से संजीवन पाकर संसार में राजधर्म का नाशक सिद्ध हो रहा है। प्राचीन काल में जब बाहरी शत्रुओं का भय न था, बौद्धधर्म भारत के लिये कितना ही हितकर क्यो न हो, किन्तु इस समय तो यह केवल आडम्बर मात्र ही रह गया है। इसके अतिरिक्त हमारा यह प्रान्त अरब की नाक पर है। ऐसी दशा में कब क्या हो जाय यह कहा नहीं जा सकता। दुर्भाग्य ने बौद्धों को अपनाकर ही शान्ति लाभ नहीं की, उसने हिन्दुओं के चमकते हुए भाग्याकाश में ऊँचनीच के वर्णभेद का काला मेघ उमढ़ा कर अविवेक का अन्धकार भी भर दिया है। स्वर्गीय पिता, तुम्हारे इस प्रमाद का फल मुझे भोगना पड़ेगा, सिन्ध मे जो वीर जातियाँ थी, उन्हें ऊँच नीच के भावों ने मसल कर विनष्ट कर डाला। हाय, वे लोहान, जाट और गूजर जो हमारे राज्य की शोभा, वीरता की मूर्ति थे, आज ऊँच नीच के विचारों से पददलित हो रहे है। वीरता, शूरता, दृढ़ता, धीरज का अब उन मे नाम ही रह गया है। आज राजनियमानुसार वे लोग रेशमी वस्त्र नहीं पहन सकते, ज़ीन कसे घोड़े पर नहीं बैठ सकते,

पैरों में जूते नहीं पहन सकते, सिर पर पगड़ी नहीं बाँध सकते। पहचान के लिये कुत्तों के बिना बाहर नहीं निकल सकते। राज्य भर में लकड़ी ढोना भर उनका कार्य रह गया है। (दुःख से) विधाता, तुम्हें क्या करना अभीष्ट है? यदि हमारे पाप से अरबियों ने इस देश पर आक्रमण किया तो कैसे मैं अपनी छोटी सेना से उनका सामना कर सकूँगा। हाय! यह बड़ी राजनैतिक भूल हुई। हमने अपने हाथों अपना नाश किया। यदि वे लोहान जाट और गूजर समय पर हमारी सहायता न करें तो इसमें किसका दोष होगा? (इसी ध्यान में ये उद्गार निकलते हैं):—

हा, भूल अज्ञता का फल है, जो अवसर के तरु पर फूली।
वह सदा चुभी काँटा बन कर वे भूलें आजीवन भूलीं॥
उनकी न विषमता नष्ट हुई, उनकी सत्ता न विलीन हुई।
वे दबी हुई भी चमकी हैं, वे फल देकर ही क्षीण हुई॥

पटपरिवर्तन

तीसरा दृश्य

(समय —दोपहर)

स्थान—इराक का राजपथ:—

एक शराबी उन्मत्त होकर गाता है:—

है यह दुनियाँ का सार हृदय का मतवालापन इसमे
इन आँखो का ससार डूबता उतराता है जिसमें
पी विभोर मद बौर नाचती कोयल कूकी बन बन
मधु सुरभि उडी इस पार बिछाती जीवन के स्वर्णिल-मन
हो सागर मदका भरा, स्वर्ण किरणे हो सुन्दर प्याले
मै दिनकर बनकर पीऊँ वारुणी घन छाये मतवाले
वे बरसे मदिरा, पवन मद्य के मकरन्दो से तर हो
संसार मद्य बनजाय, भरूँ, पीऊँ, फिर भरूँ अमर हो

(गाता हुआ चलता है और लड़खडा कर एक आदमी के ऊपर जा गिरता है) फिर उठकर 'है सृष्टि तत्व का सार' कहता हुआ गाता है।)

दूसरा—(घूर कर) मियाँ, आँखें खोलकर चलो, हिये की फूट गई हैं क्या ?

शराबी—(अनसुनी करके) है सृष्टि तत्व...का...सा...र, हैं, तुम कौन ?

दूसरा—दीखता नहीं है ?

शराबी—सब कुछ दीखता है तुम आदमी की सूरत मे गधे हो यह भी · । अहा हा !

दूसरा—(एक थप्पड जमाकर) अब गधा तू है या मै ?

शराबी—(उठकर उसका हाथ पकड लेता है) क् क् या स ... मझता है बे ऊँट ? सम झ . ता नही कौन जा रहा है ? (एक थप्पड़ मारकर) अब . बता । (लड़ते लडते दोनो गिर पड़ते है, सिपाही आकर पकड़ लेता है)

सिपाही—चलो, तुम दोनों हैजाज़ के पास चलो ।

दूसरा—हाँ चलो, इसने मेरे कपड़े फाड़ डाले है ।

शराबी—(मस्त होकर) है सृष्टि तत्त्व का सार ... ?

सिपाही—(शराबी को पकड कर) गाता है या चलता है ? (शराबी हाथ छुड़ाकर फिर गाता है । सिपाही एक थप्पड जमादेता है ।)

सिपाही—चल ।

शराबी—(होश मे आकर) हाँ चल भाई, पर मैने क्या किया, बता तो सही । (सिपाही पकड़ कर हैजाज़ की सभा में ले जाता है, शराबी गाता हुआ जाता है) 'है सृष्टि तत्त्व का'...... ।

पटपरिवर्तन

चौथा दृश्य

(हेजाज़ की सभा, बगदाद के खलीफा वलीद बैठे हैं)

हेजाज—हे धर्मगुरु, जनाब के शासनभार सँभालते ही सारे राज में चैन की वंशी बज रही है।

खलीफा—ठीक है। इसी लिये राज का दौरा करता हुआ इधर आ निकला।

(सिपाही और दो आदमियो का प्रवेश)

सिपाही—महाराज, इसने (शराबी की ओर इशारा करके) शराब पीकर नगर में हुल्लड़ मचा रखा है। इसने इस भले आदमी के कपड़े भी फाड़ डाले हैं।

शराबी—कपड़े फाड़ डाले है? नही महाशय! बिल्कुल झूठ है। भला, मुझ जैसे आदमी से इसके कपड़ों का क्या सम्बन्ध? कपड़े इसने अपने आप फाड़े हैं। मैं निरपराध हूँ।

दूसरा—अरे इतना झूठ?

शराबी—यानी कितना?

खलीफा—यह ज़रूर शराबी दीखता है, इसके मुँह से शराब

की बू आ रही है। हैजाज़, क्या यहाँ शराब पीना मना नहीं किया गया?

हैजाज—धर्माचार्य, इराक मे साल भर में एक उत्सव मदिरापान का भी होता है। इसे 'हफ्तगाह' कहते हैं।

खलीफा—नहीं हैजाज़, मैं इ उत्सव को हर तरह बुरा समझता हूँ। शराब मनुष्यता के विरुद्ध, धर्म के विपरीत, आचार के प्रतिकूल है। मै अपने पूज्य खलीफ़ाओं की तरह इस अपवित्र वस्तु से घृणा करता हूँ।

शराबी—महाराज! हमारे माननीय खलीफ़ाओं ने शराब को बुरा ज़रूर कहा है किन्तु मदिरा अहा, यह क्या कोई छोड़ने की चीज़ है? जीवन में नया उत्साह, नई उत्तेजना, नवीनता ही तो इसका गुण है। जब स्वर्ग मे भी शराब मिलेगी, तब इस दुनियाँ मे उसे पीने से... . ।

खलीफा—चुप रह मूर्ख, (सिपाही से) इसे पकड़ कर लेजा और कैदखाने में डाल दे। इसने बग़दाद के खलीफ़ा के सामने ढिठाई की है।

(सिपाही आज्ञा पाते ही उसे ले जाता है, शराबी फिर भी गाता हुआ जाता है और दूर तक 'है सृष्टि तत्व का सार' की आवाज़ सुनाई देती है। खलीफ़ा घूर कर देखता रहता है, फिर जोश मे आकर)

हैजाज़—आज से इराक़ में इस प्रकार का मेला बिल्कुल बन्द होना चाहिये। मै अपने राज्य में मदिरा को यों न बढ़ने दूँगा। मैं किसी ऐसी वस्तु को, जो मेरे धर्म के विरुद्ध है

घृणा की नज़र से देखता हूँ। मैं इस्लाम के विपरीत किसी चीज़ को संसार में नहीं देखना चाहता। क्या रसूलिल्लाह ने कुरान शरीफ़ के पाँचवें सूरा में शराब के विरुद्ध मुसलमानों को उपदेश नहीं दिया है! खुदा ने साफ़ कहा है कि "ए मुसलमानो, शराब शैतान की बनाई हुई चीज़ है, इसे छोड़ दो।"

हैजाज—आमीन (सब लोग आमीन आमीन कहते हैं।)

(दरबान का प्रवेश)

दरबान—(फर्शी सलाम कर के) धर्मावतार, एक आदमी बाहर खड़ा रो रहा है, कुछ प्रार्थना किया चाहता है।

खलीफा—रो रहा है, क्या मेरे राज्य में रोने वाले भी हैं? बुलाओ।

(दरबान जाता है, वह आदमी आता है।)

आदमी—दुहाई है दुहाई, लूट लिया, मार डाला।

खलीफा—क्या बात है, क्यों रोता है?

आदमी—हे धर्माचार्य, मै लुट गया, मैं बरबाद हो गया, हाय!

हैजाज—बात क्या है? कुछ बता भी तो!

आदमी—श्रीमान्! मैं लंका से कुछ नौमुसलिमो के

साथ इराक़ आ रहा था कि रास्ते में आँधी के कारण देवल की बन्दरगाह के पास हमें ठहरना पड़ा। इसी बीच में दाहर के कुछ लोगो ने हमें लूट लिया। हाय! लंका के राजा ने कुछ भेट भी जनाब के लिये भेजी थी, वह भी दुश्मनो ने हम से छीन ली। महाराज, (रोकर) उन्होंने हमारे आदमियों को भी हमसे छीन लिया।

खलीफा—(दाँत पीसकर) ऐसा, फिर क्या हुआ?

आदमी—उन लोगों ने हमें कैद कर लिया।

हैजाज़—फिर?

आदमी—हम लोग बड़ी कठिनाई से छिप कर भाग आये, हमारी सारी कमाई लुट गई। हायरे! दुहाई है हुज़ूर।

खलीफा—हैजाज़! इतना कुछ हो गया? तोबा! (उस आदमी से) अच्छा तू जा, हम इसका भरपूर बदला लेंगे। ख़ुदा ने क़ुरान शरीफ़ में कहा है कि कान का बदला कान से, नाक का नाक से और दाँतों का बदला दाँतों से लो। मुझे मालूम हुआ है मेरे स्वर्गीय पिता देवल की बन्दरगाह चाहते थे, आज समय है कि उस इच्छा को पूरा करने के लिये अपनी सारी ताकत के साथ उस काफ़िर के देश पर हमला किया जाय।

हैजाज़—हुज़ूर, हमें इस लड़ाई में कई बार हार

हुई है। दाहर से पहले साहसीराय और चच ने हमें कई बार हराया है।

खलीफा—(और भी खीझकर) वलीद देखेगा कि काफ़िर इस बार कैसे जीतता है। क्या तुम्हें मालूम नहीं हज़रत ने ३१९ आदमियों के बूते पर मदीने के एक हज़ार काफ़िरो को नष्ट कर डाला था।

एक सभासद—मान्यवर, मुमकिन है यह काम दाहर का न होकर किसी डाकू का हो। लड़ने से पहले दाहर का रंग ढंग भी देख लेना चाहिये।

खलीफा—डाकू का हो या किसी का। मैं सिन्ध को अब यों न छोड़ूँगा। उसकी ईंट से ईंट बजा दूँगा। जो मुल्क मेरे पूज्य खलीफ़ा लेना चाहते थे, वह मैं ज़रूर लूँगा। दुश्मन को नाकों चने चबा दूँगा। मै मुसलमानों की हार का बदला एक एक आदमी से लूँगा, एक एक शहर से लूँगा और सारे प्रान्त को पीसकर धूल में मिला दूँगा।

हैजाज—ज़रूर, ज़रूर, इस काम के लिये यदि मुझे देश विदेश की धूल फाँक कर भी सेना इकट्ठी करनी पड़े तो भी मै करूँगा। लेकिन अलहजूरी के कहने के मुताबिक दाहर का गुप्त और प्रत्यक्ष रूप से भेद लेना भी ज़रूरी मालूम होता है, खलीफ़ा साहब।

✓ खलीफा—मैं कुछ नहीं जानता हैजाज़, मैं दाहर का सिर और छत्र चाहता हूँ और चाहता हूँ सम्पूर्ण प्रान्त पर अधिकार। (घुटने टेककर) ऐ ख़ुदा, हम लोग इस काम में तेरी सहायता चाहते हैं। (सब लोग घुटने टेक कर प्रार्थना करते हैं)

पटपरिवर्तन

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—अलोर का बन।

(सूर्यदेवी और परमालदेवी का कचुकी के साथ शिकारी वेश में प्रवेश)

सूर्य—इस निर्जन प्रान्त में मृगया की खोज करते हुए जैसे मनुष्य के धीरज की परीक्षा होती है वैसे ही उसकी वीरता जागृत होती है, क्यों रे कंचुकी ?

कंचुकी—राजकुमारी, यह कौन जानता है कि कठफोड़ा जब लकड़ी पर चोंच मारता है तब उसे यह सब पेट के लिये नहीं करना पड़ता ?

सूर्य—अरे, फिर तू ने वही बे सिर पैर की हाँकनी शुरू कर दी ?

पर—हाँ, यदि इस समय सिंह तुझ पर हमला करे तो तू क्या करे ?

कंचुकी—अहा, तुम इतना भी नहीं जानती छोटी राजकुमारी, वृक्षों की उत्पत्ति का फल यही तो है कि मनुष्य उन पर चढ़े। भला, उसकी चोंच घिस न जाती होगी ?

सूर्य—किसकी रे ? (पीछे मुड़कर) कंचुकी आगे आगे चल।

कंचुकी—(पीछे मुड़कर) उसी कठफोड़े की तो। (चलने लगता है)

परमाल—(हँसकर) बहन ने तुझ से कहा कि हमारे आगे चल और तू पीछे मुड़ रहा है।

कंचुकी—तुम अपना मुँह मोड़ लो, मै आगे हो जाऊँगा। आगे और पीछे का प्रश्न इस गोलाकार पृथ्वी पर हो ही नहीं सकता। ओहो, अब समझा, नाक से बोलनेवाले को मुख और नाक दोनों का सहारा लेना पड़ता है, किन्तु प्रश्न यह है कि वह किस से अधिक बोलता है और किस से कम? यह किसी ने न जाना।

सूर्य—(परमाल के साथ घूमती हुई आगे निकल जाती है, पीछे फिर कर देखती है तो कंचुकी एक वृक्ष की डाल से लटक रहा है) अरे यह क्या, आता क्यों नही ?

पर—विचारक जो ठहरा, कोई तरंग आ गई होगी अरे कंचुकी, ओ कंचुकी !

कंचुकी—इधर आइये राजकुमारी, अब मैंने यह प्रश्न हल कर लिया है, देर तो बहुत लगी।

(सूर्य और परमाल लौटती हैं)

सूर्य—कैसे मूर्ख से पाला पड़ा है, साथ क्यों नही आता रे ?

पर—क्या हल कर लिया ?

कंचुकी—राजकुमारी, इधर आइये । अहा ! बड़ी विचित्र बात है । जल्दी आइए जल्दी, जल्दी ।

(सूर्य और परमाल दोनो उधर जाती हैं)

दोनो—क्या बात है ?

कंचुकी—(गंभीर मुद्रा से) मैंने यह निश्चय कर लिया कि आम के वृक्ष पर नींबू और नींबू के वृक्ष पर आम क्यों नहीं लगते ?

सूर्य—(खीझ कर) तेरा सिर, इसे साथ लाकर मूर्खता मोल ले ली ।

परमाल—हाँ, क्यों नहीं लगते ?

कंचुकी—तो तुम जाओ, मैं भी जाता हूँ । नींबू और आम का प्रश्न—(जाने लगता है)

सूर्य—जा ।

पर—बहन बुला लो न ।

(इसी बीच नेपथ्य से सिंह गर्जना के साथ एक आदमी की चीख़ सुनाई देती है)

सूर्य—हैं, सिंह ?

पर—किसी आदमी के ऊपर टूट पड़ा है, हाय ! (दोनों

उस ओर दौड़ती हैं। परदा गिरता है और वे देखती है कि सिह यात्री को दबाये बैठा है। इसी समय परमाल और सूर्य तीर से एकदम सिंह को घायल कर देती है, वह गिर पडता है, दोनों उसको बाँध कर घायल की ओर मुड़ती है)

सूर्य—चोट तो नही लगी ?

पर—अरे, यह तो (घबरा कर) मूर्छित हो गया ?

व्यक्ति—(कुछ देर बाद उन दोनो की ओर देखता हुआ) आप कौन हैं, मुझे चोट नही लगी। खुदा तुम्हारा ....।

सूर्य—(ध्यान से देख कर) घबराओ मत, बताओ तुम कौन हो ?

व्यक्ति—(घबराकर) मै सिन्ध का ही रहने वाला हूँ।

सूर्य—सिन्ध का, (सदेह से) कहाँ जा रहे हो, इधर कहाँ से आ रहे हो, यह थैला कैसा है ?

व्यक्ति (छिपाता हुआ) कुछ नहीं, यों ही।

सूर्य—दिखाओ इसमें क्या है ?

पर—यह कोई दूत मालूम होता है।

व्यक्ति—दूत? क्या? मैं...मैं...दूत या खुदा, हाय मारा....।

सूर्य—(संवाद का थैला छीनकर), ओहो, यह तो अरबी भाषा में है ! कंचुकी जानता है। (पीछे फिरकर देखती हैं कि कंचुकी वहीं एक वृक्ष की आड़ में छिपा बैठा है। परमाल जाकर उसके कान पकड़ लेती है।)

कंचुकी—(सिंह को अपने ऊपर आया जान) अबे गधे, क्या तू भी......आदमी की तरह कान पकड़ता है (पीछे फिर कर) राजकुमारी जी ? ओह ! मैंने समझा कि...... ।

पर—तू इसी लिये वृक्ष की जड़ में छिप बैठा था, क्या यह नहीं सोच रहा था कि डर से वृक्ष की जड़ का क्या सम्बन्ध है ?

कंचुकी—वाह खूब कही । मैं यह सोच रहा था कि भय हृदय की वस्तु है या बाहर की ।

पर—क्या निश्चय किया ?

कंचुकी—यही कि भय रहने के लिये संसार भर का चक्कर लगाकर मनुष्य के हृदय में जगह कर बैठा है ।

सूर्य—कंचुकी, क्या तू अरबी भाषा जानता है ।

कंचुकी—जानने का ज्ञान जिसे हो वही जानता है । ज्ञान गुण है वह द्रव्य में रहता है, द्रव्य संसार की सभी वस्तुओं को कहते हैं, इसीलिये सभी सब कुछ जानते हैं ।

सूर्य—(पत्र दिखाकर) क्या तू इसे पढ़ सकता है ?

कंचुकी—यह संयुक्त क्रिया है और दो धातुओं से बनी है। एक पढ़ और दूसरी सक, सक से सामर्थ्य की प्रतीति होती है

और पढ़ से पढ़ने की। तुम्हारा किस से आशय है, राजकुमारी ?

सूर्य—(खीझ कर) तेरे सिर से, ले इसे पढ़ ।

पर—(हँसकर) बड़ा ज्ञानी है ।

कंचुकी—सिर, सिर से संसार की सभी क्रियाओं की उत्पत्ति है । विवेचना शक्तियों का आविष्कार सिर से ही हुआ है । राजकुमारी, इसे पढ़, यह वाक्य सार्वनामिक कर्ता का है । वाक्य की पूरी गति...... ।

सूर्य—(कान पकडकर) पढ़ता है या नहीं ?

कंचुकी—(पत्र हाथ मे लेकर) हाँ बोलिये क्या पढ़ूँ ? (देखकर) यह पत्र अलाफ़ी के नाम इराक से आया है ।

सूर्य—(ध्यान से) हैं इराक का, अलाफ़ी के नाम ?

(वह आगन्तुक व्यक्ति अपना रहस्य खुलता देख पत्र छीनकर भागने लगता है, सूर्य तीर से उसे घायल कर देती है, वह गिर पड़ता है)

सूर्य—(दौडकर दो लाते जमाकर) धूर्त कहीं का, (पत्र छीन लेती है) सच बता तू कौन है ?

कंचुकी—(लात उठाता हुआ) जानता नहीं तू किसके सामने खड़ा है ? ओहो ! क्या तू इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता ? नहीं यों न छोड़ूँगा-बता तू कौन है ? पर याद रख, प्रश्न में अशुद्धि कोई नहीं है, हाँ उत्तर ठीक होना चाहिये ।

व्यक्ति—(मार के डर से) राजकुमारी, मारो मत। हाय ! पीड़ा हो रही है। हाय—।

सूर्य—न मै तुझे यों ही न छोड़ूँगी, सच बता तू कौन है ?

(कंचुकी से) ले यह पत्र पढ़ कर सुना।

कचुकी—(पत्र पढता) हैजाज़ ने लिखा है " अलाफ़ी, यदि तुम राज्य की सहायता करो तो अब्दुल्ला को मार कर यहाँ से भागने और काफ़िर 'दाहर' की शरण में जाने का का तुम्हारा कसूर माफ़ किया जा सकता है। वह काम यह है कि तुम दाहर के राज्य के उन खास आदमियों का, जो दाहर के खिलाफ हैं, नाम लिख कर भेजो और उनको दाहर के विरुद्ध भड़काओ। हमारी तरफ़ से लालच देकर उनको मदद के लिये तैयार करो। हमें विश्वास है कि तुम मुसलमानों के विरुद्ध कोई काम न करोगे और जब अरबी लोग सिन्ध पर आक्रमण करें तब तुम उन्हें हर तरह से सहायता दोगे। "

पर—है ! ये चालें ? पर अलाफ़ी तो महाराज का बड़ा विश्वासी आदमी है।

सूर्य—(उस आदमी को बाँध कर) सीधी तरह से हमारे साथ चल, नहीं तो—(तीर चुभाती हुई) यहीं सब काम तमाम कर दूँगी।

कंचुकी—(हाथ की लकड़ी दिखाता हुआ) तुझे मालूम है इस लकड़ी का तेरे सिर से क्या सम्बन्ध है ? बता, चार प्रकार के सम्बन्धों में यह कौनसा सम्बन्ध है ?

पर—कंचुकी, इस के दाएँ होकर चलो ?

कंचुकी—(आप ही आप) आम को तोड़ते समय मनुष्य को यह विचार नहीं होता कि मुझसे यह छिन जायगा। यदि उसे आम का छिन जाने से सम्बन्ध मालूम हो तो वह आम तोड़ते समय सावधानी से काम ले। परन्तु विश्वास और होनहार दो वस्तुएं हैं। संसार ने भूलकर दोनों को एक समझ लिया है। शायद निराशा की पैदायश इनके बेजोड़ मेल से होती है।

(अभियुक्त की ओर घूरकर) समझे मियाँ, चलो।

पर—चल जल्दी-(सब जाते हैं)

दूत— चलता तो हूँ।

पटपरिवर्तन

छठा दृश्य

समय—दोपहर से पहले।

स्थान—महाराज दाहर का राजदरबार।

(महाराज और कर्मचारी गण बैठे हैं, नर्तकियाँ नाच रही है।)

जय जय जय दीनतरणि,
मंजुल-मुद-मोद-भरणि,
हरण अघ सुहाये। (जय जय—
भृकुटि-कुटिल-क्रोधकुण्ड,
अरिजनरमणीवितुण्ड
भस्म हो समाये। (जय जय—
प्रकट-कपट-चण्ड-दण्ड,
पटु-रिपु-पुर-दह प्रचण्ड
अग्निकुण्ड आये। (जय जय—
हितु-हित, रिपु-उग्रशत्रु,
सितयश, श्रुतिशास्त्रमित्र,
प्रकृति पुण्य पाये। (जय जय—

(गाना समाप्त होता है, नर्तकियाँ एक तरफ़ को हट कर बैठ जाती हैं।)

नृपाकर—(हाथ जोड़ कर) महाराज ! सामन्त सिंह श्री वत्सराज का एक दूत पत्र लेकर आया है, उसमें श्रीमान् से प्रार्थना की गई है कि गूजरों को पूर्ववत् अधिकार दिये जायँ। वे गूजरो की एक सेना बनाया चाहते है, जैसी आज्ञा हो ।

जयशाह—वत्सराज बड़े दूरदर्शी हैं । महाराज, उन्हें आज्ञा मिलनी ही चाहिये ।

पुरोहित—धर्मावतार, क्या नीच जातियों को अधिकार देकर उच्च वर्ण का नाश कर देंगे ? महाराज, ऐसा नहीं होना चाहिये ।

नृपाकर—पुरोहित जी, विश्वास और कर्म दो पृथक् वस्तुएँ हैं। राजनीति में बराबरी का पद देना नृपति का आभूषण है ?

(दूत का प्रवेश)

दूत—(हाथ जोड़ कर) दीनानाथ, बगदाद देश के राजा का दूत श्रीमान् के दर्शन किया चाहता है ?

दाहर—आने दे, मैं जानता हूँ वह क्यों आया है। (सभा से) वत्सराज की प्रार्थना पर विचार कर के ही उचित उत्तर दिया जाय। सभ्य लोगो, आपका इस सम्बन्ध में क्या विचार है ? मै चाहता हूँ।

(मुसलमान दूत का प्रवेश, सभास्थल के गौरव को देख तथा महाराज के तेज के सामने यवनदूत का मस्तक अपने आप झुक जाता है)

दूत—(सिर झुक जाने पर भी अभिमान-मुद्रा दिखाता हुआ) राजा दाहर, मै माननीय खलीफ़ा साहब के पास से आ रहा हूँ। उन्होंने तुम से पूछा है कि तुम्हारे कुछ आदमियों ने निरपराध अरबी व्यापारी के जहाज़ को क्यों लूटा और उनमें से कुछेक को मार क्यों डाला? इसलिये खलीफ़ा ने तुम पर अपराध लगा कर यह आज्ञा दी है कि तुम अपने अपराधों की क्षमायाचना करते हुए खलीफ़ा साहब को देवल की बन्दरगाह दे दो, और अरबी व्यापार का रास्ता खोल दो। नहीं तो सिन्ध की भूमि खून में रँग जायगी। तुम्हें मालूम है फ़ारस, रोम और स्पेन तक हमारा राज्य हो गया है। अब वह दिन दूर नहीं कि खलीफ़ा की हकूमत का डंका सारे हिन्दुस्तान में बजेगा, और तुम्हारे जैसे अपने किये का फल पायेंगे।

दाहर—दूत का काम है कि अपने स्वामी के मनोभावों को प्रकट करने में तनिक भी संकोच न करे। हमारे शास्त्र में दूत अवध्य है। इसीलिये हमने तेरी दुष्टता भरी बातें शान्ति से सुनी हैं। तेरे स्वामी ने हमारे ऊपर दोष लगाया है कि उस निरपराध अरबी व्यापारी को हमने लूटा। क्या तेरे

स्वामी को यह मालूम नहीं कि उस दुष्ट ने हमारी सीमा में आकर हमारे प्रजाजनों, स्त्रियों और बालकों को बहका कर भाग जाने की चेष्टा की। हमारी प्रजा ने जो उस का सत्कार किया, उसका फल हमें यह दिया गया ! फिर तेरा स्वामी देवल की बन्दरगाह किस बूते पर माँग रहा है। छी ! माँगने से देश नहीं मिलते। इससे पूर्व भी तो तेरे स्वामी और उसके बाप ने अपने बल की अच्छी प्रकार परीक्षा कर ही ली है। फिर किस बूते पर उसे ऐसा दुःसाहस हुआ। हम लोग आर्य है, हम में क्षात्रियत्व है; एक बग़दादी राजा की तो बात ही क्या, यदि समस्त संसार भी दाहर पर अनुचित दबाव डाल कर उसके देश को छीनने की चेष्टा करेगा तो दाहर उसके दाँत खट्टे कर देगा। वीरत्व की विभूति, क्षात्रियत्व की गरिमा, शौर्य के अवतार आर्य लोग व्यर्थ ही किसी से छेड़छाड़ नहीं करते। यदि हस्तक्षेप द्वारा उन्हें कोई पददलित करना चाहे तो एक बगदादी राजा क्या ऐसे सैकड़ों राजा भी दाहर का कुछ नही बिगाड़ सकते। जा, उस खलीफ़ा से हमारी सब बातें सुना दे। हमने जान बूझ कर किसी व्यापारी को कष्ट नहीं दिया।

दूत—अच्छी तरह सोच लो। कहीं ऐसा न हो कि एक व्यापारी के बदले तुम्हें सारा सिन्ध

खलीफ़ा को सौंपना पड़े ।

जयशाह—(क्रोध से) मूर्ख ! बहुत मत बक, अपने कर्म का पालन कर; अन्यथा तुझे मालूम नहीं कि महाराज का नाम लेते ही तेरा सिर मेरे वीरों की स्त्रियों की महावर का पात्र बन जायगा ।

दूत—(सहम कर) तो क्या मुझे यही आज्ञा है ?

दाहर—हाँ, तुझे और तेरे स्वामी दोनों को ।

(दूत डरता हुआ बिदा होता है)

जयशाह—(क्रोध से काँपते हुए) इन दुष्ट अरबियों ने उल्टा हमें दोषी ठहरा कर लड़ाई के लिये उभारा है, मृत्यु को बुलाने का प्रयास किया है । इस समय आवश्यकता है कि हम सदा के लिए इन अरबियों का नाश कर दें । हे वीर लोगो, मुझे विश्वास है कि सिन्ध के एक एक कण से एक एक वीर उठ कर अपने जयनाद से सम्पूर्ण शत्रु मण्डल को कँपा देगा ।

सभासद्—अवश्य, अवश्य ।

(सूर्य और परमाल देवी का अरबी जासूस के साथ प्रवेश)

सूर्य—महाराज की जय हो, शिकार के लिये घूमते हुए हमने एक अरबी का शिकार किया है । यह आपके सामने है ।

दाहर—बेटी, यह कौन है, कहाँ से आया है ?

अलाफी—महाराज, यह तो इराक के वज़ीर का एक सरदार मालूम होता है।

सूर्य—(अलाफ़ी से) हाँ, यह वही है (अपनी जेब से पत्र निकाल कर) यह पत्र ले कर अलाफ़ी को घूँस देने आया था।

दाहर—(आश्चर्य से) घूँस, अलाफ़ी यह क्या बात है ?

अलाफी—(घबरा कर) मेरे पास, मेरे पास क्यों ?

(सभा मे पत्र पढ़ा जाता है)

दाहर—क्या अरब का खलीफ़ा बाहुबल से दाहर का सामना नही कर सकता ? मनुष्यता से गिरे हुए व्यक्ति छलछिद्र से कार्यसिद्धि की आशा करते है। (कुछ सोच कर) अलाफ़ी, तुम्हें ज्ञात है कि खलीफ़ा के अपराधी होकर तुम ने हमारी शरण ली थी ?

अलाफी—महाराज, यह क्या भूलने की बात है। अलाफ़ी आपकी कृतज्ञता से कभी उऋण नहीं हो सकता।

दाहर—यदि तुम इस पत्र के द्वारा अपने अपराध क्षमा की सूचना पाकर अरब जाना चाहो तो प्रसन्नतापूर्वक जा सकते हो। आर्यों के शास्त्र में शरणागत को सर्वदा अभयदान लिखा है।

ज्ञपाकर—अलाफ़ी, समय बदलता जा रहा है। शत्रु के दल का कोई भी व्यक्ति इस समय क्षम्य नहीं है। यह महाराज की दया है कि जो यह सब जान कर भी तुम्हें अभय दे रहे है।

अलाफी—महाराज, तुच्छ अलाफ़ी श्रीमान् की दया के लिए बहुत आभारी है, वह ऐसा वेईमान नहीं है कि मौके पर भाग जाय। जहाँपनाह देखेंगे कि अलाफी अपने पाँच सौ अरबियों के साथ सिन्ध के लिये किस तरह जान लड़ाता है।

सभासद्—सिन्ध नृपति की जय, धन्य हो अलाफ़ी।

दाहर—तुम्हारी इच्छा है। यदि तुम रहना चाहो तो कोई रोक टोक नही।

ज्ञपाकर—महाराज, अब हमें शत्रु का सामना करने के लिये उद्यत रहना चाहिये।

दाहर—मन्त्रिन्, मै सतर्क हूँ (जाते हुए) आज फिर देश की रक्षा का प्रश्न है। शत्रु के आने में कोई देर नहीं है। देश के सूर्य पर युद्ध केतु के समान एक ग्रह है, जिससे उद्धार पाने के लिये मनुष्यों की बलि देनी होगी। परतन्त्रता की हिलोरों से डगमगाती हुई स्वतन्त्रता की नौका को बचाने के लिये योग्य कर्णधारों की आवश्यकता है। मंत्रिन्, हमें युद्ध के लिये तैयार रहना चाहिये। सेना की भरती प्रारम्भ

हो जाय। युद्ध के सम्बन्ध में फिर विचार करेंगे। इस व्यक्ति को बन्दी करो।

क्षपाकर—जो आज्ञा।

दाहर—(सूर्य से) तुम बड़ी वीर लड़की हो। सूर्य, मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी। (उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए जाते हैं, सभा विसर्जित होती है, जासूस को सिपाही बन्दी बना लेते है।)

पटाक्षेप

———

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(हैजाज़ अपने कमरे में क्रोध से अधीर हो कर दाँत पीसता हुआ टहल रहा है ।)

हैजाज—ओह, अब तो सहा नहीं जाता । खलीफ़ा और मेरे प्यासे गले को ठंडा करनेवाले मदिरा के घूँट के समान ये सिन्धी कब तक निश्चेष्ट रह सकते हैं । मद की उत्तेजना को पचा जाना ही उसकी विशेषता है । जिस दिन मैं इस उत्तेजक वारुणी को घूँट घूँट करके पीलूँगा, जिस दिन सिन्ध की वासन्ती सुरभि के उन्मत्त मकरन्दकण मेरे क्रोध की उत्तप्त ऊष्मा से छुनछुना कर भस्म हो उठेंगे, उस दिन मेरे हृदय में शान्ति की लहरियाँ धीमी किन्तु उत्कटता के अनुपम राग के साथ सुख की क्षीण रेखाएँ दिखला सकेंगी। मेरे ईमान के विरुद्ध सुन्दर काँच के प्यालों में रखी हुई यह शराब मुझे चैन से न बैठने देगी । इतना दुस्साहस, इतना अभिमान, 'आर्य लोग युद्ध से नहीं डरते' ! देखूँगा यह दाहर कब तक मेरे सामने आनंद-मन्दाकिनी की धारा में निरवच्छिन्न स्नान करता रहेगा । हाँ, अब

विलम्ब किस बात का ? मैंने भी वहतानसलामी के लड़के अब्दुल्ला को देवल पर आक्रमण करने के लिये तैयार कर लिया है । इधर सीरिया की छः हज़ार सेना और चार हज़ार बगदादी वीर प्रस्तुत हैं । अब्दुल्ला की अपनी सेना है ही । वह मकरान का सूबेदार है । इस बार सिन्ध को पीस न डाला तो बात ही क्या ? हाय, अनफ़, रशीद, सिनान और मुंज़िर बिचारे इन शत्रुओं के हाथों मारे गये । चच के समय से लेकर अब तक हमें पराजय ही मिली । किन्तु इस बार देखना है. देखूँगा—
(दरबान का प्रवेश)

दरबान—(सलाम कर के) सेनापति अब्दुल्ला साहब बाहर खड़े हैं ?

हैजाज—ठीक, अच्छे अवसर पर आये, जा बुला ला ।

(दरबान जाता है ।)

हैजाज—इस बार भूकम्प होगा । प्रचण्ड वज्र निर्घोष से सिन्ध सिहर उठेगा । (आकाश की ओर देख कर) देख रहा हूँ, अच्छी तरह देख रहा हूँ । इस युद्ध में मुझे सिन्धी शत्रुओं के शव दृष्टिगोचर हो रहे हैं । दर्द से कराहते, आहें भरते, फूट फूट कर रोते बिलखते लोगों को देख रहा हूँ । (दाँत पीस कर) रोओ, भरपूर रोओ । (हँस कर) तुम्हारा यही दण्ड है ।

(दरबान के साथ अब्दुल्ला आता है)

आओ मेरे सेनापति, शत्रु के कण्ठ पर कृपाण से क्रीडा करने वाले भाई अब्दुल्ला, सुनाओ कितनी देर है ?

अब्दुल्ला—स्वामी, सब कुछ तैयार है। मकरान, सीरिया और बग़दाद की सेनाएँ तैयार हैं। बस, आज्ञा की देर है।

हैजाज—(उत्कण्ठा से अब्दुल्ला के गले में हाथ डाल कर) बहुत ठीक। खुदा के नाम पर, अरब के नाम पर, देश की उन्नति के लिये भाई अब्दुल्ला मैं तुम्हें बिदा करता हूँ। जाओ। (तलवार देकर बिदा करता है।)

अब्दुल्ला—(सिर झुका कर) आमीन।

(दोनों जाते हैं, नेपथ्य में सेना का गगनभेदी घोष सुनाई देता है।)

पटपरिवर्तन

दूसरा दृश्य

(परमालदेवी प्रासादोद्यान मे वीणा लिये गा रही है ।)

पर—पड़े है छींटे हृदय पटल पर नई सी रंगत दिखा रहे है
पुरानी स्मृतियो के चित्रपट पर नवीनतायें जमा रहे है
विभूतियो की बनाई सुन्दर सुहावनी सी विशुद्ध झॉकी
कुमुद को चंदा की चॉदनी मे हॅसा हॅसा कर लुभा रहे है
ये झिलमिलाती चमक रही है तरंगे रॅग रंग की अनूठी
उन्हे उठा के हवा के झोके थपक थपक कर सुला रहे है
स्वयं जलाकर स्वयं बुझाते स्वयं सुनाकर अतीत गाथा
हमारी ऑखो के सामने यो विचार पर्दे उठा रहे हैं

(वीणा हाथ से रख कर) हारिल पक्षी लकड़ी पर बैठ कर जैसे उसे छोड़ना नहीं चाहता, उसी तरह संसार ने दुख को पकड़ रक्खा है। दुखों, विषादों की रगड़ से चमकती हुई हृदय की कठोरता स्वार्थ बन कर मनुष्य को नचाती रहती है। जब दो स्वार्थों का आपस में संघर्ष होता है तब उसकी प्रचण्ड ज्वाला में ह्रस्व स्वार्थ का स्वामी भस्म हो जाता है। यही संसार के विनाश की अन्तर्मुखी घोषणा है। उदारता, परोपकार और प्रेम के डण्ठलों पर निकला हुआ

सन्तोष का कमल उसी स्वार्थ के हिमपात से भस्म हो जाता है। विधाता बड़ा क्रूर है, जिसने विषैली लालसा की भूमि पर विभूति की मृगमरीचिका उत्पन्न कर दी है। उसने धाँय धाँय करके जलती हुई आत्मलिप्सा की मशाल देकर मनुष्य के अन्धकार भरे आत्मप्रासाद के लाक्षागृह में विभूतियों की सुन्दरता देखने की भावना पैदा करदी है। देखने मे सुन्दर विष के प्यालों में लबालब आशाभरे अमृत का एक बिन्दु टपका दिया है। (कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी—तलवार में चमक का जो उपयोग है वही साँप मे मणि का और परोपकार में स्वार्थ का है। पर, निबोली देखने मे सुन्दर, खाने में मीठी और अन्त में कड़वी है। यही संसार का प्रकार है।

पर—आओ कंचुकी, तुम्हारी बातों में बड़ा आनन्द मिलता है।

कंचुकी—परमात्मा ने मुँह के ऊपर नाक क्यों बनाई, जानती हो ?

पर—मनुष्य खाने से पहले उसकी दुर्गन्धि सुगन्धि को जान ले।

कंचुकी—और नाक के ऊपर आँखें ?

पर—उस गन्धमय वस्तु का रूप रंग देख ले।

कंचुकी—और ललाट ?

पर—उन सब का इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त कर के विचार सके।

कंचुकी—सिर और बाल ?

पर—चोट से बचने के लिये, मस्तिष्क की शक्तियों को सुरक्षित रखने के लिये ही तो, कंचुकी।

कंचुकी—हुश्, मुँह भीतर डालने के लिये, नाक बाहर निकालने के लिये, आँखें उन संयुक्त क्रियाओं का प्रतिबिम्ब दिखाने के लिये।

पर—कैसे ?

कंचुकी—ललाट डराने के लिये, बाल सुन्दरता के लिये।

पर—तेरा सिर, क्या वाहियात बकता है। अच्छा कंचुकी, कभी तू गाता भी है ?

कंचुकी—गा धातु से 'तृ' प्रत्यय लगा देने पर गाता बनता है, और "तृ" तराना है जैसे तड़् तड़् त न न न, त्रिद् त्रिद् ता ता यह दूसरा, इसी का नाम गाना है।

पर—अरे राग भर के, स्वर के साथ।

(जयशाह का प्रवेश)

जयशाह—(हँस कर) यह पागल क्या उपदेश दे रहा है, परमाल ?

कंचुकी—पागल और उपदेश ये दो विरुद्ध बातें है। यदि मैं उपदेश देता हूँ तो पागल कैसे ? और यदि मैं पागल हूँ तो उपदेश नहीं दे सकता। जो इस प्रकार की विरुद्ध बातें करता है वही… ..।

पर—(क्रोध से) युवराज को पागल कहता है ?

कंचुकी—कौन कहता है ?

पर—तू ही तो।

कंचुकी—आँख से देखते हुए भी जो न देखे, कानो से सुनते हुए भी जो न सुने, जानते हुए भी न जाने, वही पागल है। युवराज यह जानते हुए भी कि यह हमारा शत्रु है, उसके स्पष्ट प्रमाण देखते हुए भी उसको नहीं पहचान पाते।

जयशाह—(बड़े ध्यान से) ऐसा कौन है ?

कंचुकी—अलाफ़ी।

पर—तू ने यह कैसे जाना ?

जयशाह—बस समझ गया, कंचुकी ने मेरी आँखें खोल दीं।

पर—सो कैसे भाई ?

जयशाह—देशद्रोही के अतिरिक्त कोई भी मनुष्य जाति धर्म और देश के प्रश्न पर चुप न रह सकेगा। जब सिन्ध और अरब का प्रश्न है तब अलाफ़ी अरब का विचार किस प्रकार छोड़ सकता है? परमाल, वह बहादुर है, वीर है।

कंचुकी—आम के वृक्ष पर बैठ कर मैना जब 'मैं ना मैं ना' कहती है तब उसका आशय यही है कि उस वृक्ष के सामने वह कुछ भी नहीं है।

(कंचुकी दूसरी ओर को चल देता है।)

पर—कहाँ जाते हो?

कंचुकी—यह जानने के लिये कि ये सब वृक्ष खड़े क्यों हैं, क्या इन्हें किसी बात का डर है?

जयशाह—बहन, हमें सदा सतर्क रहना चाहिये। यही तो कंचुकी अभी कह गया है।

पर—भाई, मैं तो उसकी बातें सुन कर मुग्ध हो जाती हूँ।

जयशाह—है तो यह पागल, पर कभी कभी बड़े पते की बातें करता है।

(सिपाही का प्रवेश)

सिपाही—जय हो युवराज की, श्रीमान् को महाराज याद कर रहे हैं?

युवराज—(सोचते हुए) हाँ चलो, चलो बहन चलें !

पर—कुमार, आप चलिये, मैं आती हूँ।

(जयशाह जाता है।)

सौन्दर्य, शान्ति, सरलता और सहानुभूति की उपासना ही आत्मा का अन्तिम लक्ष्य है। परन्तु संसार के विभूतिभरे तथा सुरभित सुमनों को तोड़ते समय काँटे ही उसके हाथों में क्यों आते हैं; शरीर छिल जाता है, उँगलियाँ रुधिर से भर जाती हैं। विषाद की चिनगारियों में आत्मानंद के कण छुन छुन कर के सूख जाते हैं, विलास की बेल में उमंगों के पवन से उत्साहित होकर आशा कलियाँ जब सफलता के पुष्प का परिधान पहनती हैं तब उन्हें सामने विनाश का रूप देख पड़ता है और वे अपनी फड़फड़ती और पुलकित पंखड़ियों के ओठों से टीसे भरती हुई परवश उस ओर ही अग्रसर होतीं हैं। हम इच्छा न रहते हुए भी सुख के निर्माण में दुख ही दुख देखते हैं ?

वीणा लेकर गाती है—

दुख-स्वप्न-अनिल से काँप रहे कण आशा के पथ हीन हुए
स्मृति सुख का रोमन्थन करते सब साधन बिगड़े दीन हुए
दुख के तालों पर थिरक थिरक जब सुख-मदमाती लहर चली

वह साथिन लहरों से हँस कर हा ! क्रमशः वही गई निगली
किसने परिणामों में पाया संचित आशा भरा सिगार
मैं संसार विहारस्थल पर निरख रही यह बारंबार

(ध्यानमग्न हो जाती है ।)

पटपरिवर्तन

तीसरा दृश्य

(देवल का सूबेदार ज्ञानबुद्ध अपने निजू कमरे मे दो मुसाहिबो के साथ बैठा है)

ज्ञान—यह राजकाज भी कितना बेढव, कितना कठोर, कितना कुरुचिपूर्ण और दायित्व से भरा है। प्रातःकाल से सायं काल तक, रात से सवेरे तक, चौबीस घण्टे, आठ पहर, उठते बैठते, खाते पीते, राज्य के झंझट ऐसे पीछे पड़े रहते हैं जैसे धुँए के पीछे आग। फ़रियादी की पुकार, रुक्का, पुर्ज़ा, हस्ताक्षर, आज्ञापत्र, यह देख, वह देख के मारे नाक में दम है। लोग कहते हैं, मैं सुखी हूँ, स्वतन्त्र हूँ, कर्ता, धर्ता, विधाता हूँ, पर सच तो यह है कि है यह सबसे बड़ी परतंत्रता और सब से अधिक दुख। नर्तकियों के नाच में, संगीत के उतार चढ़ाव में, विलासिता के सरूर में जैसे राजकाज मुझे पुकार पुकार कर टोंच सा रहा है। क्यों समुद्र, ठीक है न?

समुद्र—स्वामिन्, बिलकुल ठीक, बावन तोले पाव रत्ती सही है, दीनानाथ! भला जितना काम आप करते हैं क्या किसी और ने भी किया है? कुते की पूँछ की तरह दिन भर हिलते······?

ज्ञान—लाभ क्या, कुछ भी नहीं। कलम की तरह घिसे

जाना। कागज़ की तरह रँगे जाना ही हमारा काम रह गया है।

महापथ—और आग की तरह जलना, पानी की तरह बहना, मिट्टी की तरह उड़ना, हवा की तरह फैलना क्या कोई अच्छी बात है, महाराज ?

ज्ञान—नहीं, मुझ से इतना काम न होगा। मैं घुन की तरह अब न पिस सकूँगा, महापथ !

समुद्र—नहीं, कभी नहीं। मैं तो जब आप को केवल संकेत से 'हाँ', या 'न' करते देखता हूँ तब चिन्ता के मारे मेरा मुँह लटकने लगता है। हाय, इतना काम !

महापथ—बुद्ध भगवान् ने कहा है शान्तिलाभ करो, शील संचय करो, धैर्य रखो। भला उस बैल की पूँछ का क्या फायदा जो न कभी कुछ खाती है न विश्राम करती है कवल मक्खियाँ ही उड़ाया करती है ?

समुद्र—महाराज, आप और कार्य, दोनों परस्पर विरुद्ध वस्तुएँ है, क्या आप काम करने के लिये उत्पन्न हुए हैं ! नहीं, कभी नहीं।

महापथ—ठीक है उस काठ का सन्दूक बनने से क्या फायदा है जो अच्छे अच्छे कपड़ों की रक्षा तो करता है लेकिन उन कपड़ों को स्वयं कभी नहीं पहनता।

ज्ञान—वाह महापथ, क्या खूब, भई तुम्हारी जबा...... ।

समुद्र—श्रीमान्, कलम कहिये !

महापथ—कलम ! मै कलम से कह रहा हूँ क्या ? यार तुमने तो सब...... ।

ज्ञान—गुड़ गोवर कर दिया !

महापथ—निश्चय ही !

समुद्र - हाँ बात तो यहाँ से चली थी कि हमारे सूबेदार साहब काम बहुत करते है ।

महापथ—ऐसे काम से तो निष्काम होजाना अच्छा ।

समुद्र—मेरा बस चले तो मै आपको निष्काम बना दूँ ?

महापथ—जब कागज़ के पन्ने हवा में फुरफुर के उड़ते हैं, जब कोमल किसलय पवन पर झूल कर इठलाते हैं, तब क्या वे काम करते हैं ? कभी नहीं ।

ज्ञान—काम काज से मनुष्य की आयु घटती है, शरीर निर्बल होजाता है ।

समुद्र—हाँ, महाराज, देखते रहने से नज़र कमज़ोर हो जाती है । चलाने से हाथ थक जाते हैं । गाने से ज़बान घिस जाती है । इसीलिए गाय केवल रँभा कर जबान की रक्षा करती है । अहा ! खूँटा तो पशुओं की जान है, यदि खूँटा न होता तो इन्हें कितनी तकलीफ़ होती, जानते हो !

महापथ—सब मर जाते जनाब, खूँटा तो पशुओं का भगवान् है।

ज्ञान—समुद्र, तुम कभी गाते भी हो ?

समुद्र—गाता था और खूब गाता था, पर इसी घिसने घिसाने के डर से गाना तो क्या मैंने रोना भी छोड़ दिया। नहीं तो मेरे जैसा रोना क्या सब को आता था ?

ज्ञान—कुछ सुनाओ न।

महापथ—हाँ भाई, कुछ सुनाओ न।

समुद्र—सुनिये। (गाता है)

झुकी है झमक घटा घनघोर,
कड़क उठी बिजली आँखें बन, चमक उठी जगकोर
झुकी है झमक घटा घनघोर

ज्ञान—बड़े सुन्दर पद हैं, वाह क्या कहने !

समुद्र—(गर्व से फूल कर)

पवन पंख पर नाच रहे थे मेघ भरे उल्लास
नीचे लगे नाचने सुन्दर जग के मृदु उच्छ्वास
गर्जना सुन मन हुआ विभोर
झुकी है झमक घटा घनघोर

ज्ञान—(प्रसन्न होकर) खूब, बहुत खूब, मेघों का नाच

कितना सुन्दर है।

'पवन पंख पर नाच रहे थे मेघ भरे उल्लास'

महापथ—ज़रा नीचे का पद भी तो देखिये।

'नीचे लगे नाचने सुन्दर जग के मृदु उच्छ्वास'

महाराज, ताले में अटकी हुई ताली के समान मेरा मन इस गीत में अटक गया है।

समुद्र—मुझ से पूछो तो मेरे मन में यह गीत कछुए के हाथ पैर की तरह घुस गया है।

ज्ञान—अरे, तुम सब ने तो कह लिया पर मेरे मन का क्या हाल है, जानते हो?

महापथ—हाँ महाराज, झाड़ी में हिरन के समान आप का मन इस गीत में उलझ गया होगा। आपका मन इसके पद सौन्दर्य को चर कर ज़रूर बैल की तरह काम और अतृप्ति की जुगाली कर रहा होगा।

ज्ञान—ठीक, बात तो तुमने लाख रुपये की कही महापथ, लाख रुपये की!

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी—जय हो महाराज की, महाराजाधिराज का एक दूत संदेश ले कर आया है, जैसी आज्ञा हो।

ज्ञान—हैं! महाराज का दूत? अच्छा जाओ भेज दो।

प्रतिहारी—(सिर झुकाकर) जो आज्ञा।

(जाता है)

ज्ञान—समुद्र, दिनरात राज्य के झगड़े। दूत के रूप में यमराज का वाहन होगा।

समुद्र—हाँ, और क्या? आज्ञा क्या होगी–ग्रीवा के उभार का, जिह्वा की चेष्टा का और यत्न से निकले अक्षरों का उत्सव होगा। भला, पूछो इन बछिया के ताऊ दूतों से कि तुम्हें क्या पड़ी जो इधर से उधर पर फटकारते हो। ईश्वर-प्रदत्त मांस को घिसाये डालते हो!

महापथ—चले आये जैसे सर्प बिल में जाता है, गाय नाँद पर जा डटती है। उठते बैठते जब देखो तब दूत, दूत हैं या भूत?

(दूत का प्रवेश)

दूत—जय हो सूबेदार साहब की। महाराजाधिराज ने यह आज्ञापत्र भेजा है। (संवादपत्र देता है, ज्ञानबुद्ध पत्र हाथ में लेकर सिर से लगा कर पढता है)

ज्ञान—(पत्र पढ़ता हुआ भौंचक्का सा रह जाता है। दूत से) जाओ। (दूत जाता है) हाय, फिर वही! (घबरा कर सुस्त हो जाता है)

समुद्र—क्या हुआ महाराज, कुछ लग गया क्या?

महपथ—(समुद्र से) पत्र में ज़रूर कोई ऐसी बात होगी जो……।

समुद्र—जो सूबेदार साहब के मन से उल्टी के समान बाहर निकलना चाहती होगी।

महापथ—नहीं, क्या महाराजाधिराज के महल में साँप निकलने की बात नहीं हो सकती ?

समुद्र—क्यों नहीं, पर किसी को कुत्ता भी तो काट सकता है, गाय भी तो बिदक सकती है !

महापथ—घर में आग भी लग सकती है, किसी का पाँव कीचड़ में भी फिसल सकता है !

ज्ञान—नहीं समुद्र, महाराज का संवाद आया है कि युद्ध की तैयारी करो। अरवियों का देवल पर आक्रमण होनेवाला है। सेना की भर्ती प्रारम्भ होनी चाहिये। युद्ध होगा।

समुद्र—अरे बापरे, युद्ध होगा ! (उठकर इधर उधर छिपने की कोशिश करता है, फिर लौट आता है।)

महापथ—युद्ध ! (हैरान होकर) युद्ध बड़ी भयानक चीज़ है। हम बौद्ध लोगों का युद्ध से क्या सम्बन्ध ?

समुद्र—ठीक है, हम लोगों का युद्ध से क्या सम्बन्ध !

ज्ञान—नहीं समुद्र, मुँह खोल कर मना भी तो नहीं किया जाता। पर मुझ से युद्ध न होगा।

महापथ—नहीं महाराज, युद्ध तो हम लोगों के धर्म के विरुद्ध है। भगवान् ने हिंसा का निषेध किया है। ललित विस्तर में लिखा है:—

मैत्रीबलेन जित्वा पीतो मेऽस्मिन्नमृतमण्ड.

करुणाबलेन जित्वा पीतो मेऽस्मिन्नमृतमण्डः

महाराज, मैत्री और करुणा के बल से संसार के श्रावकों, बुद्ध और बोधिसत्वों ने अमृत पान किया है। हिंसा तो हमारी शत्रु है। भगवान् ने दया, करुणा, वीतरागिता द्वारा संसार विजय माना है।

ज्ञान—नहीं, हम लोगों के विचार से युद्ध करना अधर्म है। और महापथ, तुम जानते हो मैं अधर्म का पालन नही कर सकता; भगवान् के आदेश के विरुद्ध नहीं चल सकता।

महापथ—कभी नहीं श्रीमान्, अधर्म क्या हम तो ऐसे धर्म का भी पालन न करे!

समुद्र—धर्म के विरुद्ध बात मानी भी नही जा सकती और माननी भी नही चाहिये, क्यों महापथ?

महापथ—हाँ, और क्या? हम क्या कोई पशु हैं जो धर्म के विरुद्ध आचरण करें।

ज्ञान—किन्तु मैं स्पष्ट रूप से महाराज का विरोध भी तो नहीं कर सकता।

समुद्र—(हैरान होकर) हाँ, आप तो विरोध भी नहीं कर सकते!

महापथ—अरे भई विरोध, विरोध का तो बिचार भी नही कर सकते।

ज्ञान—सेनाएँ तैयार करनी होगी—अच्छा, समय बता देगा कि मैं क्या कर सकता हूँ, क्यों समुद्र ?

समुद्र—हाँ सो तो है ही, श्रीमन् ।

महापथ—यथार्थ है, मेरे देवता !

ज्ञान—तुम बड़े गुणी हो, महापथ ।

महापथ—गुणों की परीक्षा क्या सब कहीं होती है महाराज, किसी ने ठीक कहा है--

गुन न हिरानो गुनगाहक हिरानो है ।

समुद्र—किसी कवि ने क्या ही ठीक कहा है:--

मानव बनाये देव दानव बनाये
　　यक्ष किन्नर बनाये पसु पंछी नाग कारे है
द्विरद बनाये लघु दीरघ बनाये
　　केते सागर उजागर बनाये नदी नारे है
रचना सकल लोक लोकन बनाय ऐसी
　　जुगति में 'बेनी' परबीनन के प्यारे है
(आपको)बनाय विधि धोयो हाथ जाम्यो रंग,
　　ताको भयो चन्द्र, कर झारे भये तारे हैं

महापथ—वाह क्या खूब, "आपको बनाय विधि धोयो हाथ जाम्यों रंग, ताको भयो चन्द्र, कर झारे भये तारे हैं ।"

ज्ञान—किन्तु, समुद्र इसका गुण से क्या सम्बन्ध है ?

महापथ—हाँ भई, इसका गुण से क्या सम्बन्ध है ?

समुद्र—सम्बन्ध, महाराज सम्बन्ध तो बहुत हैं, पिता का पुत्र से, नानी का नाना से और आम का जामुन से।

ज्ञान—समुद्र, तुम बड़े चतुर हो।

महापथ—और महाराज मैं ••।

ज्ञान—तुम भी, पर युद्ध का क्या किया जाय ?

दोनों—(गुमसुम होकर) हाँ महाराज, युद्ध का क्या किया जाय ?

(सब ठोड़ी पर हाथ रख कर सोचते हैं।)

पटपरिवर्तन

चौथा दृश्य

(सिन्ध के उस पार अब्दुल्ला अपने सेनानायकों के साथ बैठा है।)

अब्दुल्ला—सब कुछ तैयार है। खुदा ने चाहा तो कल ही लड़ाई छिड़ जायगी। मैंने फ़ौज को लड़ने के लिये बाँट तो दिया ही है। क्यों रहमान, क्या कुछ बाक़ी है?

रहमान—श्रीमन् , बस अब तो लड़ाई ही बाक़ी है और बाक़ी है हमारी विजय।

अब्दुल्ला—तुम सब लोग तैयार हो न?

रहमान—"तैयार" से अगर अधिक कुछ हो तो हम वह भी हैं जनाब!

अब्दुल्ला—अनीफ़ तुम?

अनीफ—मैं भी महाशय।

क़ादिर—मैं भी सेनापति।

अब्दुल्ला—तुम कैसे लड़ोगे रहमान?

रहमान—मैं आग की तरह जलाऊँगा।

अनीफ़—मैं बिजली की तरह शत्रु पर गिरूँगा।

कादिर—म हवा की तरह उड़ूँगा और शत्रुओं का सिर भुट्टा सा उड़ा दूँगा।

अ दु ला—रहमान तुम दायें हो कर लड़ना, कादिर तुम बायें होकर और अनीफ़ तुम फ़ौज के सामने यानी हमारे पीछे होकर।

सब—जो आज्ञा।

अ दुल्ला—याद रखो पीछे पैर न हटाना?

सब—(क़दम पीछे हटा कर) क़दम पाछे हटाना यह तो हम ने सीखा ही नहीं सेनापति!

अ दुल्ला—ठीक है जाओ विश्राम करो मैं भी थकामाँदा हूँ। कि तु रहमान एक बात का मुझे सदेह है। क्या सि धा लड़ना जानते हैं?

कादिर—हाँ सेनापति यह प्रश्न तो अभी बाक़ी ही है अगर वे लोग लड़ना न जानते होंगे तो हम कैसे लड़ेंगे?

रहमान—मेरा ख़याल है कि वे लोग लड़ना नहीं जानते। शायद अलाफी और उसके आदमी ही केवल लड़ने के लिये आयगे।

अनीफ़ –पाँच सौ अरबी हम लोगों का मुकाबिला नहीं कर सकते।

अब्दुल्ला—तो फिर हम लोगों की विजय निश्चित है।

सब—विचार तो ऐसा ही है।

अब्दुल्ला—मेरा ख़याल है कि हमें एक तरह अभी से विजय की ख़ुशी मनानी चाहिये।

रहमान—ठीक है शायद फिर मौका न मिले!

अब्दुल्ला—जाओ विश्राम करो मौज उड़ाओ।

(सब जाते हैं।)

पटपरिवर्तन

पाँचवाँ दृश्य

(देवल का राजदरबार महाराज दाहर बैठे हैं दरबार सजा है ।)

ज्ञान—महाराज हम लोग पड़ तो बड़ी कठिनाइ में गय थे पर भगवान् न समय पर रक्षा की । यदि उस समय युवराज अपनी सेना समेत न आ जात तो विजय ।

दाहर—हाँ ज्ञानबुद्ध बात भी ऐसी है । पर तु याद रखो शत्रु इस बार हार कर चुप न बठेगा । हमें उत्सव मनाने की अपक्षा प्रबल युद्ध की तैयारी करनी होगी ।

ज्ञान—(घबरा कर) हैं ! (सभल कर) ठीक है हम फिर युद्ध की तैयारी करनी होगी ।

सुपाकर—महाराज सूबदार की सना स कुछ न होता यदि उन्हें उस समय युवराज की सेना की सहायता न मिलती ।

(जयशाह का प्रवेश)

जयशाह—जय हो महाराज की आप के चरणा के प्रताप से हम लोग विजयी हुए । अब्दुल्ला अपनी सेना समेत देवल पर आक्रमण करने को जैसे ही बढ़ा वैसे ही मैंने सेना समेत उस पर धावा बोल दिया ।

बड़ी तेज़ी के साथ पहुँचते पहुँचते मुझे मालूम हुआ कि दवल पर आक्रमण हुआ ही चाहता है। मैंने आते ही शत्रु की गति को रोका। मेरी एक टुकड़ी दुर्गद्वार पर जा डटी और दूसरी टुकड़ी ले कर मैं शत्रु पर टूट पड़ा। दिन भर के घमसान युद्ध के बाद शत्रु पूर्णरूप से पराजित हो गया। अब्दुल्ला मारा गया। बचे खुचे सेना के लोग सभी भाग गये हैं। (ज्ञानबुद्ध की तरफ़ देख कर) महाशय आप युद्ध के समय कहाँ थे? आप के तो ढूढने पर भी दर्शन न हुए।

ज्ञान—(घबरा कर) हैं! मैं तो वहीं । दुर्गद्वार से शत्रु की गति ।

दाहर—तो आप युद्धभूमि में गये ही नहीं!

ज्ञान नहीं गया था महाराज मैं सेना का प्रबंध कर रहा था।

दाहर—ज्ञानबुद्ध दवल के सूबेदार की हैसियत से तुमने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। तुम सेना लेकर आगे क्यों नहीं बढ़े?

ज्ञान—महाराज (काँपते हुए) शत्रु ने मुझ पर अचानक आक्रमण कर दिया।

दाहर—मैं तुम्हारे सम्बन्ध में विचार करूँगा।

कृपाकर—महाराज आज्ञा हो तो प्रार्थना करूँ?

दाहर—हाँ कहो।

कृपाकर—महाराज सूबेदार का निर्णय तो होगा ही इस समय हम कुछ और भी ।

दाहर—(सोच कर) ठीक है। जिन लोगों ने युद्ध म विजय प्राप्त की है उनको रा॒य की ओर स पारितोषिक मिलना चाहिये। जयशाह अपने वीरों की सूची बना कर हमारे सामने लाओ।

जयशाह—महाराज एक प्राथना है कि इस विजय के उपलक्ष्य में लोहान जाट और गूजर जाति के ऊपर से वे बन्धन हटा दिये जाँय जिनमें आज तक वे लोग जकड़े रहे हैं। इस बार और पिछले युद्ध में इन लोगों ने रा॒य की आवश्यकता से अधिक सहायता की है।

(सभास्थल में सन्नाटा सा छा जाता है।)

पुरोहित—पृथ्वीनाथ धर्मशास्त्र इन लोगों के साथ कोई ऐसा व्यवहार करने की आज्ञा नहीं देता जिससे ये लोग उच्च जाति के लोगों से मिल सकें। स्वर्गीय महाराज चचन जो विधान बनाए थे उन में

दाहर—नहीं पुरोहितजी व्यवस्था समय के अनुकूल होनी चाहिये।

पुरोहित—कम और ज म क विचार स एक पशु कभी तप करन पर भा ब्राह्मण नहीं बन सकता महाराज !

अ य ब्राह्मण—पुरोहित जी ठीक कह रह हैं ।

दाहर—नहीं कर्म की श्रेष्ठता प्रत्येक यक्ति के अपन दनिक व्यवहार पर निर्भर है। लोहान जाट और गूजरा में वैसा ही क्षत्रिय व है जैसा कि वारता का कार्य करनेवाले अ य क्षत्रियों में।

क्षपाकर—पुरोहित जी ससार म कोई ऊँचा नीचा नहीं है। यह भद भावना मनुष्य कृत है । देखिये भगवान् का बनाया हुआ सूर्य सब को एक सा प्रकाश देता है। वायु सब को एकसा जीवन दता है; तुम्हें अधिक आर उनका जि हें तुम नाच कहते हो यून जीवन नहा प्रदान करता ?

पुरोहित—प्राचीन धम का उल्लघन भी तो नहीं किया जा सकता महाराज ? स्मृतियों के विरुद्ध क्या अब एक हि दू राजा को चलना होगा ?

दाहर—स्मृतियाँ भी ऋषियों न बनाई हैं। क्या समय की आवश्यकता के अनुसार ऋषियों न उन म परिवर्तन नहीं किय हैं ? यदि सब स्मृतियाँ एक सी हैं तो इतनी स्मृतियों के निर्माण का क्या प्रयोजन ? इससे स्पष्ट है कि वे स्मृतियाँ समय के अनुसार लिखी गई हैं।

पुरोहित—कि तु स्मृतिकार ऋषि लोग ही उन में

परिवर्तन कर सकते हैं हम संसारी जीव नहीं।

दाहर—ठीक है स्मृतिकार ऋषि लोग ही इसमें परिवर्तन कर सकते हैं। पर यह बतलाओ कि इन जातियों को गिराने की चेष्टा किसने की? हमारे महाराज चच ने ही तो! व कौनसे ऋषि थे? इससे पूर्व क्या इन लोगों के साथ वैसा ही यवहार होता था जैसा कि आज? पुरोहित जी जब मेरे पिता ने इनकी अवस्था को इतना गिरा दिया तब क्या मेरा कर्तव्य नहीं कि मैं आवश्यकतानुसार इनका फिर उठा सकूँ!

(सारी ब्राह्मण मण्डली कानों पर हाथ रख निरुत्तर हो जाती है।)

चपाकर आज से मेरे र य में इन लोगों के साथ किसी प्रकार का अ याचार न हो। उनका पूववत् अधिकार दिये जायँ तथा व सराज को आज्ञा दी जाय कि व अपने प्रदेश म लाहानों जाटों और गूजरों की सेना तैयार करें।

चपाकर—जो आज्ञा। (सारी सभा कुछ लोगों को छोड़ कर जयनाद करती है।)

जयशाह—एक प्रार्थना और ।

दाहर—हाँ कहो।

जयशाह—महाराज इस युद्ध में मरे लाहान वीरों ने ही सहायता दी है। और उनमें जिसने अब्दुल्ला का सिर

काटा है यह वीर मानू है (उसे खड़ा कर के) देखिय इसी ने आज हमारे रा-य की रक्षा की है। मरा प्रार्थना है कि इस वीर को अरुण का सेनापति बनाया जाय।

सब—(दृढ़ भक्ति से गद्गद हो कर) धन्य हैं ध य हैं।

दाहर—अवश्य वीरों का पुरस्कार खड्ग है (इतना कहकर दाहर उसे खड्ग देते हैं मानू सिर झुका ग्रहण करता है) तुम जस वीरा पर सि ध को गव है।

सब—धन्य हैं ध य हैं।

दाहर—वीर मानू आज स तुम द्वल क सनापति नियुक्त हुए।

मानू—(सिर झुका कर) महाराज की बड़ी कृपा। दव ! वीरता किसी की बपाती नहीं है साहस किसी के घर पैदा नहीं हुआ विजय की माता वीरता ससार भर को अपनी कटीली विभूति बाँटती है हमारी जाति को भी वह कुछ न कुछ मिली ही है। सि ध की रक्षा के लिये सारी लोहान जाति अपना तन मन धन अर्पण कर देगी।

सब—जय हो महाराज दाहर की जय हो सि ध देश की जय हो वीरवर मानू की।

दाहर—अच्छा अब सभा विसर्जित होती है। (सब जाते हैं तथा महाराज के सकत स मन्त्री जयशाह आदि कुछ विश्वस्त लोग रह जाते हैं केवल ज्ञानबुद्ध आज्ञा की प्रतीक्षा म बाहर खड़ा रहता है।)

जयशाह—ज्ञानबुद्ध न इस युद्ध म जिस कायरता का परिचय दिया उसे देखत उस पर विश्वास नहीं होता कि उसे आगे भी इस पद पर रहने दिया जाय।

दाहर—नहीं राजनीति के अनुसार वह इस योग्य सिद्ध नहीं हुआ।

कृपाकर—महाराज मेरा विचार है सेना सम्बन्धी सब भार वीर मानू को सौंपा जाय तथा रा॒य ॒यवस्था के लिय ज्ञानबुद्ध ही रहें। महाराज ज्ञानबुद्ध क निकालने से सारे बौद्ध बिगड़ बैठेंगे।

दाहर—(सोच कर) तुम्हारा विचार मुझ उपयुक्त ज्ञात होता है मन्त्री जी। क्यों जयशाह?

जयशाह—जो महाराज की इच्छा।

दाहर—मन्त्री ज्ञानबुद्ध का बुलाओ। (मन्त्री के सकेत से प्रतिहारी ज्ञानबुद्ध को बुलाता है।)

(ज्ञानबुद्ध सिर झुका प्रणाम कर के एक ओर खड़ा हो जाता है।)

दाहर—ज्ञानबुद्ध केवल की सेना का भार मानू को दिया जाता है और रा॒य का प्रब॒ध तुम्हारे हाथ में रहेगा।

ज्ञान—(खि॒न होकर) जसी प्रभु की आज्ञा!

जयशाह—यही ठीक है हमें विश्वास है शत्रु फिर उठेगा।

दाहर—मैं ज्ञानबुद्ध को देवल की रा यव्यवस्था का प्रब धक बनाता हूँ। जाओ ज्ञान भगवान् बुद्ध क विवेक का बल ले कर हिन्दुओं की वीरता ग्रहण करो। ससार में केवल ठीक रा यव्यवस्था रखने से ही काम नहीं चलता उस की नींव दृढ़ करने के लिये वीरता देशप्रेम और विवेक की भी आवश्यकता है। हम अब अलोर को जाते हैं और तुम देवल की रक्षा में अधिक उत्साह से उद्यत हो।

ज्ञान—(सिर झुका कर) जो आज्ञा।

(सभा विसर्जित होती है।)

पटाक्षेप

तीसरा अंक

पहला दृश्य

इराक़ की राजसभा –

(हैजाज़ अपने दरबार में बैठा है सभा में सन्नाटा है ।)

हैजाज—(दुःख से) आज फिर हम लोगों की आशा पर पानी पड़ गया । अरब का भाग्य चक्र समय के घुमाव के कीचड़ में फँस गया । ताज़े खजूरों में भी सड़ाँयद उठने लगी । जीवन की दिशा करवटें बदल कर फिर सो गई । फूल तोड़ते समय काटों पर हाथ पड़ा । सारे हाथ छिल गये । (क्रोध से) पर अब तो यह नहीं सहा जाता । ए खुदा क्या तुझको यही स्वीकार है ? क्या तू अपना प्रकाश शत्रुओं पर नहीं डालना चाहता ? क्या हम अब अरब के बाज़ारों तक ही सीमित रहेंगे ? क्या हज़रत की इच्छायें पूरी न होंगी ? क्या मेरे खलीफ़ा का भाला हिन्दोस्तान की सीमाओं से टकरा कर वापिस लौट आयगा ? नहीं यह न होगा । शत्रुओं की अभिलाषाओं को तोड़ मरोड़ कर अरब सागर में बहा देना होगा । अच्छा देखें खलीफ़ा साहब अब क्या जवाब देते हैं । पर नहीं मै

यो न मानूँगा। ईमान और दश क इतिहास में हैजाज का नाम पराजय में नहीं लिखा जा सकगा।

(दरबान का प्रवेश)

दरबान—हुजूर दवल क सूबेदार का एक आदमी आया है।

हैजाज—क्या दवल क सूबदार का आदमी? अवश्य इसमें कुछ रहस्य है। भीतर आने दो। (जाता ह।) अवश्य इस इस में कुछ भेद है।

(दूत का प्रवेश)

दूत—(प्रणाम करके) देवल क सूबदार ने आमान् की सवा में यह चिट्ठा भजी है। (चिट्ठा देता है)

हैजाज—(चिट्ठी हाथ में लेकर पढ़ता है खुशी से फूल कर) हजार बार ध यवाद है उस खुदा का। बस अब मदान मार लिया। मेरे यारे सभासदा देवल के सूबदार न अब्दुल्ला की मृ यु पर शोक प्रकट करते हुए क्षमा याचना की है। वह लिखता है कि हम लोग बौद्ध हैं। हमें लड़ाइ से कोई सरोकार नहीं। यदि इस बार आप सि ध पर हमला करें तो हम आपके सहायक होंगे क्योंकि हमारे श्रमण इस बार आप की ही जीत समझते हैं।

सभासद्—बहुत ठीक बहुत ठीक।

हजाज—(दूत से) जाओ हमारी तरफ़ से सूबेदार से कहना हमने उसका अपराध क्षमा किया। यदि इस बार शत्रु हारा तो उसे उचित पारितोषिक दिया जायगा। (दूत सलाम करके जाता है।)

(दरबान का प्रवेश)

दरबान—श्रीमन् पूज्य खलीफा साहब का एक आदमी आया है।

हैजाज—आने दो।

दरबान—जो आज्ञा। (जाता है)

हैजाज—देखना चाहिये गुरु जी क्या आज्ञा देते हैं। इस बार तो पौबारह हैं। यह किश्त और यह मात (मूछों पर ताव देता है।)

(खलीफ़ा का रुक्का लिये दूत का प्रवेश सलाम करके रुक्का देता है।)

हैजाज—(पढ़ते हुए) ठीक ठीक बहुत ठीक—मेरे प्यारे दीवान हुजूर फिर हमला करने को कहते हैं। और इस बार दूने उत्साह से। अलहजूरी देवल के सूबेदार के संदेश के साथ धर्माचार्य को हमारी तरफ़ से पूरी तैयारी की सूचना दे दो।

अलहजूरी—जो हुक्म (रुक्का लिख कर देता है दूत जाता है।)

हैजाज—हे वीरो इस बार हमारी विजय है। मैं चाहता हूँ तुम में से कोई बहादुर इस बार आक्रमण के लिये तैयार हो। (दरबार में सन्नाटा छा जाता है एक नवयुवक उठता है।)

नवयुवक—प्रभो मैं इस बार अपने भाग्य की परीक्षा ।

हैजाज—(प्रसन्न हो कर) मेरे बहादुर बच्चे मुहम्मद बिन कासिम मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम इस बार जीतोगे। कल मैंने ज्योतिषियों से भी पूछा था। उन्होंने इसबार हमारी विजय का सँदेसा दिया है अच्छा मैं तुम्हें सेनापति बनाता हूँ। सेना की तैयारी करो। इस बार साठ हजार सेना के साथ हमला करो। (सब लोग मुहम्मद बिन कासिम की तरफ़ हसरत की निगाह से देखते हैं।) आओ मैं तुम्हें अपने हाथ से कवच पहनाना चाहता हूँ (पहनाने लगता है।)

मुहम्मद बिन कासिम—(तलवार हाथ में लेकर) हुजूर आज भरे दरबार में मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि यह कासिम विजयी हुए बिना नहीं लौटेगा।

सब—आमीन आमीन।

हैजाज—जाओ मेरे बहादुर खुदा तुम्हारी सहायता करे।

(दरबार का एक कवि उठ कर गाता है ।)

कवि —हे अरब-दुलारे जाओ दुश्मन को खूब छकाओ ।

निज देश धर्म की रक्षा करना बढ़ बढ़ कर लड़ना

मत पीछे कदम हटाना मत दाएं बाएँ जाना

दुनियाँ को रग दिखाना अपना सब देश बनाना

हे अरब-दुलारे जाओ दुश्मन को खूब छकाओ ।

हैजाज—बस बस । अब दर की ज़रूरत नहीं है ।

(सब दरबारी तलवारें उठा कर विजय विजय चिल्लाते हुए जाते है ।)

पटाक्षेप

दूसरा दृश्य

(देवल का राजपथ कुछ ब्राह्मण तथा बौद्ध श्रमणों की परस्पर बातचीत)

देवकी—वाह खूब युद्ध हुआ। हमारे युवराज भी कितने वीर हैं। शत्रु एक मोर्चा भी न ले सका।

सशय—पर अपने राम को इसम कुछ भी भलाई नहीं देख पड़ती। जनार्दन अब तुम क्या करोगे?

मधुआ—क्यों भलाई क्यों नहा देख पड़ती? महाराज क्या युद्ध में शत्रुआ की हार में आपको कुछ स देह है?

सशय—नहीं भाई ग्रहा का उ पात अशुभ लक्षणों का होना ही हमें देख पड़ रहा है। शिव! शिव!

देवकी—बुद्धि क शत्रु एस ही होत हैं मधुआ।

सशय—अरे महाराज ने लोहान और जाटों को पूर्ववत् अधिकार दे दिय अर्थात् उ हें हमारे वर्ण के साथ मिला दिया। क्या अब राज्य सुरक्षित रह सकता है? अथात् क्या राज्य रह सकता है? भाई शूलपाणि देख रहे हो? प्रकृति प्र यय का नाश हो गया! आँधी से आम का बौर टूट टूट कर गिर रहा है। देवकीनन्दन तनिक तो देखो!

महापथ—युद्ध क्या कोइ करन की चीज़ है ? भगवान् बुद्ध ने इसका निषध किया है। पाँच शालों में भा इसका वणन नहीं है। अहिंसा के विरुद्ध बौद्ध लोग लो जा नहीं सकत भाई।

देवकी—देश का दुर्भाग्य है जो महापथ और सशयचद्र जैस आदमी सिन्ध में उपस्थित हैं। देशविद्रोही धमविद्रोही लागों का नाश हो जाना ही ठीक है। (सशय और महापथ से) तुम लागों के कारण हा देश का नाश होगा। धर्म की रूढियों क साथ खूट की तरह बध रहनेवाल य ढोंगी पुरुष देश के नाश का कारण बनेंगे। अहिंसा का राग अलाप कर दशद्रोह का झगडा खड़ा करनेवाल बौद्ध क्या आज सच्च बौद्ध हैं ? इन पण्डितों और आडम्बर स स्वाथ सिद्धि करने वाले छूँछे ज्ञानिया ने कब दश का साथ दिया है ? यह आज कोई अनाखी बात नहीं है।

मधुआ—तो क्या दवकी इन लोगों का कहना झूठ है ?

सशय—क्या हम लाग धम क विरुद्ध बात कहते हैं अर्थात् क्या धर्म हमारे साथ नहीं है दवकी? पुरुषोत्तम तुम कब आआगे ?

महापथ—क्या तुम बौद्ध सम्प्रदाय के ज्ञाता हो जा भगवान् पर कटाक्ष करत हो ? अहिंसा क्या हमारा धर्म

नहीं है ? हम लोग मन वाणी कर्म से बौद्ध हैं। बौद्ध लोग किसी पर अत्याचार करना जानते ही नहीं। यदि शत्रु लोग आयें तो इसमें हर्ज ही क्या है ? हमारे लिये तो मुसलमान और हिंदू का राज्य एक जैसा है।

सञय—और जब हमारे ज्योतिषशास्त्र के अनुसार ग्रहों की कुदृष्टि है तो इस दृष्टि को हटा कर शत्रु के सिंध प्रवेश को अर्थात् शत्रु के इधर सिन्ध पर राज्य करने को कौन रोक सकता है ? जिस देश में उच्चवर्णों के साथ नीचों को मिला दिया जाय वहाँ भगवान् उसकी रक्षा कैसे कर सकते हैं अर्थात् अब नाश तो अवश्यभावी है। हे यशोदानन्दन कब तक प्रतीक्षा करें ?

देवकी—(दांत पीस कर) अरे दुष्टो तुम इतने नीच और पतित हो गये हो इसका हमें ज्ञान नहीं था। होनहार और अन्ध धर्म के श्रद्धालुओ क्या तुम में विवेक बुद्धि का इतना अभाव है जो तुम एक देशी और विदेशी राज्य के सम्बन्ध में विचार भी नहीं कर सकते। देश और धर्म के शत्रुओ क्या तुम्हें यह ज्ञान नहीं कि शत्रु और मित्र में कितना अन्तर है ? कौन तुम्हारा हितू है और कौन अहितू ? क्या ये अरबी यहाँ आकर राज्य करने पर हमारे मित्र बन जाँयगे ! आज शत्रु कितने दिनों से इस देश पर दाँत

लगाये बैठा है लगभग तीस साल से अवसर पाते ही वह इधर टूट पड़ता है और हमारे देश को हथिया लेना चाहता है। धन्य हैं महाराज चच और महाराज दाहर जिनके प्रबल प्रताप के आगे उसकी दाल न गल सकी। धिक्कार है तुम्हारे जैसे देशघातकों का जो अपनी अश्रद्धा अविश्वास और बुद्धिहीनता के कारण देश में निकम्मे जीवन की डौंडी पीट रहे हो। हाँ मैं जानता हूँ यदि तुम्हारे जैसे नीच देश में और उत्पन्न हो गये तब तुम्हारी इच्छायें भी पूर्ण होंगी। क्या मातृभूमि और महाराज के विरुद्ध कुछ कहते हुए तुम्हारी जीभ कट कर नहीं गिर पड़ती! माता ने तुम्हें पैदा होते ही मार क्यों नहीं डाला!

संशय—(महापथ से) चलो भाई यहाँ नास्तिकों का अड्डा है। (जाने की चेष्टा करते हैं)

मधुआ—ठहरो देश के शत्रुओ (झपट कर दोनों के सिर पकड़ कर एक दूसरे से टकरा देता है दोनों हाय हाय करते भागते हैं।)

देवकी—भाई मधुआ देखा तुमने हमारे देश की क्या अवस्था है? आओ भाई हम और तुम आज से प्रतिज्ञा करें कि सम्पूर्ण सिन्ध में देश प्रेम की लहर उत्पन्न कर देंगे। प्रत्येक सिन्धी को लड़ने मरने के लिए कटिबद्ध कर देंगे। बोलो मातृभूमि की जय!

मधुआ—(खड़ा हो कर) मैं आज से प्रतिज्ञा करता हूँ कि आजीवन मातृभूमि की सेवा करूँगा। शत्रुओं के जीवन में मृत्यु का चित्र खींच दूँगा। नाश की अंधेरी लहरों में शत्रु की जीवन-ज्योति बुझ जायगी। अहा जब युद्ध होगा उस समय मारुबाजों में शत्रु-नाश की ध्वनियाँ उठेंगी।

दोनों गाते हैं —

घनघोर युद्ध घिर आते हैं जब दाएँ बाएँ दलबल से
तब वीरों के मन हँसते हैं उठते हैं शस्त्र अथक बल से

निर्झर से झरने झरते हैं जब रुधिर धार के भूतल पर
उद्दण्ड प्रचण्ड बने योधा तब गिरते सतत धरातल पर

सागर में रक्त उगलती हैं नद नदियाँ उफनी आती हैं
छट छट खट खट तलवारों की बिजली सी चमक दिखाती है

उठ रुण्ड रुण्ड से लड़ते हैं उठ मुण्ड मुण्ड से भिड़ जाते
इन खड्ग सृष्टि के मेलों में शस्त्रास्त्रवाद सब छिप जाते

होती अभिषिक्त धरा झर्झर झर्झर कर झरन झरते हैं
उत्कट नागों के मद झर झर रणचण्डी ख पर भरते हैं

वह आज समय फिर आया है रुद्राट्टहास का सगर म
कण कण कर अरिदल दल देंगे रक्तों क न्हाकर सागर म

(सब जाते हैं।)

पटपरिवतन

तीसरा दृश्य

स्थान—अजार क बाहर उद्यान में—

(सूर्य और परमाल दवी का प्रवश ।)

सूर्य—वासना के मुख पर कालौच लगा कर लज्जा की क था फाड़ कर आज मैं निकली हूँ अमर जीवन के उन्नत वक्षस्थल पर नाचने । स्वग की छटाएँ ससार के वैभव अब मुझे भरमा नहीं सकत । इन वृक्षों के पत्तों के समान समय क समीरण से उत्तेजित होकर नाचूँगा । पर माल जानता हो मरे इस ताण्डव का क्या प्रभाव होगा ? शिव के ताण्डव के समान मेरु हिलने लगेगा शष काँप उठगा कच्छप सिहर उठगा पर्वत डगमगाने लगेंगे और धरा धड़कने लगेगी । आज अवसर है ससार को मैं दिखला दूँगी कि मैं क्या कर सकती हूँ !

पर—बहन इतने आवेश म आने का कारण ?

सूर्य—परमाल आज तू मेर आवश में आन का कारण पूछती है तो ले सुन । विधाता के काप की तरह शत्रु फिर एक बड़ी सना के साथ सि ध का विध्वस करने आया चाहता है । इस बार अ त है । पिताजी सै यसगठन में व्यस्त हैं ।

सारा देश युद्ध की घटाओं से घिरा है । पश्चिम से बादल उठा है । विश्व को कपानेवाली आंधी उठी है । सिन्धी लकुन में आनाकाना कर रहे हैं । ऐसे समय क्या किया जाय? सुन मैंने निश्चय किया है कि सिन्ध के घरों झोपड़ियों प्रासादों में जाकर देशभक्ति का उन्मादी गीत गाऊंगा। कायरों को वीर और वीरों को रण के लिये उन्मत्त बना दूंगा । इस पर भी तू पूछता है मेरे आवेश में आने का कारण? छी! बहन क्या अब यह कहने का अवसर है ?

पर—बहन क्या विश्वप्रेम और करुणा दोनों भावनायें जीवन की सुन्दर वस्तुएँ नहीं हैं ? क्या जातीयता प्रान्तीयता की विभूति ही सब कुछ है ? क्या आत्मा और आत्मीयता की परितृप्ति में वास्तविक जीवन का सुख है ? मैं तो समझती हूँ विवेक पूर्ण परतन्त्रता उच्छृंखल स्वाधीनता से कहीं बढ़ कर है ! विनाश की ओर जाना ही जीवन प्रगति की इति श्री है ।

सूर्य—हाय ! आँधी और तूफ़ान में कोमलता की भावना प्रचण्ड अग्नि में सन्तोष की कामना और सर्वाङ्गव्यापी विनाशक विष की प्रबलता में क्या हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने से काम चलता है ? जिस विश्वप्रेम का तू राग अलाप रही है वह पीब भरे घाव में नश्तर न लगा कर उसे दबा देने की चेष्टा के समान है । मृत्यु की पीड़ा से कराहते हुए पुरुष के

सामने विहाग क राग अलापने के समान है । आज जब शत्रु साठ हज़ार सना ले कर सिन्ध पर आक्रमण किया चाहता है घमासान युद्ध होगा खूनखच्चर हो जायगा, उस समय पुरुषों के साथ स्त्रियों का क्या कर्तव्य है यही आज हम सिन्ध की न रियों का सीखना है । हमारे भाई और पिता युद्ध में लड़ें और हम हाथ पर हाथ रखकर बैठी रह यही क्या हमारा कर्तव्य है ? क्या स्त्रियाँ केवल देखने की वस्तु हैं क्या करने का भार पुरुषों क हिस्से में ही आया है ? क्या वे पुरुषों के समान सुख का उपभोग नहीं करतीं ? क्या परतन्त्रता के दुख से कवल पुरुषों का ही दुख होगा स्त्रियों पर उसका कुछ प्रभाव नहीं पड़ेगा ? नहीं बहन अब हमें उठना हागा ।

पर—ठीक है मैं साहित्य की रुचिर रूप राशि पर मुग्ध थी । दार्शनिकता भावप्रवणता की विस्मयकारी झाड़ियों में फँसी थी । आज मुझे ज्ञान हो गया कि स्त्रियाँ क्या हैं ? उन में भी तीक्ष्णता उग्रता और प्रचण्डता की चिनगारियाँ हैं । आत्मरक्षा देशहित की उत्कट अभिलाषाओं का उद्रेक है । मैं भूली रही । आज मेरी आँखें खुला हैं । बहन मैं तुम्हारी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ । (आत्म ग्लानि से रो कर बहन की गोद में गिर पड़ती है)

सूर्य—(प्यार से) मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । तुम भ आज

असली स्वभाव आ गया । तुम में भी सब शक्ति है केवल इस बात का ज्ञान और बोध होने की आवश्यकता थी। देखो सुना यह कौन गा रहा है--(दोनों सुनती हैं ।)

(नेपथ्य में देवकी और मधुआ का गाना सुनाई देता है)

दोना—उठो वीर भारत माता के माँ ने तुम्हें बुलाया है
कस कर कमर अमर बनने का सुन्दर अवसर आया है
शत्रु उठा आता आँधी सा करने को यह देश विनाश
पीस डालना उसे कुचल कर रखना भारत मा की आस
रण में जीवन देना डट कर सम्मुख यह सिखलाया है
उठो वीर भारत माता के माँ ने तुम्हें बुलाया है ।

सूर्य और पर—वाह क्या सुन्दर गाना है । (आगे सुनती हैं ।)

वीर भावना जगे नसों में वीरों के से काम करें
वीरों जैसा मरना सीखें वीर बनें कुछ नाम करें
सिन्ध देश के चन्द्रबिम्ब पर अरब राहु बन आया है
उज्ज्वल करना मर मुख इसका यश ही जीवन काया है
माता आँसू बहा रही है हृदय उभरता आता है
इसे सभालो गले लगालो कायर ही कतराता है
समय परीक्षा देशभक्ति की लेने को बढ़ आया है
उठो वीर भारत माता के मा ने तुम्हें बुलाया है

(दोना रंग भूमि में आ जाते हैं ।)

सूर्य—(आगे बढ़ कर) ठीक ठीक! इस गाने का ठीक यही समय है। चन्द्रमा में लगे हुए लाञ्छन को धो डालने का यही समय है। युद्ध के बवण्डर से शत्रु को उड़ा देने का यही समय है। भाई तुम कौन हो?

देवकी—भूमि भार से थके हुए शेष के उच्छ्वास परतन्त्रता की आँधी के लिए घनघोर घन की वर्षा के दो कण!

मधुआ—वज्रस्फोट के छोटे से निनाद। विद्युत् धारा की दो तरंगें।

सूर्य—और शत्रुओं को कुचल डालने के लिए उत्साह और उत्तेजना के दो रूप! वीरत्व के दो आक्रमण आओ मैं तुम्हारा स्वागत करती हूँ यह मेरी बहन परमाल है और मैं हूँ महाराजाधिराज दाहर की अकिंचन कन्या सूर्य।

देवकी—(सभ्रम से) माता आपकी जय हो। हम आप को प्रणाम करते हैं।

सूर्य—हाँ फिर एक बार माता की पुकार सुनाओ। मेरा हृदय सुनने को बेचैन हो रहा है। (फिर सुनाते हैं सुन कर) धन्य हो वीरो धन्य हो। आओ सब लोग मिल कर मातृभूमि को शत्रुओं के आक्रमण से बचाने के लिये सिन्ध के प्रत्येक नर और नारी को नींद से जगावें।

देवकी और मधुआ—(सिर झुका कर) जो आज्ञा।

सूर्य—अरुण ब्राह्मणाबाद शिवस्थान देवल आदि सारे प्रान्तों में बिजली के समान कड़की आँधी के समान उड़ी बादल के समान गरजी और कायर देशद्रोहियों को युद्ध के लिए उत्साहित कर दी। जाओ मैं भी अपनी बहन के साथ देश देश घूमूँगी वनों में विचरूँगी पहाड़ों की छान डालूँगी लोगों को एकत्र करूँगी और उन्हें सेना में भरती होने के लिए उभारूँगी।

देवकी—माता आपके लिए क्या असम्भव है? स्त्रियाँ यदि चाहें तो संसार को उलट दें। मुझे विश्वास है—

धमक जायगी धरा कँपेगी भूधरमाला
कड़केगी जब बहन प्रखर बन विद्युज्ज्वाला
रुधिर धार बन सिन्धु शत्रु को मृत कर देगा
पलपल शतदल काट रुधिरसागर भर देगा
बिन्दु बना कर उदधि उदधि को कण कर दोगी
शक्ति समुद्र नसों में जग की फिर भर दोगी

सूर्य—(हँस कर) वीर देवकी घबराओ मत स्त्रियों का प्रत्येक निश्वास देश की रक्षा के लिये होगा। उनकी प्रत्येक उमंग पुरुष जाति के ऊपर न्यौछावर हो रहेगी। उन के विलासों में साहस उन के सौन्दर्य में सती व उनकी

अभिलाषाओं में देशानुराग और उनकी प्रत्येक चेष्टा में सिन्ध के जीवन की रक्षा का प्रश्न होगा।

देवकी—(उठो वीर भारत माता के मा ने तुम्हे बुलाया है। गाते हुए जाते हैं।)

सूर्य—बहन देखा तुमने देवकी और मधुआ को। ये लोग साधारण परिस्थिति के आदमी हैं। यदि प्रत्येक देश वासी में ऐसे विचार उत्पन्न हो जाय तो अकेला सिन्ध प्रांत सारे संसार का सामना कर सकता है।

पर—पर बहन (दुख से) यदि ऐसा होता ! मैंने सुना है कुछ बौद्ध और ब्राह्मण महाराज द्वारा लोहानों और जाटों को उच्चाधिकार दिये जाने पर बेतरह बिगड़ उठे हैं।

सूर्य—बहन हम इन से भय नहीं है। इस भावी युद्ध में वे बौद्ध और ब्राह्मण लड़ने नहीं जायगे जायगे केवल लोहान जाट\गूजर तथा क्षत्रिय लोग। ईश्वर इन्हें सद्बुद्धि दे। परमाल मुझे भय है कहीं ये लोग विद्रोह न कर बैठें। यदि ऐसा हुआ तो हमारा सारा सुखस्वप्न ओस के कणों की तरह ढल जायगा। हमारी सारी वीरता बहादुरी और सैन्य संगठन धूल में मिल रहेगा। तब तो विधाता ही रक्षक है।

पर—यदि महाराज ऐसे विद्रोहियों को बन्दी कर लें तो कैसा—

सूर्य—यह असम्भव है। एक दो आदमी तो हैं नहीं। सारे प्रान्त में इस प्रकार के आदमियों का ज्ञान कैसे हो? महाराज भी तो निश्चेष्ट नहीं हैं। चलो हम अपने कर्तव्य का पालन करें।

(दोनों जाती हैं।)

पटपरिवर्तन

चौथा दृश्य

(देवल का राजप्रासाद । ज्ञानबुद्ध बेन का राजा मोक्षवासव और उस के कुछ सहचर परस्पर बातचीत कर रहे हैं ।)

ज्ञान—भाई मोक्षवासव मैं इस बार दाहर को दिखला दूंगा कि ज्ञानबुद्ध शून्य की सम्पत्ति नहीं है निकम्मे जीवन की धूलि नहीं है। इतना तिरस्कार इतना अपमान? जयशाह ने भरी सभा में मेरा अपमान किया! अरबियों की क्रोधाग्नि में सिन्ध का प्रत्येक राजभक्त भस्म हो जायगा।

मोक्ष—भाई ज्ञानबुद्ध आनन्द की रागिणी गा कर स्वतन्त्रता की वीणा बजाने वाले दाहर का अन्त समझो। उसकी प्रत्येक चेष्टाएं मेरे विद्रोह की आग में स्फुलिङ्ग बन कर उड़ेंगी। तुम्हारे कहने के अनुसार हम ने प्रत्येक बौद्ध और ब्राह्मण को दाहर के विरुद्ध कर दिया है बौद्ध उपासक को बुलाकर भी मैं उसके द्वारा काम साधूँगा। लोहान जाटों और गूजरों का पक्ष लेने के कारण मैंने उच्च जातियों को बेतरह भड़का दिया है। अब वे हमारे सहायक हैं।

ज्ञान—और मैं ने इराक के सूबेदार से साँठगाँठ कर ली है मैं उसे सहायता दूँगा। उसने मुझे अभयप्रदान

करते हुए वृषल को राजा बनाना स्वीकार कर लिया है समझे ?

मोक्ष—और मैं ?

ज्ञान—तुम तो अपने नगर के शासक रहोगे ही । मैं तुम्हारे लिये भी प्रार्थना करूँगा । अब आवश्यकता इस बात की है कि अन्त तक हम लोग दाहर पर यह भेद प्रकट न होने दें कि हमें उसके प्रति किंचि मात्र भी विद्वेष है।

मोक्ष—ठीक ।

समुद्र—महाराज जब बौद्धों का राज्य ही नहीं है तो फिर बौद्ध लोग उनके सहायक ही क्यों हों अपना भला बुरा तो पशु भी पहचानते हैं हम तो फिर भी आदमी हैं। अरब के लोग इस बार आपके भरोसे पर ही आक्रमण करेंगे यह स्वयं हैजाज़ ने मुझ से कहा है।

मोक्ष—भाई मुझे बेन के अतिरिक्त कुछ अधिक देश की भी आवश्यकता है । सो तुम हैजाज़ से कह कर दिलवा देना। पीछे झगड़ा न हो।

ज्ञान—कैसी बातें करते हो ! देवल और अलोर पर पूर्ण रूप से मेरा अधिकार होगा और ब्राह्मणावाद और शिवस्थान पर तुम्हारा । हाँ तुम अपनी ओर से दाहर से मिल कर युद्ध करने का समाचार भेज दो । और उसे

विश्वास दिला दा कि देवल पर आक्रमण के समय वह मानू के साथ रहेगा। मुझे मानू का डर है। वह किसी तरह भी काबू में आता नहीं दीखता। बड़ा निडर और सच्चा वीर है।

मोच—मानू को यहाँ स हटा दना हागा अन्यथा हमें सफलता का कोई आशा नहीं है।

ज्ञान—यह सब समय पर ही किया जायगा इसका भी मैं ने प्रबन्ध कर लिया है।

(बौद्ध सन्यासी का प्रवेश)

ज्ञान—(उठकर) जय हो उपासक।

सागरदत्त—शान्ति लाभ हो। सुनाओ सूबेदार मुझे क्यों बुलाया है? सुना है शत्रु फिर आक्रमण किया चाहता है।

ज्ञान—महाराज आप सम्पूर्ण विहार के अधिपति तथा बौद्ध धर्म के उपासक हा कर भी शत्रु मित्र का भाव रखते हैं।

सागर—जो शत्रु हैं उन्हें शत्रु समझना विवक है। पाप कभी भी पुण्य नहीं कहा जा सकता। जिस प्रकार आ मा की उन्नति में बाधा पहुचाने वाल राग द्वेष हमारी दृष्टि में सदा हेय है उसी प्रकार बौद्ध धर्म के विघातक ये अरबी भी हमारे शत्रु हैं। उन्हें मित्र कैसे कहा जा सकता है ज्ञानबुद्ध?

ज्ञान—भगवान् न महानिर्वाणसूत्त में आठ प्रकार के ध्यानों म विश्वमैत्री विश्व के प्रति करुणा का भाव

सिखाया है। फिर महाराज मनुष्य के प्रति ये भाव एक बौद्ध के हृदय में कैसे नहीं रह सकते?

सागर—उपासक तुम भूलते हो। भगवान् का यह आशय कदापि नहीं। बौद्ध लोग मैत्री करुणा के उपासक हैं किन्तु जिन कामों से मैत्री नष्ट हो करुणा के स्थान पर आतंक अत्याचार घर कर लें उन्हें भी ठीक ठाक समझना होगा। हम लोग विश्वमैत्री किस धर्म से सीखे हैं भगवान् बुद्ध से ही तो। सुना ये अरबी लोग हमारे द्वारा विश्वमैत्री और विश्वकरुणा के भाव सिखाये जाने पर भी बौद्ध धर्म का नाश किया चाहते हैं। मकरान प्रदेश में इन अरबियों ने निरीह बौद्धों का नाश किया। उनके विहार संघारामों को छिन्न भिन्न कर डाला बलात्कार से बौद्धों को यवन बना डाला। इस प्रकार इन दुष्टों ने जब बौद्धों और बुद्ध धर्म के नाश का बीड़ा उठाया है तब तुम्हीं बताओ इन से सुख शांति लाभ करने की आशा हम लोगों को कब हो सकती है?

ज्ञान—महाराज फिर विश्व के प्रति मैत्री का भाव तो बौद्धों में न रहा। शत्रु मित्र उसकी दृष्टि में एक हैं। शत्रु बन कर यदि हम पर कोई अत्याचार करें तो भी वह क्षम्य नहीं है क्या महाराज?

सागर—विश्व के प्रति मैत्री का अर्थ है दुष्टों के प्रति दया दिखाना और दुष्टों की दुष्टता दूर करना। हमारी अहिंसा का अर्थ इतना ही है। हम मन वाणी और कर्म से अहिंसा का उपदेश देते हैं उसका अर्थ यही है। जिस धर्म ने हमें ये भाव सिखाये हैं उस की रक्षा करना हमारा धर्म नहीं है क्या?

मोक्ष—पर महाराज हिन्दू भी तो हमारे लिये वैसे ही हैं जैसे यवन। क्या बौद्ध धर्म से उनको घृणा नहीं है? क्या वे बौद्ध और बुद्ध धर्म को कोई अच्छी दृष्टि से देखते हैं महाराज?

सागर—तुम भूलते हो भाई हिन्दू धर्म बौद्धों का ही एक अंग है। धम्मपद के उपदेश हिन्दुओं के उपदेशों से भिन्न नहीं हैं। उनके उपनिषद् उनकी स्मृतियाँ और उन के वेद भगवान् के उपदेशों के सहायक हैं। भगवान् ने उन हिन्दू ग्रन्थों के अर्थों में—जो उस समय के पण्डितों द्वारा विरुद्ध रूप से किये गये थे—विश्वास न करके उन अर्थों का त्याग किया। सर्वसाधारण के समझने योग्य भाषा में दृढ़ता पूर्वक मनन करके उन्हीं विचारों को धम्मपद में स्थान दिया है। हम हिन्दुओं से भिन्न नहीं हैं ज्ञान!

ज्ञान—(बात बदल कर।) यदि हिन्दू राजा के बदले एक बौद्ध राजा को राज्य मिले तो आपके विचारों में यह काम सर्वोत्तम होगा?

सागर—(उसी भोलेपन से) ठीक है मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं पर सूबेदार अब यह सम्भव नहीं है। मुझे डर है कि बौद्ध लोग अपने राज्य की लालसा में इन अधिकारों से भी कहीं हाथ न धो बैठें।

ज्ञान—तो क्या आप इस आगामी युद्ध में बौद्धों के भाग लेने के पक्ष में हैं ?

सागर—उसी तरह जिस तरह आत्मा की उन्नति के मार्ग में आने वाले राग द्वेष मद मात्सर्य और कपट की बाधाओं को दूर करने में आवक ?

मोक्ष—तब हम लोग इस में भाग लेंगे। आप को केवल इसीलिए कष्ट दिया गया है कि इस समय हम बौद्धों को मार्ग दिखला कर कृतार्थ करें।

सागर—भाई कल्याण लाभ करो। परन्तु स्मरण रहे कि विद्रोह सब से बड़ा विघातक शत्रु है। मैंने भी तो सिलवन नामक शरीर से बड़े बड़े महापातक और हत्याएँ की हैं। मैं उस समय भगवान् से द्रोह करता था। इसी प्रकार भूल चूक होने पर भी मनुष्य समय पर सावधान होकर मनुष्यत्व व्यक्तित्व के उच्च सिंहासन पर बैठ सकता है। झूठे भ्रम और अनर्थकारी धारणाएं व्यक्तित्व के विकास में बाधक शक्तियाँ हैं। इन्हें छोड़ो और सच्चे रूप से बाहर

भीतर एक रहकर बाह्य जीवन के उत्कृष्ट आदर्श बनो। अच्छा अब हम जाते हैं। (जाता है।)

ज्ञान—बुड्ढा बड़ा खुर्राट निकला। इससे काम बनने की आशा नहीं है। हमने सोचा था इसका आदेश लेकर प्रान्त के समस्त बौद्धों को युद्ध के विरुद्ध उत्तेजित किया जाय।

मोक्ष—पर उसने अन्त में जो कुछ कहा वह बात मेरे हृदय में जल बार बार चोट करती है। परन्तु स्मरण रहे कि विद्रोह सब से बड़ा विघातक शत्रु है।

ज्ञान—अरे भोले भाई ये बातें राजनीतिज्ञ के लिये नहीं हैं। साधारण गृहस्थी ही इन बातों पर विश्वास कर सकते हैं हम नहीं।

मोक्ष—हाँ और क्या? राज्यप्राप्ति की आशा में ये चोटें उतनी उत्तेजक नहीं है।

ज्ञान—आज ही वेन पहुँच कर तुम महाराज को अपनी पूर्ण तैयारी की सूचना भेज दो।

मोक्ष—ठीक है। (जाते हुए) परन्तु विद्रोह सबसे बड़ा विघातक शत्रु है ओह ये शब्द कितने भयंकर हैं! किन्तु यह हमारे लिये नहीं है।

ज्ञान—गाता हुआ जाता है:—

है आशा अब मत मचल पूर्णता सरक रही है

उठ साहस का दे साथ भावना बहक रही है
भर भर कर उत्कट राग हृदय को समझा लेना
तू खेल द्रोह से फाग प्रेम मत घुसने देना
हे आशा अब मत मचल साधना सरक रही है
उठ साहस का दे साथ भावना बहक रही है

पटपरिवर्तन

पाँचवाँ दृश्य

(मकरान के मैदान में मुहम्मदबिनकासिम की छावनी पड़ी है वह शिविर म अपने सहायक अबुलमलिक क साथ बठा बात कर रहा है)

मुहम्मद—भाई अबुल इस बार अगर खुदा न चाहा तो मय ब्याज क बदला लूँगा। मरे मालिक हैज़ाज न कृपा करके मुझ यह अवसर दिया है। हर पड़ाव पर पहुँचत ही उनके उपदेश मिलते हैं। जानते हो उन्होंने मुझे इस पड़ाव पर आत ही क्या नसीहतें भेजी हैं?

अबुल—क्या महाशय?

मुहम्मद—उन्होंन कहा है कि छ हजार ऊँटों के अतिरिक्त तीन हज़ार ऊँट तुम्हारे पास और भेजे जा रह हैं जिनमें सारा सामान रहगा। हर चार घुड़सवारों का सामान एक ऊँट पर लादा जाय। मैदान म डेरा डालन। खुदा से डरना। धीरज सब से बड़ा भूषण है। लड़ाई के समय अपनी सेना के विभाग कर लेना। शत्रु पर चारों तरफ़ स हमला करना। छ दर्ज़ी भी सामान तैयार करने के लिये भेजे हैं। मकरान से मुहम्मद हारून को अपन साथ ले लेना।

अबुल—मेरे मालिक इस बार आप जरूर जीतेंगे। हमारे अरबी ज्योतिषियों ने सितारों की चाल देख कर कहा था कि इस बार फ़तह ज़रूरी है।

मुहम्मद—फ़तह फ़तह ऐसी कि एक भी शत्रु को जीता न छोड़ूँगा। आग सी बरसेगी। एक तरफ़ तलवार होगी और दूसरी तरफ़ होगी खलीफा की आज्ञा। या इधर या उधर।

(दरबान का प्रवेश)

दरबान—हुजूर मकरान के सेनापति श्रीमान् मुहम्मद हारून आ रहे हैं।

मुहम्मद—आने दो (आगे आकर हारून का स्वागत करता है।) आइये महाशय आदाब अर्ज़।

हारून—(लपक कर) मेरे बहादुर सेनापति तसलीम।

(दोनों एक दूसरे से लिपट जाते हैं।)

मुहम्मद—सुनाओ सरदार तैयार हो न ?

हारून—तैयार ? क्या इसमें भी कोई शक है ? मेरी चार हज़ार फौज भी तैयार है। इस बार दुश्मनों को आटे दाल का भाव मालूम होगा। शत्रु के सब साहस मेरे विजय के समुद्र में विलीन हो जायगे।

मुहम्मद—खुदा ने चाहा।

हारून—खुदा ने चाहा है तभी तो तुम्हारे जैसे वीर बहादुर जगजू को उसन काफ़िरा पर हमला करन भेजा है।

मुहम्मद—अभी मैं अपना सेना की क़वायद देखना चाहता हूँ अच्छा हो आपकी सेना भी वहीं आ जाय।

हारून—जो हुक्म। अब्दुर्रहमान अपना सारी सेना को बुलाओ।

अब्दुर्रहमान—जो हुक्म (जाता है।)

हारून—जनाब अगर मजूर हो तो आज रात को मेरे यहाँ ही मुजरा देखा जाय शराब उड़े ?

मुहम्मद—मुजरा भाई हारून क्या कहते हो ? क्या यह मुजरा देखने और शराब पीने का समय है ? मेरे दिल म देश प्रेम की नदी लहरा रही है शत्रु का ध्यान आते ही गुस्से से आँत फटी पड़ रही हैं। और तुम्हें मुजरा और शराब सूझी है। नहीं भाई हारून इस काम का यह अवसर नहीं है । अब तो बहादुरी के राग गाओ। अरबियों की पुरानी लड़ाइयों के जिक्र सुनाओ। जसे उस रोज हरा में आयशा के नौकर के नाद से ससार काँप उठा था आज उसी की कृपा से सिन्ध काँप उठेगा। जल और थल खलीफ़ा के आकार और प्रकार के बन कर सिन्ध में एक नया जीवन डाल देंगे। आज हमारे ऊपर दुश्मनों ने जो अत्याचार किये

है। उनका बदला लेने के लिये हर एक बहादुर सिपाही को लड़ने मरने और कटने के लिये तैयार कर दो। तुम्हें मालूम है हज़रत खलीफ़ा ने शराब की मनाही कर दी है।

हारून—मेरे बहादुर सिपहसालार यह सिर्फ मैंने तुम्हारे मन का भाव जानने के लिये कह दिया था। तुम वाक़ई बड़े बहादुर हो। आज तुम इस इम्तहान में पास हुए। हैजाज़ ने सिर्फ तुम्हारी परीक्षा के लिये यह सन्देश भेजा था। उसी के मुताबिक़ मैंने तुमसे कहा था। लेकिन अब मुझे पूर्ण विश्वास है तुम विजयी होगे।

मुहम्मद—हारून बहादुरी और ऐश ये दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं। ऐश करने वालों ने कभी राज्य नहीं किया। जिस फ़ौज में ऐय्याशी घुस गई वह कभी अपनी हुकूमत ठीक ठीक नहीं रख सकती। तुम्हें मालूम है पहले अरबी लोग शराब औरत और आपस की लड़ाई में तबाह हो गये। ने भाई अब हम लोगों का निशाना दूसरा है। हारून मुहम्मद अब भारत को खलीफा का राज्य बना कर ही लौटेगा या वहीं इसकी क़ब्र बनेगा।

हारून—बेशक बेशक। चलिये समय हो गया।

मुहम्मद—हाँ चलो (सब जाते हैं।)

पटपरिवर्तन

छठा दृश्य

(दो अरबी सैनिक मकरान के पड़ाव में बातें कर रहे हैं।)

अनफ़—(मज़ाक में) रशीद ओ रशीद ! अबे रशीद के बच्चे ज़रा इधर सुन।

रशीद—चुप बे उल्लू। ज़रा भी आराम नहीं करने देता।

अनफ़—अबे अब आराम करने का मौक़ा है या लड़ने का? देख सिपहसालार हम लोगों की क़वायद देखना चाहते हैं। चल चलें।

रशीद—यहाँ तो चलते चलते थक कर चूर हो गये तुझे क़वायद की पड़ी है?

अनफ़—अबे सुन (नगाड़े की आवाज़ की तरफ़ इशारा करके) सुन यह क्या हो रहा है?

रशीद—अब चाहे नगाड़ा बजे या कुछ मुझ से तो अब क़वायद हो न सकेगी भाई !

अनफ़—क़वायद न हो सकेगी ! तो यहा क्या सिर मुँड़ाने आया था?

रशीद—अबे ! आज बीस रोज़ से बराबर चलते आ रहे हैं पिण्डलियाँ बैठी आ रही हैं धूप के मारे चाँद के बाल

उड़ जा रहे हैं होठों पर पपड़ियाँ पड़ गई हैं और सेनापति को क़वायद की सूझी है।

अनफ़—तुझे मालूम है जब हज्जाज़ ने स्याम से फ़ौजें बुलाई थीं और उनमें हरएक रंगरूट से लड़ने की तैयारी की बाबत पूछा तो उनमें से एक फ़ौजी ने हैजाज़ से क्या कहा था?

रशीद—हाँ क्या कहा था?

अनफ़—उसने कहा कि मैं इस लड़ाई में नहीं जाना चाहता मेरे बीबी बच्चे छोटे हैं।

रशीद—क्या खूब बीबी छोटी और बच्चे भी छोटे!

अनफ़—उसका मतलब शायद बच्चों से था बीबी से नहीं।

रशीद—अच्छा फिर हैजाज़ ने क्या जवाब दिया?

अनफ़—उसने चिल्ला कर कहा दूर हो पाजी! यहाँ से अपना मुँह काला कर जा!

रशीद—फिर क्या हुआ?

अनफ़—जैसे ही वह हैजाज़ के सामने से हटा वैसे ही एक फ़ौजी ने इस बेहूदगी पर उस का सिर काट डाला।

रशीद—अरे बाप रे! इतना ग़ज़ब!

अनफ़—सो मियाँ नूँनच न करना नहीं तो वही हाल होगा।

रशीद—अबे हम यहाँ लड़ने के लिये लाया गया है मरने तो हम यहाँ नहीं आये! जब तबियत ठीक होगी दिल में चैन होगा तभी तो लड़ा जायगा?

अनफ़—अरे भाले भाई लड़ाई में तबियत का क्या सवाल? वहाँ तो एक खंजर इधर और एक खंजर उधर। और कहीं दुश्मन ने इधर खंजर रसीद कर दिया तो बेड़ा पार।

रशीद—सचमुच?

अनफ़—इसमें भी कुछ शक है?

रशीद—भाई मैंने तो सुना था कि लड़ाई में खूबसूरत औरत और माल मिलता है मैं तो इसी लिये आया हूँ।

अनफ़—ठीक है औरतें भी और माल भी पर लड़ाई के बाद।

रशीद—तो क्या कोई तरीक़ा ऐसा नहीं है कि आते ही मिल जाय अगर ऐसा हो सके तो मैं उसी वक़्त छिप कर लौट पड़ूँ। (नगाड़े की आवाज़ फिर सुनाई देती है)।

अनफ़- पहले क़वायद तो करो। फिर औरतों की बातें करना।

रशीद—हाँ चलो क़वायद ता करनी ही होगी। यह क़वायद भी कैसी बुरी बला है। भला क़वायद में होगा क्या ?

अनफ़—जमा जमा कर क़दम रखने होंगे बिगुल के साथ चलना होगा दौड़ धूप खंजरों की चमक तलवारें कभी ऊपर कभी नीचे।

रशीद—या ख़ुदा तब तो औरत लाने में पहले दिक़्क़तों का सामना ही है।

अनफ़—दिक़्क़तों का क्या मौत का सामना है चलो।

(दोनों जाते हैं।)

पटपरिवर्तन

सातवाँ दृश्य

(महाराज दाहर युद्धगृह में बैठे मन्त्रणा कर रहे हैं । युवराज जयशाह मन्त्री सुपाकर वीर मानू आदि कई अन्य विश्वस्त कर्मचारी बैठे हैं ।)

दाहर—तो क्या जयशाह तुम्हें अलाफी पर सन्देह है ?

जयशाह—पृथ्वीनाथ सन्देह ! मैं जानता हूँ उस दिन इतनी प्रतिज्ञा करने पर भी अलाफी अवसर पर हमारा साथ न देगा । कहीं उसके कारण हमें हाहाकारमय पराजय का मुँह न देखना पड़े ।

दाहर—परन्तु मैं तो उसके मुख पर छल अथवा सन्देह का कोई चिन्ह नहीं देखता ।

सुपाकर—संसार में विश्वासघात के भाव इतने गूढ़ और गुप्त हैं कि उनको जानना मानव शक्ति से बाहर है । आँधी के आसार घुमस से ही जाने जाते हैं । मुझे सन्देह है कदाचित् उसका आपकी शरण में आना भी लक्ष्य रहित नहीं है ।

मानू—सम्भव है ।

दाहर—अच्छा तो बुला कर उसके भावों का तारतम्य क्यों न मालूम कर लिया जाय?

युवराज—जैसी पिता जी की इच्छा किन्तु मैं सर्प पर कभी विश्वास नहीं कर सकता।

दाहर—मन्त्रिन्! अलाफ़ी का बुलाओ।

मन्त्री—जो आज्ञा। (बाहर जाता है।)

युवराज—महाराज लगभग तीस हज़ार सैन्य सगठन हो चुका है प्रत्येक नगर में युद्धसामग्री प्रस्तुत है इतना होते हुए भी यदि कुछ और सैन्यसग्रह हो जाय तो अच्छा है।

दाहर—हाँ युवराज तीस हज़ार सना क अतिरिक्त प्रति दिन लगभग एक सहस्र सेना और प्रस्तुत की जा रही है। सूर्य की अध्यक्षता में यह कार्य हो रहा है।

मानू—पृथ्वीनाथ! शिवस्थान का सामन्त वत्सराज युवराज और मेरी सना यदि शत्रु से आगे बढ़ कर युद्ध करे तो कैसा?

दाहर—नहीं मानू मैं देवल से बाहर तुम्हें नहीं जाने देना चाहता। वत्सराज और रसिल युवराज के साथ होंग। मोक्षवासव ने उस दिन आकर मुझ से क्षमा याचना की थी। मैंने उसे क्षमा कर दिया है किन्तु मैं बिना अधिक आवश्यकता के उसे युद्ध में न जाने दूँगा वह मेरे पास रहेगा। और यदि कहीं ज्योतिषियों ने मेरी यात्रा का परामर्श दिया

होता। किन्तु नहीं वारो में आवश्यकता पड़त ही प्रस्थान करूंगा।

(अलाफ़ी का प्रवेश।)

अलाफी—सिन्धनरश की जय हो। मुझे क्या आज्ञा है?

दाहर—अलाफ़ी कतव्य की क्रूर परिस्थिति से प्रभावित होकर मनुष्य शत्रु और मित्र को एक सा देखता है। उसी के उपागा में एक व्यवस्था यह भी ह कि शासक शत्रु और मित्र को पहचाने।

अलाफ़ी—महाराज परिस्थितियाँ ही विचारों में तार तम्य और उनकी उत्पत्ति और विनाश का कारण हैं।

युवराज—अलाफ़ी देश प्रेम के स्वार्थ में आहुति देने वाले पक्षी भी कभी कभी उसी वृक्ष का विनाश करने के लिए कटिबद्ध होत देखे गय हैं जिसने उनकी रक्षा की है।

अलाफ़ी—एसे समय उनका कतव्य है कि मुख्य कर्तव्य की साधना में गौण का नाश कर दें।

दाहर—यदि पालक पर शरणागत के बान्धव आक्रमण करें तो शरणागत का उस अवस्था में क्या कर्तव्य होता है अलाफ़ी!

अलाफ़ी—परिस्थितियाँ और कर्तव्य जो कहें वही तो महाराज!

युवराज—उस अवस्था में प्रतिपालक का क्या यह कर्तव्य नहीं है कि शरणागत पर ध्यान रखे।

अलाफ़ी—युवराज आज एक मास स मैं इसी पर विचार कर रहा हूँ कि तु मैं अभी तक किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका।

दाहर—तुम एसी परिस्थिति में किस कतव्य का पालन करोगे आर्यशास्त्र और आर्य गौरव सर्वस्व लुटा कर भी शरणागत की रक्षा का उपदेश देता है।

अलाफ़ी—महाराज आप श य हैं आप का शास्त्र भी महान् है कि तु छल और कूट युग में ।

मन्त्री—उस शास्त्र की व्यवस्था केवल वैसे ही यक्तियों के लिये है महाराज परिस्थिति शास्त्र की स्थिति का सब से बड़ा तर्क है?

अलाफ़ी—मैं ने आप की दया और कृपा क पावन उपदेशों से यह सार ग्रहण किया है कि मैं देश और जाति के सम्मुख विश्वासघात न कर के प्रतिपालक के प्रति अपनी असमर्थता प्रकट करत हुए देश छोड़ दूँ।

युवराज—तुम्हार आने स पूर्व मरा इस सम्बन्ध में यही निश्चय था।

दाहर—कर्तव्य की प्रेरणा से बाध्य हो कर मैं तुम्हें

आज्ञा देता हूँ कि तुम मेरा प्रा त छोड़ कर शीघ्र ही चले जाओ।

अलाफ़ी—मैं इस कृपा का बहुत आभारी हूँ। मैं न आप के राज्य में बहुत सुख पाय हैं इस लिये यह अलाफ़ी आपका चिरऋणी है।

(प्रणाम कर के जाता है।)

जयशाह- फिर न चुभने के डर से यदि काँटे को समूल भस्म कर दिया जाय तो वह कभी कष्ट नहीं देता।

दाहर—अभय प्राप्त मनुष्य के प्रति जो व्यवहार शास्त्र ने बताया है वही मैं ने किया है युवराज ! मैंने जिसे एक बार अभय कह दिया वह सदा अवध्य है।

सब—धन्य हो महाराज जय हो सि"ध नरेश की।

जयशाह—(भानू से इशारा करता है भानू महाराज की आज्ञा लेकर बाहर चला जाता है।) (बाहर से) पिता जी मेरा विचार है शत्रु देवल पर ही प्रथम आक्रमण करेगा यदि आप उस समय युद्ध को देखने के लिये देवल में रहें तो—

राजज्योतिषी—नहीं युवराज महाराज का अलोर न छोड़ना ही श्रेयस्कर है।

दाहर—(सोच कर) ज्योतिषी जी आप ने बड़ी बुरी व्यवस्था दी है देश में इस समय आग लग रही है शत्रु

अकाल जलद के समान प्रतिक्षण बढ़ता आ रहा है। जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। हा यदि कहीं आज मुझे इन शास्त्रों की शृंखलाओं में न बँधना पड़ा होता! (गर्व से) तो मैं अकेला शत्रु का मान भंजन कर देता। दाहर आज उनका पूर्ण संहार करता।

मंत्री—क्या कोई व्यवस्था नहीं है महाराज?

ज्योतिषी—महाराज के ग्रह बड़े उग्र हैं शुक्र इस समय पृष्ठ दश में है ऐसी अवस्था में प्रस्थान अशुभ और भयंकर है।

दाहर—(बेचैनी से) हा! इस समय मेरी अवस्था साँप और छछूँदर जैसी हो रही है। क्या करूँ। यदि कोई और बंधन होता तो (क्रोध से) एक झटके में तोड़ कर फेंक देता। शत्रुओं को आर्य वीरता के देशप्रेम के जातीयता की रक्षा के उपयुक्त उचित और सुसंगत पाठ पढ़ाता। अपने बाणों से शत्रु को छिन्नभिन्न कर देता। आः! विवश हूँ। (टहलने लग जाते हैं। युवराज से) बेटा तुम्हारे बल बूते पर ही युद्ध का भविष्य है। जाओ वीर वर के प्रचण्ड निर्घोष से शत्रु को भूमिशायी कर दो।

युवराज—जो आज्ञा (सब जाते हैं।)

पटपरिवर्तन

आठवाँ दृश्य

(ज्ञानबुद्ध और ज्योतिषी की बातचीत)

ज्ञान—ज्योतिषी जी आप ने मेरा बड़ा उपकार किया। मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। लीजिये आपके काम का यह उपहार। (रत्नों का हार देता है)

ज्योतिषी—ज्ञानबुद्ध जी! आप ही नहीं समग्र ब्राह्मण जाति इस समय राजा दाहर के विरुद्ध है। हम इसका उपाय सोच ही रहे थे कि आपने उचित परामर्श देकर दाहर के नाश की व्यवस्था कर दी।

ज्ञान—मैं जानता हूँ अकेला दाहर समस्त अरबियों का नाश कर सकता है यदि वह युद्ध के लिए आ जाता तो हम लोगों और अरबियों की एक न चलती।

ज्योतिषी—ठीक है ज्ञानबुद्ध जी ! किन्तु अरबियों के इस प्रान्त को ले लेने पर मुझे क्या मिलेगा ?

ज्ञान—प्रभूत सम्पत्ति अतुल धन और राजज्योतिषी का वंशज पद। पर याद रखना महाराज युद्ध के लिये प्रस्तुत न होने पाय नहीं तो सब गुड़ गोबर हो रहेगा।

ज्योतिषी—नहीं कभी नहीं। अच्छा आज्ञा दीजिये। (जाता है)

ज्ञान—सब सामग्री प्रस्तुत है आग लग जाने भर की देर है। दाहर का सब कुछ भस्म हो जायगा। मोक्षवासव को भी मैं ने बहका ही दिया है। अवसर पाते ही मैं अरबियों को पृष्ठद्वार से बुलाकर जयशाह मानू और रसिल का नाश कराऊँगा। अहा! वह कैसा शुभ दिन होगा जब अलोर और देवल का मैं एकच्छत्र राजा बनूगा। उस स्वप्न की अनुभूति मुझे कितना सुख देती है। राज्य के वैभव को याद करके मेरा हृदय बाँसियों उछल रहा है। खुशी से गाता है:—

इस स्वप्न सुख भवन में मन मत्त हो उठा है
निस्तब्धता में जग की आनन्द सो उठा है
मेरी हृदय विपञ्ची झनकार कर रही है
आशावरी सुनाती आलाप की छटा है
मुसका रहा है सूरज संकेत कर विजय का
जीवन की निर्झरी में मद-मोद आ डटा है
कोकिल की कूक में है उल्लास की मधुरिमा
मेरी तरफ़ निरखती रिपु पर चढ़ी घटा है

सुन्दर समीर चलकर सौरभ मचल मचल कर
मम भाग्य गन्ध कण को देते निठुर हटा हैं
विद्रोह से विजय पा अठखेलियाँ करूँगा
मन मुग्ध हो रहा है अब भाग्य आ सटा है

पटाक्षेप

नवाँ दृश्य

(युवराज जयशाह देवल के बाहर शिविर में)

जयशाह—सब कुछ प्रस्तुत है। विस्फोट म चिनगारी की आवश्यकता है। आज विलास की चिता में वीरत्व की अग्नि जला कर शत्रु को भस्म कर डालूँगा। (सोच कर) अलाफ़ी तुम बड़े धूर्त निकले। पर मैं न भी तुम्हारी यथार्थ व्यवस्था कर दी है। तुम्हारा पूर्ण रूप से सत्कार कर दिया है। अब अलोर के दुर्ग म अपराधा की भाँति तुम्हें पड़ा रहना होगा। पर मुझे ज्ञानबुद्ध से बड़ा डर है। (सोच कर) नहीं उसके पास अब कुछ भी नहीं है वह कर ही क्या सकता है। राज्योतिषी गुप्तचर के रूप में उस के पास है ही।

(मानू का प्रवेश)

मानू—जय हो युवराज की

जयशाह—आओ भाई सुनाओ शत्रु का क्या समाचार है?

मानू—युवराज चरों से ज्ञात हुआ है कि शत्रु आया ही चाहता है। सुना है बड़ी विशाल सेना है।

जयशाह—इस बार युद्ध का अन्त है। या तो सिन्ध पर महाराज का शासन होगा अथवा विनाश की क्रूर ज्वालाओं में प्रान्त की आहुति होगी। तुम्हारे वीरों का क्या हाल है ? भानू जिस प्रकार डाकू जीवन में तुमने नृशसता निर्दयता क्रूरता कठोरता के नियमों की जो डाकू जीवन के अग हैं रक्षा की है आज उसी दस्युता के सहारे रुधिरसनी पुष्करिणी के सरोज बन कर अपनी वीरता और शौर्य के मकरन्द से समस्त सिन्ध रूप भ्रमर को चचल कर दो भानू ?

भानू—युवराज निश्चिन्त रहिये। ससार में जितनी क्षमता है मनुष्यत्व में जितना विश्वास है उसको समग्ररूप से एकत्रित कर के मैं कह सकता हूँ कि मेरे रहते शत्रु के जीवन की झाँई सिन्ध पर न पड़ने पावेगी। जन्तु जगत् में जिस प्रकार शेर का पजा जिराफ़ का खुर और ह्वेल की दुम है इसी प्रकार इन तीन भयकर अगों क समान जो प्रकृति ने अपनी उग्रता से सृजन किये हैं मैं भी मनुष्य सृष्टि की उग्रता को लेकर विजय की खोज करूँगा।

जयशाह—ठीक है मुझे तुमसे ऐसी ही आशा है। सेना की क्या अवस्था है ?

भानू—युवराज मेरी सेना प्रस्तुत है आज्ञा की देर है।

(दूत का प्रवेश)

दूत—सेनापति शत्रु आगया है उसकी सेना ने यहाँ दस कोस पर छावनी डाली है।

युवराज—भानू हमें आगे बढ़ कर शत्रु से मोर्चा लेना चाहिये।

भानू—ठीक है। (दोनों का प्रस्थान)

पटाक्षेप

दसवाँ दृश्य

(एक गाँव में सूर्य और परमाल देवी गाँव के लोगों को एकत्र करके उत्साहित कर रही हैं।)

सभा में से एक आदमी—तुम्हारा उपदेश सही है पर अभी उस दिन ज्ञानबुद्ध के आदमियों ने तो हम से कहा था कि युद्ध में कोई न जाय।

सूर्य—हैं! (आश्चर्य से) ज्ञानबुद्ध देश का कृतघ्न कीड़ा है। उसने महाराज के साथ विश्वासघात करके देवल शत्रुओं के हाथों सौंप दिया है। क्या तुम लोग ऐसे पापी की बातें सुनोगे?

पर—बहन क्या दुष्ट ज्ञानबुद्ध ने यहाँ तक कृतघ्नता की है?

सूर्य—(परमाल की बात अनसुनी करके) तुम्हारे देश पर विपत्ति आई है। एक विदेशी तुम पर आक्रमण करने आ रहा है। जिसके वृक्षों की छाया में तुमने विश्राम किया है जिस देश का तुमने अन्न खाया है जिस माता की गोद में तुम इतने बड़े हुए हो क्या उसके लिये जान लड़ा देना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है?

एक—हम लड़ेंगे और सिंध के लिये सर्वस्व न्योछावर कर देंगे।

दूसरा—ह तो ठीक पर हमतो राजा होने से रहे। महाराज दाहर राजा रहें तो भी हम प्रजा ही रहेंगे यदि कोई दूसरा राजा होगा तब भी हम प्रजा ही रहेंगे।

तीसरा—अरे मूर्ख प्रजा की रक्षा करना जैसे राजा का धर्म है ठीक उसी प्रकार आपत्ति में राजा की रक्षा करना भी प्रजा का धर्म है।

सूर्य—यह राजा की रक्षा का प्रश्न नहीं है। राजा तुम से अपनी रक्षा नहीं चाहता। वह तुम्हारे देश से शत्रुओं को भगाना चाहता है जो तुम्हारे धर्म पर तुम्हारे आचार पर तुम्हारे गौरव पर तुम्हारी प्राचीनता पर हाथ फेरना चाहता है। शत्रुओं ने मकरान के मन्दिर तोड़ डाले विहार छिन्नभिन्न कर दिये; शहर लूट लिया स्त्रियों बच्चों और पुरुषों को पकड़ पकड़ कर मार डाला क्या यहाँ भी तुम्हें ये बातें स्वीकार हैं?

सब—नहीं कभी नहीं हम लोग सिन्ध की चप्पा चप्पा भूमि के लिये मन्दिर की एक एक ईंट के लिये विहार की एक एक पुस्तक के लिये आर्यगौरव की एक एक कहानी के लिये

मर मिटेंगे। माता जी हम सब युद्ध के लिये तैयार हैं। आज्ञा दीजिये।

स्त्रियाँ—हमें भी आज्ञा दीजिये कि हम अपने पति भाइयों और बच्चों के साथ युद्ध में भाग ले सकें।

सूर्य—(पुरुषों से) तुम लोग यदि मरने को तैयार हो तो अभी अलोर जाकर महाराज की सेना में भर्ती हो जाओ। (स्त्रियों से) तुम परमाल की अध्यक्षता में युद्ध में घायल सिपाहियों की सेवा करो और देश का मुख उज्ज्वल करो।

सब—जय हो महाराज दाहर की जय सिंध देश की।

(जोश में जाते हैं।)

पटाक्षेप

———

चौथा अक

पहला दृश्य

(युद्धवेश में महाराज दाहर दुर्गद्वार के शिखर पर उद्विग्नता से टहल रहे हैं मन्त्री मोक्षवासव आदि कुछ कर्मचारी पास खड़े हैं ।)

दाहर—अभी रणपरिणाम का कोई स देश नहीं मिला मन्त्रीजी देखा कोई आया ?

मन्त्री—(आगे बढ़ कर देखता है फिर लौट कर) नहा महाराज कोई नहीं आया ?

दाहर—(उद्विग्नता से तूणीर चटचटाने लगता है) अब भी कोई नहीं क्या ? इतनी देर आज प्रात काल स प्रतीक्षा के वक्षःस्थल पर बैठा हुआ आशा निराशा के टाँके तोड़ रहा हूँ । मेरी हथिनी चिंघाड़ कर युद्ध के लिये उतावली हो रहा है । मेरी सना रणो माद का मद पीकर विकट ध्वनि कर रही है । मोक्षवासव कहाँ ह ?

मोक्ष—आज्ञा पृथ्वीनाथ !

दाहर—भाई अब मुझ से नहीं रहा जाता । अब देर न करो । मैं स्वय आकर युद्ध करूँगा । प्रस्थान करो । इस समय मुझे कुछ नहीं दीखता । युद्ध युद्ध बस यही एक मेरी गति है ।

(दूत का प्रवेश)

दूत—महाराज रक्षा कीजिये शत्रु ने देवल पर आक्रमण कर दिया सब कुछ नाश होगया।

सुधाकर—हे प्रभो!

दाहर—कैसे! कैसे! शीघ्र कहो।

दूत—युवराज भानू और वंसराज ने दिन भर युद्ध कर बाद शत्रु को परास्त कर दिया था। रात्रि के समय दोनों ओर से युद्ध स्थगित कर दिया। सब लोग लौट आये थे किन्तु आधी रात के समय देवल के मार्ग से एकदम भयंकर नाद सुनाई दिया। उसी अन्धकार में घोर युद्ध हुआ। चारों ओर शत्रु ही शत्रु थे। इस युद्ध में वंसराज देवगति को प्राप्त हुए।

दाहर—हा वंसराज!

दूत—पीछे से ज्ञात हुआ कि ज्ञानबुद्ध ने दक्षिण द्वार से अरबियों को भीतर बुला लिया। भानू की सेना ने डट कर लड़ाई की। इस समय देवल पर शत्रु का राज्य है।

दाहर—विश्वासघात मनुष्यता के मुख पर कलंक लगाने वाला विश्वासघात! मन्त्री युद्ध की यात्रा करो।

(एक और दूत का प्रवेश)

दूत—जय हो महाराज की शत्रु अलोर की ओर

बढ़ रहा है । मुहम्मद बिन कासिम ने ज्ञानबुद्ध को क़ैद कर लिया है। सुना है शत्रुओं ने नगर के मन्दिर विहार और संघाराम तोड़ दिये हैं।

दाहर—इतना काण्ड हो गया (क्रोध से) जाओ मैं स्वयं युद्ध के लिए प्रस्थान करूँगा। आज क्षत्रियत्व के विकास द्वारा धनुर्दण्ड की टंकार द्वारा पराक्रम के प्रकाण्ड ताण्डव द्वारा अरबियों को नए शासन नए विधान और नई युद्ध कला का पाठ पढ़ाऊँगा। कृतघ्नता के क्रूर अग्निकुण्ड में नर रक्त रंजित विभीषणों की आहुति दूँगा अथवा स्वयं मृतप्राय मातृभूमि के वक्ष स्थल पर गिर कर स्वर्गलाभ करूँगा। मन्त्री प्रासाद की स्त्रियों को युद्ध और मृत्यु के लिये तैयार होने की सूचना दे दो।

मन्त्री—जो आज्ञा। (जाता है)

मोक्ष—महाराज यातिथियों ने आपका नगर त्याग निषेध कर दिया है।

दाहर—सब कुछ नाश होने पर निज शुभ की आशा करना मूर्खता है। देश की विनाशिनी घड़ियों में व्यक्तित्व की रक्षा नहीं हो सकती मोक्षवासव! अब मैं जाऊँगा। मेरा जाना आवश्यक है हा कदाचित् इस समय से पूर्व ही । ? (प्रस्थान करते हैं।)

पटाक्षेप

दूसरा दृश्य

(युवराज जयशाह निरुपा के बन में क्षतविक्षत अवस्था में ।)

दुख से अधीर हो कर—

गीतों में स्वर भंग हृदय में भय किस ने भर डाला
अन्धभक्ति में द्रोह राग में निर्विषयों की ज्वाला
वीर भाव में क्लैव्य प्रेम में अनबन कैसी आई
विश्वासों में वञ्चकता ने छल काई फैलाई
घोल क्षार सागर में किस ने उसका मद मथडाला
स्वतन्त्रता में पारतन्त्र्य विष घोला कुत्सित काला
राजनीति में क्यों उठ उस ने क्रांति थपेड़ लगाई
निर्मल पुष्करिणी में हे विधि क्यों पैदा की काई
सिन्धहृदय को हे निर्दय क्यों रह रह पीस रहा है
सब कुछ छिपा नाश की तह में दुख क्यों टीस रहा है ?

सर्वस्व स्वाहा हो गया। विनाश ध्वंस प्रलय के अकाण्ड अट्टहास में निराशा के वह्निकुण्ड में विश्वासघात के कुत्सित चक्र में हिन्दुत्व का हृदय बौद्धधर्म की शान्ति आर्य इतिहास का गुरुत्व धर्मशास्त्रों की महत्ता प्राचीनता सु

संस्कृति की सुरभि सदा के लिये विलीन हो गई। स्वतन्त्र रूप से विचरण करनेवाले निरीह पक्षियों के घोसलों में विधाता ने विद्रोह की वह्नि बिखर कर आग लगा दी। हा! पिता जी सिन्ध के तट पर युद्ध में मारे गये। मोक्ष वासव (दाँत पीस कर) उस नीच नराधम कृतघ्न मोक्षवासव ने बेन के मार्ग से बेड़ा द्वारा शत्रुओं को बुला लिया। युद्ध स्थल में पूर्व ही से विस्फोटक पदार्थ बिछवा दिया गया था। उसी नीच ने अवसर पा कर उस में भी आग लगा दी। महाराज तथा अन्य सैनिकों के हाथी और अश्व इस अकाण्ड अग्नि विस्फोट से बिगड़ खड़े हुए। पिताजी की हथिनी बहुत रोक थाम करने पर भी उन्हें सिन्ध में ले गिरी। मोक्षवासव ने नीच मल्लाहों की सहायता से अरबी सेनापति को बुला लिया। तट घेर लिया गया। और अन्त में वही हुआ। हा पिता जी का सिर । रूपाकर भी पकड़ लिया गया। हा विद्रोही वृत्ति ने निज जीवन से विद्रोह क्यों न किया! मैं अब मैं भी सेना हीन सहायता हीन हो गया हूँ। शत्रुओं ने सब प्रदेश पर अधिकार कर लिया।

(घावों की पीड़ा से कराह कर मूर्छित हो जाते हैं फिर होश में आकर और सामने की ओर देख कर) हैं! कौन है जो इधर दौड़ा आ रहा है? (देखते देखते वह आदमी पास आ जाता है) अहा मानू तुम कैसे? कहो भाई—

मानू—(हाँपता हुआ) युवराज कुछ न पूछिये सब कुछ नाश हो गया। दवल के युद्ध में मैं घायल हो गया था यह तो आपको ज्ञात ही है।

जयशाह—हाँ ज्ञानबुद्ध की करतूतों से हमारा नाश । तुम्हारी और वत्सराज की अवस्था सुन कर मैं लड़ते लड़ते उस ओर बढ़ा पर शत्रु का असंख्य सेना के सामने मेरी सब सेना कट गई। मेरा और मुहम्मद कासिम का घोर युद्ध हुआ। मैं ने उसका घोड़ा मार डाला था वह निराश था कि इसी बीच में सहस्रों लोग मेरे ऊपर टूट पड़े। मैं घायल हो गया। शत्रु आगे बढ़ा। अन्त में पिता जी के साथ युद्ध हुआ और उनका जो अन्त हुआ वह तुम्हें ज्ञात ही है मानू!

मानू—हा युवराज महाराज की मृत्यु के बाद शत्रु ने अलोर पर आक्रमण किया। अलोर में आपकी माता लाड़ी ने शत्रु का सामना किया। और अन्त में वे भी अन्य वीर राजपूत स्त्रियों के साथ जल कर वहीं भस्म हो गईं।

जयशाह—हा माताजी ने वीर गति प्राप्त की। (मूर्च्छित हो जाते हैं फिर संज्ञा प्राप्त कर के) हा माता तुमने आर्य ललनाओं की तरह जीवनोत्सर्ग किया। तुम धन्य हो।

मानू—युवराज रसिल और मैंने मिल कर शत्रु को निरूण की ओर बढ़ने से रोका। सूर्य भी अपनी सेना

लिये हमार साथ थी। वाह सूर्य ने क्या वीरता दिखाई कि शत्रु क छक्क छूट गय। रसिल मारा गया। मैं भी घायल हो गया। पीड़ा क मार मुझ मूर्छा आ गई। चत होने पर मैंने देखा कि शत्रु ने निरुण छीन लिया है। एसी अवस्था म निस्सहाय होकर मैं आपकी खोज में इधर आया हूँ। सुना है सूर्य देव। पकड़ ली गई हैं।

जयशाह—सूय पकड़ ली गई है ? उन दुष्टों क हाथ में सूर्य पड़ गई मानू ? हा ! कृतान्त की काली दाढ़ों में कमल कुचला गया। हाय !

मानू—हाँ युवराज नगर भर में लूट खसोट हो रही है।

जयशाह—अब मैं अब मैं सना की सहायता के लिये काश्मीर नरेश के पास जा रहा हूँ। जीवन के अन्त तक शत्रु से युद्ध करूँगा।

मानू—सूर्य और परमाल का क्या होगा युवराज ?

जयशाह—भाई अब मुझे युवराज मत कहो अब मैं राह का भिखारी पथच्युत पथिक काचड़ का कण हूँ। सूर्य स्वय विज्ञ है वह शत्रु के पँजों में सीधी तरह न आयगी। हाँ परमाल भाली और दार्शनिक विचारों की भावप्रवण बालिका है किन्तु यह कुछ भी अब सोचने का अवसर नहीं है। मैं भरसक सिन्ध को शत्रुओं से उन्मुक्त करने

ी चष्टा करूँगा । यही मरे जीवन का ध्यय है ।

मानू—मैं आप का भुक्तभागी अनुचर हूँ मरे घाव भी तक ठीक नहीं हुए ह फिर भी मैं आपका साथ न ोड़ूँगा ।

जयशाह – क्या ही अच्छा हाता यदि मैं स्वर्गीय बावा े की प्रमाद में मीठी लगन वाली भूलों को गुणों बदलकर हिन्दुओं और बौद्धों की जीवन धारा में कता का रस बहा सकता । धम के समान देश ो भावनाओं का बलिदान की एक बहुत ऊची सीढ़ी ना सकता । आ मा की अपत्ता समाज और समाज क ामने देश के जीवन को उन्नत बनाने म सहायक हो सकता । ः नहीं वह एक खुमारी थी जा स्वप्न बनकर उड़ गई वह क राग था जो गूँज कर आकाश क किसी अन्तराल में जा ुपा वह एक दीपक था जो टिमटिमा कर आँखा से ोझल हो गया । अब अब क्या होगा ? कुछ नहीं । ीं नहीं अब समस्त भारत म घूम कर हम लोग जाओं से सहायता मागेंगे उन्ह शत्रुओं के अत्याचार की ती हुई कथा सुनाएँग । हि दू और बौद्धों में युद्ध का जीवन क देंगे । न होगा तो शत्रुओं के हाथा मर कर पच व प्राप्त ेंगे ।

प्रस्थान) पटपरिवर्तन

तीसरा दृश्य

स ध्या का समय

(हताहत सैनिकों क ढर में कुछ स्त्रिया)

एक सैनिक—हाय ! पानी क लिय जान छटपटा रही है। पानी पानी हाय !

एक स्त्री—(दूसरी स) दखो बहिन किस तरफ़ से आवाज आ रही है। कोइ सैनिक छटपटा रहा है।

दूसरी स्त्री—(यान से सुनकर) उस ओर है। बिचारा कोई पानी पानी चिल्ला रहा है।(आगे बढ़कर पास जाती है और उसके मुँह में पानी डालती है पानी पीकर सैनिक आखें खोल देता है दूसरी ओर से एक और आवाज़ आती है उसके पास जाकर)

पहली स्त्री—अरे यह तो अरबी है मैं अपने देश क शत्रु को पानी न दे सकूँगी। अरे नीच मैं तुझ पानी कदापि न दूँगी।

अरबी सैनिक—अरी माई खुदा के नाम पर एक बूद पानी दे दे।

पहली—इसी बूते पर मेरे देश पर अत्याचार करने

आया था ? तुझे पानी तो क्या (क्रोध म आकर एक लात मारती है सैनिक चीख़ता उठता ह उसी समय परमाल आती है ।)

पर—बहिन यह कौन है ?

पहली—यह शत्रुपक्ष का आदमी है । मैं इसे पानी नहीं दे सकता । इसके लिय सि ध की भूमि में पानी नहीं है ।

पर– ससार के सब प्राणी एक हैं बहिन मरते हुए आदमी को सब ससार एक है । इसे पानी दो ।

पहली—नहा बहिन शत्रु मित्र की पहचान ही तो दश की स्वतन्त्रता और परत त्रता की प्राप्ति का साधन है। आग और पानी का पहचान ही ता विवेक है ।

पर—अब हमारी इसके साथ काई शत्रुता नहीं है । मृत्यु शत्रुता मित्रता उदासानता क नाटक की यवनिका है । यह अदभाव और विनाश की जागृति है। इसे भी पानी दो। (स्वय जाकर उसके मुख में पानी डालती ह वह सैनिक आँख खोल उन्ह दुआ देता है परमाल उसको ढारस देकर दूसर घायलों की परिचर्या के लिए जाती है ।)

(कुछ अरब सैनिकों का प्रवेश)

एक—वह स्त्रिया इधर ही तो आई हैं ।

दूसरा—नहीं व यहाँ तो दीखती नहीं । (सैनिकों को देखते हुए आगे बढ़ते हैं वह घायल अरबी इशारे से उन्हें बुलाता है और व लोग पास जाते हैं ।)

घायल—किसे ढूँढत हो ?

खोजी—तुझे नहीं ढूँढते रे बता यहाँ कुछ औरतें आई थीं हम उन्हें पकड़ने आय हैं । (उस के मुँह पर पानी के छींटे देखकर) मालूम होता है तुझ किसी ने पानी पिलाया है। बता यह पानी पिलानवाला कौन था ?

घायल—(शक करके) तुम उन खुदा के बन्दों की बाबत क्यों पूछते हो ?

खोजी—(इकट्ठे होकर) हम उन्ह पकड़न आये हैं। बता वह औरतें किधर चली गई ?

घायल—तो मैं न बताऊँगा । आखिरी दम मैं उनके पह सान का नहीं भूल सकता ।

खोजी—इसे मालूम है अरे मूर्ख तू आखिरी दम अपनी जाति से विद्रोह न कर बता वे औरतें कहाँ चली गई ।

सैनिक—सभी खुदा के बन्द हैं । (कुछ सोच कर) क्या सचमुच हम एक नहीं हैं क्या यह लड़ाई ससार की आँखों में अधिक पानी बहाने के लिये नहीं है ! मैं भूला ! तुम भी भूले यह कैसी भूल ह? शायद दलीलें भी यहीं आकर भूली हैं।

खोजी अफ़सर—इस नालायक काफ़िर को यहीं क़त्ल कर दो । (सब उसे ठोकरों से मारते हैं वह सब सह कर भी अन्त को मर ज ता है । दूसरी ओर से कुछ सिन्धिया का परमाल को पकड़े हुए प्रवेश ।)

एक सिंधी—देखो परमाल को मैंने पकड़ा है यह बात तुम्हें माननी होगी।

दूसरा—वाह वे हम क्या यों ही रहे?

तीसरा—बताया तो मैंने ही था।

(परमाल बँधी हुई।)

पर—अरे नीचो राजकन्या को पकड़ कर शत्रु को सौंपते तुम्हें दया नहीं आती। ओ क्या यह भी देखना था!

सब—माल मिलेगा माल। सेनापति ने तुम्हारे पकड़ने का बड़ा पारितोषिक नियत किया है।

पर—तुम्हारे जैसों ने ही सिंध को पराधीन बनाया है। मनुष्य जैसे एक बार घातक क्षय का ग्रास बनकर उस से उन्मुक्त नहीं हो सकता इसी प्रकार देश द्रोह रूपी क्षय से देश नष्ट हुए बिना नहीं रह सकता। तुम लोगों ने सिंध को पराधीनता की बेड़ी में डाला है समझे?

एक सिंधी—अहा क्या अब भी राजा का प्रभुत्व स्वीकार करना होगा।

दूसरा—अब महाराज दाहर मर गये जिन्होंने हम उच्च वर्णस्थ क्षत्रियों की अवज्ञा की और जाटों को क्षत्रिय बनाया। चलो अब तुम्हारे भाग्य का निपटारा अरब पति के हाथों होगा। (वे जाते हैं।)

पटपरिवर्तन

चौथा दृश्य

रात का समय

(सेनापति मुहम्मदबिनकासिम अपनी छावनी म बैठा है ।)

कासिम—ओह सिन्धी बड़ ग़ज़ब क लड़न वाले हैं। मुझ यह बात तो अभी तक नहीं भूलती जब दाहर न सिन्ध नदी की दूसरी ओर स तीर मार कर मुझ घायल कर दिया था। यह तो कहो कि उस समय मरे सामने एक नहीं दो अरबी खड़ थे। उनके बदन को चीर कर वह तीर मरे आकर लगा। वरना मेरा तो खात्मा था। लेकिन खुदा क फज़ल स मने सिन्ध को जीत लिया है। बिच्छू का पेट अगर मुलायम न होता और कहीं डंक की तरह सारा बदन कड़ा होता तो उसे मारना बड़ा मुश्किल था। ठीक इसी तरह दगाबाज़ और फ़रेबी लोगों को बिच्छू का पट बना कर मैंने बड़ी आसानी से सिन्ध रूप बिच्छू के डंक को काटा है। ज्ञानबुद्ध मोक्षवासव जैसे आदमियों की मदद से मुझे यह जीत मिली है। (कुछ सोच कर) लेकिन जिन लोगों ने अपने मुल्क के साथ दगा की है वे हम परदेशी अरबियों के साथ नेकी का सलूक करेंगे यह नामुमकिन है। मैं उन पर कभी विश्वास नहीं कर सकता।

(कुछ सिपाहियों का प्रवेश)

(कासिम उनकी ओर देख कर) बताओ परमाल मिली या नहीं ?

सब—(सिर झुका कर चुप हो जाते हैं।) नहीं हुजूर।

कासिम—मैं कुछ नहीं सुनूगा मैं परमाल को चाहता हूँ। ज़मीन की तह स उसे ढूढ कर लाओ।

एक—हुजूर बहुत ढूँढा मगर वह न मिली।

कासिम—नहीं मिली। कहाँ गइ जाओ उसे ढूँढो बस अब एक परमाल ही बाक़ी है सूर्य तो पकड़ ली गई है। मैं काफ़िर दाहर का सिर सूरज और परमाल को खलीफ़ा के पास भेजना चाहता हूँ।

(दूसरी तरफ़ से कुछ सिन्धी लोग परमाल को पकड़े हुए दाखिल होते हैं।)

एक सिन्धी— हुजूर परमाल को पकड़ कर लाये हैं।

कासिम—(खुशी से उछल कर) शाबाश (परमाल को देखकर उसके रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है।) क्या यह राजा दाहर की बेटी परमाल है ?

सब—जी जनाब।

कासिम—(अपने आदमियों से) इसको क़ैद करो। (बाक़ी लोगों से) तुम लोगों को इसका काफ़ी इनाम मिलेगा।

एक—हुजूर इसे पकड़ा तो मैंने है। मुझे अधिक इनाम मिलना चाहिये।

दूसरा—नहीं हुजूर मैंने बताया था मुझे ज्यादा इनाम मिलना चाहिये।

कासिम—अच्छा जाओ तुम सबको काफ़ी इनाम दिया जायगा। (जाते हैं।)

कासिम—एक से एक बढ़कर हैं। गज़ब की खूबसूरती है। अगर सूरज सूरज है तो परमाल चाँद है। ओः (कुछ सोच कर) सूरज बड़ी तेज़ औरत है उसकी आखों से खूँखारी सख्ती टपकती है। भला उसकी लड़ाई क्या भूलने की बात है। अरुण की लड़ाई में उसने मेरे तो होश बिगाड़ दिये। अकेली औरत ने तमाम फ़ौज में तहलका मचा दिया। या खुदा ये हिन्दू औरतें भी गज़ब की होती हैं। और तो क्या अभी उसने मुझे कमीना डाकू कह कर पुकारा था। लेकिन परमाल बड़ी सीधी मालूम होती है। आ! कहीं ये नहीं यह खलीफ़ा का उपहार है। लेकिन यह क्या? मेरे इस सुनसान डेरे में हँसी की आवाज़ कहाँ से आ रही है? कौन हँस रहा है? (तलवार उठाकर) कौन है—हैं- यह तो दाहर की हँसी है- (घबरा कर) यह क्या चारों तरफ दाहर ही दाहर दिखाई दे रहे हैं। हर एक

कोन में दाहर की आवाज़ सुन रहा हूँ। हवा में दाहर की गंध है। याकूब याकूब। (कहता हुआ एक ओर गिर पड़ता है।)

याकूब— (अन्दर आ कर) हुज़ूर हुज़ूर हैं यह क्या हुआ? (सामने देख कर) अरे सिपहसालार साहब तो बेहोश पड़े हैं ? (उपचार करता है कासिम संज्ञा प्राप्त करता है।)

कासिम—हैं तू मुझ से क्या चाहता है!

याकूब—हुज़ूर यहां तो कोई भी नहीं है। आप क्या कह रहे हैं ?

कासिम—कोई भी नहीं ? क्या कोई भी नहीं था ? नहीं था! अभी दाहर का सिर हँस रहा था। मैं ने देखा मैं ने उस की हँसी सुनी। आफ़ कैसा भयंकर दृश्य था। क्या अब कुछ भी नहीं ?

याकूब—जनाब कुछ भी तो नहीं था!

कासिम—अच्छा तुम जाओ मैं सपना देख रहा था।

(याकूब बाहर जाता है कासिम बैठा उस दृश्य को सोचता है।)

पटाक्षेप

पाचवाँ दृश्य

प्रात काल का समय

(एक लश्कर के साथ सूर्य और परमाल अरब की यात्रा में। सूर्य क्रोध और प्रातहिंसा की मूर्ति बनी बैठी है परमाल अपने ध्यान में मग्न है।)

सूर्य—अग्नि के सहयोग से काष्ठ खण्ड की तरह आज सि ध रूप काष्ठ भा विद्रोहाग्नि क कणों स भस्म हा गया। अचानक ही प्रलय की एक धारा आई और एक वग के साथ उसे बहा ले गई। उत्कट प्रभजन के एक झोके से स्वतन्त्रता का कमल टूट कर मिट्टी में मिल गया। विद्रोह के स्फुलिङ्गों में परतन्त्रता का चित्र दिखाइ पड़ने लगा। विलास के साधना में उत्तेजना जिस प्रकार विनाश की ओर अग्रसर होती है ठीक इसा तरह विभीषणों की विलास कामना में सिन्ध का नाश हो गया आह!

पर—वायु वेग से प्रताडित नदा की धारा में जिस प्रकार बुलबुले उठते और लीन हा जाते हैं ऐसा ही ससार की रा यसम्पत्तियों का हाल है। उत्पत्ति और नाश इस ससार रूपी पात्र के किनारे हैं। विधाता के कालनद में हम सब एक ओर को बहे जा रहे हैं। देखना चाहिये कहाँ पहुँचते हैं?

सूर्य—(खीझ कर) बगदाद क राजा का विनोद करने

आर यवन साम्राज्य की समृद्धि करन और कहा ? बहन तुम्हार इस दार्शनिक ज्ञान की बलिहारी है। इतना सब कुछ हाते हुए भी तुम्हें कल्पना का भूत नहीं छाड़ता !

पर—ता क्या हम लाग बगदाद क राजा क पास ले जाई जा रही हैं बहन ?

सूर्य—(उसी मुद्रा से) क्या तुम्हें यह सब पस द है ?

पर—(साच कर) क्या यह भी देखना होगा ? (काल पर हाथ रख कर) बहन बचाओ ! मुझे कुछ नहीं सूझता ! (उद्विग्न हो कर सूर्य दवी की गोद म गिर पड़ती है)

सूर्य—अरी भावप्रवण बालिके (प्यार से) क्या करना होगा यह मैंने निश्चय कर लिया है ! (हस कर) अब तुम्ह खड्ग का अकशायिनी बनना होगा इस के लिये तैयार हा न ?

पर—हर तरह तैयार हूँ। हा मुझ निगोड़ी का वास्तविकता की गोदी से अनहोनी के अक म साना हागा इस का मुझ ज्ञान भी न था ! मैं अरब में जीवनयापन करन की अपेक्षा खड्ग की अकशायिनी हाने को सवथा प्रस्तुत हूँ बहन !

सूर्य—विकट परिस्थितिया भी ससार यात्रा का एक अग हैं ! धैर्य से देखो क्या होता है। अब हम लोग खलीफ़ा के पास ले जाई जा रही हैं। वहाँ क्या हागा यह भी देखना

होगा। जिस दिन विलास का पात्र बनन की घड़ी आवेगी उस दिन हम लोग स्वग म विहार करगी परमाल सिंह की दाढ़ा म सा जाना हागा। नहीं मेरे हृदय म प्रतिहिंसा की आग धधक रही है। मैं पिता का बदला लूँगी अपने देश का बदला लुगी ?

पर—(औत्सुक्य स) कैस लागी बहन हम अकेली अनाथ निरुपाय शत्रु से कैस बदला ल सकेंगी ? हा कपटी ज्ञानबुद्ध और नीच मोक्षवासव न समग्र दश शत्रु को हवाले कर दिया !

(लश्कर के मालिक का प्रवेश)

मालिक—(दोनों को देखकर) तुमका मालूम है तुम दोनों हमारे खलीफा साहब के पास जा रही हो ! (परमाल की तरफ़ देखकर) यह रोती क्यों है ?

सूर्य—तुझे हम से कुछ भी पूछन का अधिकार नहीं है जा अपना कामकर !

मालिक—(गुस्से से) इतनी हिम्मत मुझे कुछ भी पूछने का अधिकार नहीं है ! क्या कहू तुम लोग खास तौर से खलीफ़ा के पास जा रही हो नहीं तो अभी तुम दोनों का खातमा कर देता ! (उस ओर झपटता है।)

सूर्य—(उसी तरह झकष कर तलवार उठा लेती है ।) चुप मूर्ख

चल तो खलीफ़ा के पास तेरी बोटी बोटी उड़वा न दी तो बात क्या ?

मालिक—(खलीफा का खयाल आते ही घबराकर) न बहन भूल हुई माफ़ करो !

सूर्य—अच्छा तो मैं जो पूँछती हूं ठीक ठीक बता ? देवल के सूबेदार ज्ञानबुद्ध का क्या हुआ ? क्या उसे देवल का राजा बना दिया गया ?

मालिक—नहीं वह देवल के क़िले में बन्द है। हैजाज की आज्ञा के अनुसार ही उस के साथ सलूक किया जायगा। सूबेदार उस को देवल का सूबेदार तब तक नहीं बनाना चाहते जब तक वह इस्लाम स्वीकार नहीं कर लेता।

सूर्य—और मोक्षवासव का क्या हुआ ?

मालिक—उस का भी यही हाल है। आप को काइ तकलीफ़ तो नहीं है।

सूर्य—नहीं जाओ तुम अपना काम करो।

मालिक—बहुत अच्छा पर देखिये मेरी शिकायत खलीफ़ा से न कीजियेगा। (जाता है)

सूर्य—परमाल देखा उन दुष्ट नीच कृतघ्न देश द्रोहियों को कैसा दण्ड मिला ? हा कृतघ्न की कूट कालिमा में कृतज्ञता छिप गई ? अविश्वास के उग्र झंझावात में विश्वास

भास्कर क्षीण हो गया ? चारों तरफ विनाश है। पर मैं (यवनों की तरफ संकेत करके) कस कर बदला लूँगी। यह सूर्य तुम्हें विजय का पूर्ण आस्वादन कराकर चैन लेगी ? विश्वास घातियों के साथ विश्वासघात छल कपट से बदला लूँगी ! कासिम तू समझता है विजय तेरी हुई नहीं। विजय मेरी होगी। देख आर्यकन्यायें क्या करती हैं ? तू देख और संसार देखे। हे नीच तूने छल से प्रलोभन देकर बहका कर देश के दुष्टों के सहारे विजय प्राप्त किया। आज सूर्य उसी का बदला लेगी !

(सोचते हुए ध्यान मग्न हो जाती है)

पटपरिवर्तन

छठा दृश्य

देश बगदाद—(राजदरबार लगा है)

(खलीफा तख़्त पर बैठा है सब दरबारी अपने अपने स्थान पर बैठे हैं।)

खलीफ़ा—हैजाज़—व सब उपहार जो वीर कासिम ने भेजे हैं हमारे सामने लाये जाय।

हैजाज—जो आज्ञा। (सब सामान पेश करता है)

खलीफ़ा—यह क्या है?

हैजाज—हजूर यह शत्रु दाहर का सिर है।

खलीफा—ऐसा खोफनाक इतना बड़ा सिर? ठीक है। यही कारण है कि हम अब तक हारते रहे। वस्तुत यह बड़ा बहादुर है ओह यही तो हमारे सर्वनाश की जड़ था। इसे उठाकर गाड़ दो।

हैजाज—हजूर यह छतरी है जो उसके तख़्त पर लगी थी। और यह और सामान है जो उसी के सिर के साथ भेजा गया है। उसकी लड़कियाँ भी आई हैं।

खलीफ़ा—उन्हें हमारे हरम में भेजा जाय। हैजाज़ आज

मुझे चैन आया। ए खुदा तू सब से बड़ा है। आज खलीफ़ा का बदला चुकाया जा सका है। हाँ उन बागियों का क्या हुआ जिन्होंने हमें मदद दी थी?

हैजाज—हुजूर उन के लिये एक ही तरीक़ा है या तो वे मुसलमान हो जायँ या उन्हें मार डाला जाय। जिन लोगों ने अपने राजा के साथ द्रोह किया है वे कल को हमारे साथ भी द्रोह कर सकते हैं।

खलीफा—हाँ ठीक। उन लोगों के साथ कोई रियायत नहीं होनी चाहिये। ऐसे बागियों की सज़ा मौत है। पर हैजाज़ क्या सारा हिन्दुस्तान ऐसे ही बागियों से भरा है!

हैजाज—मालिक मुहम्मद बिन कासिम की चिट्ठियों से मालूम हुआ है कि ऐसे बागियों की हिन्दोस्तान में कमी नहीं है।

खलीफा—तब ऐसे ही बागियों के सहारे हम लोग हिन्दोस्तान को फ़तह करेंगे। जिस देश में बागी हैं वह देश कभी भी आजाद नहीं रह सकता। वह बड़ा ही अभागा देश है जहाँ ऐसे लोग पैदा होते हैं। अच्छा मुहम्मद बिन कासिम को आज्ञा दो कि वह सब जगह विश्वासपात्र सूबेदारों को नियुक्त करे। कोई भी ऐसा आदमी राजा या सूबेदार न बनाया जाय।

हैजाज़—जो आज्ञा लेकिन महाराज राजनीति की दृष्टि से

कुछ जगहें हिंदुओं का भी दना आवश्यक मालूम होता है ताकि उन का मन्द स उ हीं का बरबाद किया जा सके।

खलीफ़ा—यह भा ठाक है। पर इस समय ज़रा से प्रमाद स हि दास्तान हमारे काबू स बाहर हो सकता है। अगर कभी उन हिंदुओं का अपने देश का विचार आया ता याद रखो हमारा शासन फिर वहाँ नहीं रह सकता। जहा तक हो सीधे या उल्टे तौर पर उ हें मुसलमान हा बनाया जाय।

हैजाज—(बाहर की लड़कियां का ख़्याल आते ही) अच्छा अब दरबार बरख़ास्त होना चाहिये। मुझ बहुत जरूरी काम है।

(सभा विसर्जित होती है।

पटाक्षेप